महावीर री ओळखाण

•

डॉ० शान्ता भानावत

•

प्रकाशक :
मोहनलाल जैन
अनुपम प्रकाशन, चौड़ा रास्ता, जयपुर-३०२००३

•

मोल : पाँच रुपया, पुस्तकालय संस्करण सात रुपया
पैलो संस्करण : १९७५

•

मुद्रक : मातृभूमि प्रिंटिंग प्रेस, चौड़ा रास्ता, जयपुर

समर्पण

भगवान् महावीर

रै

धरम तीरथ रूप

चतुरविध

संघ

साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविका

नै

घणै आदर अर सरधाभाव

सूं

समर्पित

—शान्ता भानावत

आपणी ओर सूं

भगवान महावीर रै २५००वें परिनिर्वाण वरस रै सुभ अवसर पर उणां रै जीवन अर उपदेसां पर राजस्थानी भाषा में लिख्योड़ी आ पोथी पाठकां रै सामैं प्रस्तुत करतां म्हनै घणो हरख अर उमाव है। प्रभु महावीर लोक धरम रा नायक हा। वांरो धरम किणी जाति या वर्ग विशेष खातर नीं हो। वां सगळा लोगां नै आपणो जीवन नैतिक अर पवित्र बणावण खातर उण वगत री लोक भाषा अर्ध मागधी (प्राकृत) में आपणा उपदेस दिया।

हर मिनख आपणी बोली में कह्योड़ी बात बेगो समझ जावै। उणरो असर भी वीं पर घणो टिकाऊ हुवै। ओ इज कारण हो कै प्रभु महावीर रै सम्पर्क में जै भी आया वै उणां रै उपदेसां सूं आपणो जनम-मरण सुधारण खातर भोग मारग सूं त्याग मारग कांनी बढ्या।

राजस्थानी भाषा रै प्रति सरु सूं ई म्हारो लगाव रह्यो। म्हारै मन में विचार आयो कै जै प्रभु महावीर री जीवन-गाथा अर इमरत वाणी कदास राजस्थानी भाषा में प्रस्तुत की जावै तो अठारा लोगां पर उणरो गेहरो असर पड़ला। इणीज भावना सूं प्रेरित होय'र म्हैं आ पोथी लिखी।

इण पोथी में बारा अध्याय है। सरुआत रा तीन अध्याय काळचक्र, चवदह कुळकर अर महावीर सूं पैली हुयोड़ा तेवीस तीर्थंकरां सूं सम्बन्ध राखै। बाद रा छह अध्यायां मांय महावीर रै जनम काळ री स्थिति, उणारै जनम, टाबरपण, वैराग, साधक जीवन, केवळीचर्या अर परिनिर्वाण रो विवरण है। आखरी तीन अध्याय महावीर रै सिद्धान्त, महावीर री परम्परा अर महावीर-वाणी सूं सम्बन्धित है। महावीर-वाणी में भगवान् महावीर रा जीवनस्पर्शी उपदेस मूळ प्राकृत भाषा में राजस्थानी अनुवाद रै सागै संकलित किया गया है।

इण पोथी रै लिखण में म्हारा पति डा० नरेन्द्र भानावत सरु सूं ई म्हारो मार्गदर्शन करियो। आचार्य श्री हस्तीमलजी म० सा० द्वारा लिख्योड़ी 'जैन धर्म का मौलिक इतिहास' प्रथम भाग (तीर्थङ्कर खण्ड) अर श्री मधुकर मुनि, श्री रतन मुनि, श्री श्रीचन्द सुराना 'सरस' द्वारा लिख्योड़ी 'तीर्थङ्कर महावीर' पोथियां सूं म्हनै विशेष मदद मिली। इणांरै प्रति आभार प्रगट करणो म्हूं आपणो परम कर्तव्य मानूं।

अनुपम प्रकाशन रा संचाळक श्री मोहनलाल जैन इण पोथी रै छपावण रो जिम्मो ले'र जिण साहस रो परिचय दियो वो प्रशंसा जोग है। पोथी जलदी में त्यार करीजगी है। इण कारण जे कोई अशुद्धियां रैयगी है, उण खातर म्हूं पाठकां सूं माफी चाऊं।

म्हनै पूरो भरोसो है कै आ पोथी जन साधारण नै भगवान महावीर रै जीवन अर उपदेसां री ओळखाण करावण में सहायक हुसी। जै लोग इणनै पढ'र आपणो जीवन संयमित अर पवित्र बणावण री दिसा में थोड़ा भी आगे बढ्या तो म्हूं आपणो ओ प्रयास सार्थक समझूंली।

सी-२३५ ए, तिलकनगर
जयपुर-४.

—शान्ता भानावत

अनुक्रमणिका

१ | काल़ रो पहियो

जैन सास्त्रां रै माफिक काळ रो प्रवाह अनादि-अनन्त है। काळ री सबसूं छोटी अविभाज्य इकाई 'समय' अर सबसूं बड़ी 'कळपकाळ' कहीजै। एक कळपकाळ रो परिमाण वीस कोड़ाकोड़ि 'सागर' मानीजै जो मोटे तौर सूं संख्यातीत बरसां रो व्है। हरेक कळपकाळ रा दो विभाग व्है—एक 'अवसर्पिणीकाळ' अर दूजो उत्सर्पिणीकाळ। जिण भांत दिन पूरो हुयां पछै रात आवै अर रात पूरी हुयां पछै दिन आवै, उणीज भाँत अवसर्पिणीकाळ अर उत्सर्पिणीकाळ एक दूसरां रै लारै आवता रैवै। अवसर्पिणी लगोलग ह्रास अर अवनति रो काळ व्है अर उत्सर्पिणी उत्तरोत्तर विकास अर बढ़ोतरी रो काळ कहीजै। अवसर्पिणीकाळ नीचे लिख्योड़ा छह भागां मैं बांट्यो जा सकै—

1. सुखमासुखम
2. सुखम
3. सुखमादुखम
4. दुखमासुखम
5. दुखम
6. दुखमादुखम

पैलड़ै सुखमासुखम काळ में जीव नै किणी भांत री कोई तकलीफ नी व्है। इण काळ मैं मिनख री काया रो बळ, उमर, डीलडौल वत्तो व्है। मिनख नै गुजारा खातर सगळी चीजां विगर मैनत-मजूरी कर्यां कळपव्रक्षां सूं सहज रूप में मिल जावै। कुदरत रै चोखै, शांत वातावरण में मिनख रो मन हर वगत आनन्द सूं हिलोरां लेवतो रैवै। दूजै सुखम काळ में पैलड़ै काळ री सुख-सांति में थोड़ी कमी आवै अर तीजै सुखमादुखम काळ ताईं आवतां-आवतां मिनख नै सुख रै सागै दुखां रो अनुभव पण होवण लागै। अै तीन्यूं काळ सुख अर भोग प्रधान हुवै। मिनखां रो पूरो जीवण

कुदरत रै भरुसे रैवै । अै काळ भोगयुग या भोगभूमिकाळ रै नाम सूं जाणीजै ।

चौथै काळ दुखमासुखम में धरती रै रंग, रूप, रस, गंध स्पर्श अर उपजाऊपण में कमी होणी सरू व्है । खावण-पीवण री चीजां री कमी पड़ जावै । कळपव्रक्षां सूं सगळो काम नीं सरै । मिनखां रा डीलडौल, वळ, उमर सैं घट जावै अर जीवण में दुखां री प्रधानता रैवण लागै । पांचवै काळ दुखम ताईं आवतां-आवतां मिनखां रै जीवण में संघर्ष री ओरूं वढ़ोतरी व्है अर सुख नाम मातर रो रै जावै । छठै काळ दुखमादुखम में दुख आपणी सीमा लांघ जावै । सुख नाममातर ई नी रैवै । इण काळ में मिनख असान्ति री आग में वळवा लागै ।

पण आ स्थिति भी पळटो खावै । काळ रो पहियो घूमै । छठै दुखमादुखम काळ सूं सरू होय नै पांचवो (दुखम) चौथो. (दुखमा-सुखम) काळ आवै । ओ काळ उत्तरोत्तर विकास अर वढ़ोतरी रो हुवै । इणां रै सरुपोत रा तीन काळां में करमभूमि री अर लारला तीन काळां में भोगभूमि री व्यवस्था रैवै । अवार अवसर्पिणीकाळ रो पांचवो आरो दुखम चालै ।

२ | चवदह कुळकर

अवसर्पिणी काळ रै इण पहियै रै तीजै काळ सुखमादुखम रो जद आधै सूं वत्तो वगत बीतग्यो, तद मिनखां नै दुख रो अहसास हुयौ। कळपव्रक्षां सूं सै चीजां मिलणी बन्द होवा लागी। गुजारा खातर लोग आपस में लड़बा लाग्या। सैं मिनख ससंकित अर भयभीत हुया, वां में क्रोध, लोभ, छल, प्रपंच, घमंड, जिसी राक्षसी वृत्तियां पनपवा लागी, जिसूं मानव समाज असांति री आग में बलवा लागो। तद उणांरी संका मिटावण अर समस्यावां रो समाधान करण खातर एक नूंईं व्यवस्था रो जनम हुयो। आ नूंईं व्यवस्था कुळकर व्यवस्था कहीजै। सगळा मिनख मिल'र छोटा-छोटा कुळ बणाया अर प्रतिभावान चोखै मिनख नै आपणै कुळ रो नेता मजूर करियो। कुळ री व्यवस्था अर उणरो नेतृत्व करण खातर अै कुळनायक 'कुळकर' नाम सूं प्रसिद्ध हुया। मननसील हुवण रै कारण अै 'मनु' पण कहावा लाग्या। इणां री संतान मानव कहीजै।

कुळकरां री संख्या चौदह मानीजै। पैला कुळकर मनु या प्रतिश्रुत हा। अणां लोगां नै सूरज अर चांद रै उदय अर अस्त जिसी कुदरती घटनावां रो भेद बतायो। दूजा कुळकर सन्मति लोगां नै नखत अर तारा रो ज्ञान करायो। तीजा कुळकर क्षेमंकर लोगां नै जंगली जिनावरां सूं निरभै रैय उणांनै पाळतू बणावण री तरकीव बताई। चौथा कुळकर क्षेमधंर ना'र जिसा हिंसक जिनावरां सूं आपणी रक्षा खातर लकड़ी अर भाटा आदि नै काम में लेवण री कळा सिखाई। पाँचवां कुळकर सीमंकर लोगां में कळपव्रक्षां खातर हुवण आळा आपसी झगड़ा मेट'र हरेक कुळ रै अधिकार क्षैत्र री सीमा तै करी अर लोगां नै झगड़ा-फिसाद सूं बचाया। इण काळ

में अपराधी नै सजा देवरण खातर 'हाकार' दण्डनीति री व्यवस्था ही। जो आदमी मर्यादा नै उलांघतो उरणनै इतरो सो'क केवणो कै 'हा' थैं ओ कांई कर्‌यो, बड़ो जबरो डंड हो। एक दफा इतरो कड़ो डंड देरण रै बाद वो मिनख कदैइ दुबारा वा गलती नी करतो।

छठा कुळकर सीमंधर बचियोड़ा कळपव्रक्षां पर वैयक्तिक मालकियत अर सीमा तै करी। आ बात कहीजै कै जद सूं ही मिनखां में निजी सम्पत्ति री भावना पैदा हुई। सातमा कुळकर विमलवाहन हाथी अर पालतू जिनावरां नै बांध राखरण अर उरणारो सवारी आदि कामां में उपयोग करण री सीख दीवी। आठमा कुळकर चक्षुष्मान जुगळिया स्त्री, पुरुसां नै संतान रो सुख देखरणो बतायो। इरणांसूं पैंलां जुगळियां संतान नै जनम देयर खुद मर जावता। नवमा कुळकर यसस्वन लोगां नै संतान सूं नेह करणो अर उरणारो नामकरण करण री सीख दीवी। दसवें कुळकर अभिचन्द्र बाळक रै रोणै, चुप कराणै बुलवाणै अर लालरण-पाळरण करण री लोगां नै सीख दीवी। छठा सूं दसवां कुळकर ताईं दण्डनीति में 'हा' री जगां 'मा' (नीं, मती करो) सबद रो प्रयोग हुवरण लागो।

ग्यारवें कुळकर चन्द्राभ सरदी, गरमी अर वायरे रै प्रकोप सूं दुखी अर भयभीत हुयोड़ा लोगां नै बचावरण री तरकीब बताई अर बाळकां रै पाळरण पोसरण जैड़ी उपयोगी बातां सिखाई। बारहवां कुळकर मरुदेव लोगां नै नदी-नाळा पार करण अर पहाड़ां पर चढ़रण री कळा सिखाई। तेरहवें कुळकर प्रसेनजित बाळकां रै भली-भांत पाळरण-पोषरण री राय दीवी। चौदहवें कुळकर नाभिराय नवजात टाबर री नाभिनाळ काटरण री विधि बताई। इरण समय ताईं सगळा कळपव्रक्ष खतम हुयग्या हा। नाभिराय गुजारा खातर लोगां नै धरती पर उग्योड़ा जौ, सालि, तुवर, उड़द, तिल आदि चीजां खावरण रो तरीको बतायो। आखरी चार कुळकरां रै समै दण्डनीति

भोगभूमि अर कुळकर काळ रै सागै एक तरै सूं प्रागैतिहासिक जुग समाप्त हुवै। मिनख करम अर पुरुषार्थ रै जुग में प्रवेस कर'र नूंई सभ्यता अर संस्कृति रो इतिहास मांडणो सरु करै। इण नूंवै जुग रा प्रमुख धरम नेता चौवीस तीर्थंकर तथा बीजा उनतालीस[1] महापुरुष हुया। सैं मिला'र अै 'त्रिषष्ठिशलाका पुरुष' कहीजै।

---

१. क–बारा चक्रवर्ती— (१) भरत (२) सगर (३) मघवा (४) सनंत कुमार (५) शान्तिनाथ (६) कुन्थुनाथ (७) अरनाथ (८) सुभूम (९) पद्म (१०) हरिषेण (११) जयसेन (१२) ब्रह्मदत्त।

ख–नौ बळदेव— (१३) विजय (१४) अचल (१५) सुधर्म (१६) सुप्रभ (१७) सुदर्शन (१८) नन्दी (१९) नन्दि-मित्र (२०) राम (२१) पद्म (बळराम)।

ग–नौ वासुदेव— (२२) त्रिपृष्ठ (२३) द्विपृष्ठ (२४) स्वयम्भू (२५) पुरुषोत्तम (२६) पुरुषसिंह (२७) पुरुष-पुण्डरीक (२८) दत्त (२९) नारायण (लक्ष्मण) (३०) कृष्ण।

घ–नौ प्रतिवासुदेव— (३१) अश्वग्रीव (३२) तारक (३३) मेरक (३४) मधुकैटभ (३५) निशुम्भ (३६) बळि (३७) प्रहलाद (३८) रावण (३९) जरासंध।

---

३ | चौबीस तीर्थंकर

'तीर्थ' नाम धरमशासन रो है। जै महापुरुस जनम-मरण रूपी संसार समन्दर सूं पार करण खातर धरमतीरथ री थरपणा करै, वै 'तीर्थंकर' कहीजै। जैन परम्परा में तीर्थंकरां री संख्या चौवीस मानीजै। इणां तीर्थंकरां में पैला तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव अर आखरी तीर्थंकर भगवान महावीर हुया। चौवीस तीर्थङ्करां रा नाम अर ओळखाण इण भांत है—

१. ऋषभदेव :

आखरी कुळकर नाभिराय री पत्नी मरूदेवी री कूंख सूं पैला तीर्थंकर भगवान ऋषभ रो जनम चैत वद आठम (नवमी) रै दिन अयोध्या में हुयो। बाळक ऋषभ जद मां रै गरभ में हा तद मां सुपना में पैलाईं पैल वृषभ देख्यो हो अर बाळक रै छाती पै वृषभ रो लांछण पण हो, ईं कारण इणांरो नाम ऋषभदेव (वृषभदेव, वृषभनाथ) प्रसिद्ध हुयो। बाळक ऋषभ वड़ा हुयनै कुळ री व्यवस्था आपणै हाथ में लीवी। ईं खातर अै कुळकर अर मनु पण कही जै। मानव सभ्यता रै विकास रो श्रेय ऋषभ नैइज दियो जावै। ईं कारण अै आदिनाथ, आदिदेव, आदीश्वर, आदिब्रह्म पण कहीजै। इणां जै काम करिया विगर किणी री सीख सूं आपो आप मतैइ करिया, ईं खातर अै स्वयंभू पण कही जै।

जद ऋषभ वड़ा हुया तद आपरो व्याव सुनन्दा अर सुमंगळा सूं हुयो। आ मानी जै कै व्याव री रीत इणीज काळ सूं चाली। व्याव रै पछै ऋषभ रो राजतिळक हुयो। अै मानव सभ्यता रै विकास रा सूत्रधार हा। इणासूं पैलां सैं मिनखां रो गुजारो कळपवृक्षां

सूं चालतो हो । होळै-होळै मिनखां री बढ़ोतरी सूं कळपव्रक्ष कम पड़वा लागा तद गुजारा खातर मिनख आपस में लड़ता-झगड़ता। आ देख ऋषभ लोगां नै खेती करण, लिखण-पढण अर बीजा काम धन्धा री सीख दीवी । आ मानीजै कै ऋषभ पुरुषां नै बहत्तर अर लुगायां नै चौंसठ कळावां पण सिखाई ।

ऋषभ लुगायाँ री पढ़ाई-लिखाई रा हामी हा । आपणी बेटी सुन्दरी नै आप अंक ज्ञान अर ब्राह्मी नै लिपि ज्ञान सिखायो । आगे जा'र आ लिपि ब्राह्मी लिपि रै नाम सूं प्रसिद्ध हुई । इण भांत ऋषभ प्रजा रो पाळण-पोषण अर मार्गदर्शन घणा बरसां तांई करियो । ऋषभ आ मानता हा कै धरम रै मारग पर चाल्यां बिगर आत्मिक सान्ति कोनो मिलै । आ सोच वी आपणै बड़े पुत्र भरत नै राज रो भार सूंप'र खुद विरक्त हो'र आतम साधना रै मारग पर आगै बढ्या ।

ऋषभ चैत वद आठम रै दिन मुनि दीक्षा अंगीकार करी । दीक्षा धारण करबासूं पैली आप आपणी सम्पत्ति जरुरतमंद लोगां में वांटी अर आ बात समझाई कै सम्पत्ति री महत्ता भोग में नीं हो'र त्याग में है ।

मुनि बण'र ऋषभ घणी कठोर तपस्या करणी सरु करी । छह माह रो अनसन वरत धारण कर प्रभु ध्यान साधना में लीन व्हैग्या । छह माह बीतवा पर प्रभु भिक्षा खातर गांव-गांव विहार करता र्‌या । इण समै में वी मौन रैवता हा । ईं कारण लोग आ नी जाण सक्या कै प्रभु नै किण चीज री चावना है । मिनख इणांनै भेंट में कीमती गैणां=गाभा अर हाथी-घोड़ा देवता पण प्रभु बिगर कांई चीजवसत लियां, पाछा फिर जावता । यू करतां-करतां छह माह ओरुं बीतग्या ।

एकदा प्रभु विचरण करतां-करतां हस्तिनापुर पधारिया । अठारो राजा सोमयश हो । ईं रो छोटो भाई श्रेयांसकुमार धार्मिक

वृत्ति रो हो। पूरव जनम रा संस्कारां सूं प्रेरित होयर वीं प्रभु नैं ईख रै रस री भिक्षा दीवी। वो- वैसाख सुद तीज रो दिन हो। भगवान री लम्बी तपस्या रो पारणो ईं दिन हुयो। इण खातर ओ दिन आखातीज रै नाम सूं प्रसिद्ध हुयो। आज पण इण दिन वरसी तप रा पारणा हुवै।

तप अर साधना करतां-करतां पुरिमताळ नगर रैं वारै वड़ रै रूंख हेठै ध्यानमगन प्रभु नै केवळज्ञान हुयो। वे सर्वज्ञ, जिन, अर्हन्त, वणग्या। पछै लोककल्याण खातर उपदेस देवता थका कैळास परवत पर आप निर्वाण प्राप्त करियो। भगवान ऋषभदेव जैन धर्म रा प्रवर्तक अर जैन परम्परा रा पैला तीर्थंकर हा।

२. अजितनाथ :

भगवान ऋषभ रैं निर्वाण रै घणां वरसां पाछै विनीता नगरी रै महाराजा जितसत्रु री राणी विजयादेवी री कूख सूं दूजा तीर्थंकर श्री अजितनाथ रो जनम हुयो। इणांरो लांछण हाथी है। घणा वरसां ताईं आप राज्य अर गिरस्थ जीवन रो उपभोग करियो। पछै आप दीक्षा लीवी अर कठोर तपस्या कर'र केवळज्ञानी वण'र आप लोगां नै धरमदेसना दीवी अर सम्मेदसिखर पर निर्वाण प्राप्त करियो।

३. संभवनाथ :

तीजा तीर्थंकर श्री संभवनाथ हुया। इणांरो जनम स्रावस्ती नगरी में इक्ष्वाकु वंस में हुयो। इणांरै पिता रो नाम जितारी अर माता रो सोना देवी हो। आपरो लांछण घोड़ो है। लम्बा समय ताईं गिरस्त जीवन में रैय'र आप दीक्षा लीवी अर तपस्या कर'र केवळज्ञान प्राप्त करियो। आपरो निर्वाण सम्मेदसिखर पर हुयो।

४. अभिनन्दन :

चौथा तीर्थंकर श्री अभिनन्दन हुया। इणां रो जनम अयोध्या नगरी में हुयो। आपरै पिता रो नाम महाराजा संवर अर मातारो महाराणी सिद्धार्था हो। इणांरो लांछण वानर है। मुनि धरम अंगीकार कर आप कठोर तपस्या करी अर सम्मेदसिखर पर निर्वाण प्राप्त करियो।

५. सुमतिनाथ :

पांचवा तीर्थंकर श्री सुमतिनाथ हुया। आपरो जनम अयोध्या में हुयो। आपरो लाँछण क्रौंच है। आपरै पिता रो नाम महाराज मेघ अर माता रो राणी मंगळावती हो। आप कठोर तपस्या कर'र केवळज्ञानी बण्या अर सम्मेदसिखर सूं मुगति प्राप्त करी।

६. पदमप्रभु :

छट्ठा श्री पदमप्रभु रो जनम कौसाम्वी नगरी में हुयो। इणांरै पिता रो नाम महाराजा धर अर माता रो सुसीमा हो। आपरो लांछण कमळ है। आप दीक्षा लै'य नै कठोर तप करियो अर केवळज्ञान प्राप्त कर संसारी प्राणियां नै धरम रो उपदेस दियो। सम्मेदसिखर सूं आप निर्वाण प्राप्त करियो।

७. सुपार्श्वनाथ

सातवां तीर्थंकर श्री सुपार्श्वनाथ रो लांछण स्वस्तिक है। आपरो जनम वाराणसी में हुयो। आपरै पिता रो नाम महाराज प्रतिष्ठसेन अर माता रो राणी पृथ्वी हो। आप घोर तपस्या कर'र सम्मेदसिखर सूं निर्वाण प्राप्त करियो।

८. चन्द्रप्रभ :

आठवां तीर्थङ्कर श्री चन्द्रप्रभ रो लांछरण चन्द्रमा है। आपरो जनम चन्द्रपुरी में हुयो। आपरै पिता रो नाम राजा महासेन अर माता रो राणी सुलक्षणा हो। आप घोर तपस्या कर'र सम्मेद-सिखर सूं निर्वाण प्राप्त करियो।

९. सुविधिनाथ :

नौवां तीर्थङ्कर श्री सुविधानाथ हुया। आपरो बीजो नाम पुष्पदंत पण हो। आपरो लांछण मगर है। आपरै पितारो नाम राजा सुग्रीव अर माता रो नाम वामादेवी हो। आपरो जनम काकंदी नगरी में हुयो अर निर्वाण सम्मेदसिखर पर। सिन्धुघाटी सभ्यता रो ओ उत्कर्ष काळ हो। उण काळ में मगर प्रतीक री घणी मानता ही। इणीज कारण उण देस रो नाम मकरदेस प्रसिद्ध हुयो। इण सूं ठा पड़ै कै तीर्थङ्कर पुष्पदंत री अठै घणी मानता अर प्रसिद्धि ही।

१०. सीतलनाथ :

दसमा तीर्थङ्कर श्री सीतलनाथ हुया। इणांरो लांछण श्रीवत्स है। आपरै पिता रो नाम महाराज दृढरथ अर माता रो नन्दादेवी हो। आपरो जनम भद्दिलपुर में हुयो अर निर्वाण सम्मेद-सिखर पर।

११. श्रेयांसनाथ :

ग्यारमा तीर्थंकर श्री श्रेयांसनाथ हुया। इणांरो लांछण गैंडो अर वंस इक्ष्वाकु हो। इणांरो जनम सिंहपुरी नगरी में हुयो। आपरै पिता रो नाम महाराज विष्णु अर माता रो महाराणी विष्णुदेवी हो। आपरै समै में पैदनपुर में राजा त्रिपृष्ठ हुयो जो नौ वासुदेवां में

पैलो हो। त्रिपृष्ठ रो भाई विजय नौ बळदेवां में पैलो गिण्यो जावै। अै दोन्यूं भाई घणा प्रतापी अर तीर्थङ्कर श्रेयांसनाथ रा खास भगत हा। श्री श्रेयांसनाथ धरम री टूटी परम्परा नै फेरूं जोड़ी अर तीर्थङ्कर धरम री लोक में पुखती थरपणा करी। आपरो निर्वाण सम्मेदसिखर पर हुयो।

१२. वासुपूज्य :

बारमा तीर्थङ्कर श्री वासुपूज्य हुया। इणांरो लांछण भैंसो है। आपरो जनम चम्पानगरी में हुयो। आपरै पिता रो नाम वसुपूज्य अर माता रो जयादेवी हो। आपरै समै में दूजो बळदेव अचळ, दूजौ वासुदेव द्विपृष्ठ अर दूजो प्रतिवासुदेव तारक हुयो। आपरो निर्वाण स्थळ चम्पा मानीजै।

१३, विमलनाथ :

तेरहवां तीर्थङ्कर श्री विमळनाथ हुया। इणांरो जनम स्थान कम्पिळपुर हो। आपरै पिता रो नाम कृतवर्मा अर माता रो स्यामा हो। आपरो लांछण सुअर अर निर्वाण स्थळ सम्मेदसिखर है। आपरै समै में सुधर्म नाम रो बळदेव, स्वयंभू नाम रो वासुदेव अर मेरक नाम रो प्रतिवासुदेव हुयो।

१४. अनन्तनाथ :

चवदवां तीर्थंकर श्री अनन्तनाथ हुया। इणां रो जनमस्थान अयोध्या, वंस इक्ष्वाकु, पिता रो नाम सिंहसेन अर माता रो सुयसा हो। आपरो लांछण बाज अर निर्वाणस्थळ सम्मेदसिखर हो। इणीज काळ में सुप्रभ बळदेव, पुरुसोत्तम वासुदेव अर मधुकैटभ प्रतिवासुदेव हुया।

१५. धरमनाथ :

पन्द्रहवां तीर्थंकर धरमनाथ हुया। इणांरो जनमस्थान रतनपुर हो। कुरुवंसी राजा भानु आपरा पिता अर माता सुव्रता ही। आपरो लांछण वज्रदंड अर निर्वाणस्थळ सम्मेदसिखर हो। आपरै समै में सुदरसन बळदेव, पुरुषसिंह वासुदेव अर निसुम्भ प्रति वासुदेव हुया। आपरै निर्वाण पछै आपरै तीरथ में मघवा अर सनत-कुमार नाम रा दो चक्रवर्ती सम्राट हुया।

१६. शांतिनाथ :

सोलवां तीर्थंकर श्री शांतिनाथ हुया। इणां रो जीवन प्रभावशाली अर लोकोपकारी हो। आपरो लांछण, हरिण, जनम-स्थान हस्तिनापुर, पितारो नाम महाराज विश्वसेन अर माता रो महाराणी अचिरा हो। शांतिनाथ चक्रवर्ती सम्राट हा। घणा वरसां ताईं ईं धरती पर आप राज करियो। पछै दीक्षा लै'र कठोर तप कर'र केवळज्ञान री प्राप्ति करी। आप सम्मेदसिखर सूं निर्वाण प्राप्त करियो। शांतिनाथ भगवान घणा लोकप्रिय तीर्थंकर हुया। आपरी उपासना रो आज भी घणो महत्त्व है।

१७. कुंथुनाथ :

सतरहवां तीर्थंकर श्री कुंथुनाथ हुया। इणांरो जनम हस्तिनापुर में हुयो। आपरै पिता रो नाम महाराज वसु अर माता रो श्री देवी हो। आप भी आपणै समै रा चक्रवर्ती सम्राट हा। आपरो लांछण बकरो अर निर्वाण स्थळ सम्मेदशिखर हो।

१८. अरनाथ :

अठारमां तीर्थंकर भगवान अरनाथ हुया। आपरो जनम-स्थान हस्तिनापुर, लांछण नन्दावर्त, पिता रो नाम महाराज

सुदर्शन, माता रो राणी महादेवी अर निर्वाण स्थळ सम्मेदसिखर हो। आप पण आपणै समै रा चक्रवर्ती सम्राट हा। इणीज काळ में नंदिषेण बळदेव, पुण्डरीक वासुदेव अर बळि प्रतिवासुदेव हुया। आपरै निर्वाण पछै आपरै घरमतीरथ में सुभूम नाम रा चक्रवर्ती हुया। परसुराम अर सहस्रवाहु रै संघर्ष रो ओइज काळ है।

१९. मल्लिनाथ :

उन्नीसमा तीर्थंकर श्री मल्लिनाथ हुया। इणांरो जनम मिथिला नगरी मैं हुयो। आपरै पिता रो नाम महाराज कुंभ अर माता रो प्रभावती हो। आपरो लांछण कळस अर निर्वाण स्थळ सम्मेदसिखर है। आपरै तीरथ काळ में पदम नाम रा चक्रवर्ती सम्राट, नन्दिमित्र बळदेव, दत्त वासुदेव अर प्रहलाद प्रतिवासुदेव हुया।

श्वेताम्बर परम्परा मानै है कै तीर्थंकर मल्लिनाथ स्त्री रूप में जनमिया हा। बाळका मल्ली घणी रूपाळी अर गुणवती ही। आपरै रूप अर गुण री चरचा चारूंकानी फैल्योड़ी ही। जद मल्ली कुंवरी बड़ी हुई तो वांरै रूप अर गुणां सूं मोहित हो'र छै देसां रा राजावां मल्ली कुंवरी रे पिता रै कनै दूतां लारै संदेसो मोकल्यो कै म्हां मल्ली रै सागै ब्याव करणो चावां।

मल्ली रा पिता कुंभ लाचार हा। छै राजा रै सागै एक राजकंवरी रो ब्याव कोंकर हो सकै, आ सोच राजा कुंभ सगळा राजावां रा दूतां नै नां दे दीवी। नां रा समीचार सुण छऊं राजा वेराजी हुयग्या। वां राजा कुंभ री नगरी मिथिला पर धावो बोल दियो। कुंभ छऊं राजावां सूं मुकाबलो करण में समरथ नीं हा। ईं कारण वी दुगध्या में पड़ग्या अर उदास रैवा लाग्या। पिता नै उदास देख राजकंवरी बोली—आप किणी भांत री चिन्ता

मती करो। छऊं राजावां नै दूतां सागै संदेसो दिरा देवौ कै कुंवरी मल्ली थां सूं व्याव करण नै तैयार है।

बेटी मल्ली री लायकी अर बुद्धिबळ सूं राजा कुम्भ वाकब हा। वां सोच्यो—राजकुंवरी मतैइ समस्या रो समाधान करलैला। आ सोच वां छऊं राजावां नै जुदो-जुदो संदेसो भिजवा दियो।

व्याव री रजामंदी रा समीचार सुण'र साकेतपुरी रा राजा प्रतिबुद्ध, चम्पा रा चन्द्रछाग, कुणाळा रा रूक्मी, वाराणसी रा संख, हस्तिनापुर रा अदीनसत्रु अर कम्पिळपुर रा जितसत्रु मिथिला नगरी पोंचिया।

मल्लीकुंवरी रै रूप पर मोहित हुयोड़ा राजावां नै प्रतिबोध देण खातर मल्ली एक मोहनघर बणवायो हो। वीं घर रै बीचोबीच कुंवरी आपरै सरीर जिसी रूपाळी सोने री एक पोली मूरत बणवाई। वीं मूरत में रोजाना खाणो खावण सूं पैलां वा एक:एक कवौ नाखती ही।

मल्लीकुमारी व्याव खातर आयोड़ा राजावां नै अशोकवाड़ी में बण्योड़ै मोहनघर में रुकाया। वीं घर में मूरत कनै जावा रा जुदा-जुदा दरवाजा हा। मांयनै बड़ियां पछै कोई एक दूजां नै कोनी देख सकता हा। जुदी-जुदी जगां में बैठ्योड़ा राजा मल्ली कुंवरी री बणी रूपाळी मूरत नै देखबा लाग्या। मनहरणआळी सुन्दर मूरत नै देख सैं राजा दंग रैग्या। वांकै मन में रैय रैय नै रूपवती कुंवरी मल्ली नै पटराणी बणावण री भावना उठ री ही।

राजावां नै मूरत पै रीझ्योड़ा देख मल्ली कुंवरी मूरत पर सूं ऊपरलो ढांकणो हटा दियो। ढांकणो हटतांई मूरत में जम्योड़

सड़ियोड़ै भोजन री दुर्गन्ध सूं राजावां रो माथो फाटवा लाग्यो, जीव मिचलावा लाग्यो। नाक आड़ो दस्तीरूमाल लगार वी बारै भागवा री कोसिस करवा लाग्या। अबै मूरत पर सूं वांको ध्यान हटग्यो। वीं समै मल्ली कुंवरी राजावां नै प्रतिबोध दैवता कैवण लागी—ईं मूरत में पड़ियै सड़्योड़े अन्न री दाईं ओ सरीर पण सूगळो अर निस्सार है। ज्ञानी पुरुस बाह्य सरीर रै रूप-रंग सूं प्रीत कोनी करै। आप लोग म्हारै ईं नश्वर सरीर खातर पिताजी पर हमलो करण नै तैयार हो। जरा सोचो! ईं जुद्ध में कितरा निरपराध प्राणियां री हिंसा हुवैली।

मल्ली कुमारी रो प्रतिबोध सुण छऊं राजा आपणी गलती पर पछतावो करियो। वी विनय भाव सूं बोलिया— भगवती! थां म्हानै अंधारां सूं उजाळा में लै आया हो। अबै म्हां संजम रै मारग पर चालर आपणां करम काटालां।

छऊं राजावां नै प्रतिबोध देय'र मल्लिकुमारी दीक्षा अंगीकार करी। पछै कठोर तपस्या करनै निर्वाण प्राप्त करियौ।

२०. मुनिसुव्रत :

वीसवां तीर्थङ्कर थी मुनिसुव्रत हुया। इणांरो जनम राजगृही में हुयो। आपरै पिता रो नाम महाराज सुमित्र अर माता रो महाराणी पद्मावती हो। आपरो लांछण काछबो अर निर्वाणस्थळ सम्मेदसिखर हो। आपरै समै मैं इज राम-रावण रो संघर्ष हुयो। जैन मतानुसार इणीज काळ में राम बळदेव, लक्षमण वासुदेव अर रावण प्रतिवासुदेव हुया। महाराणी सीता री गणना जैन परम्परा माफिक सौळे सतियां में हुवै। मुनि सुव्रत रै तीरथकाळ में हरिषेण नाम रा चक्रवर्ती सम्राट हुया।

२१. नेमिनाथ :

इक्कीसमां तीर्थंकर श्री नमिनाथ हुया। आपरो लांछण नीलकमळ, जनम स्थान मिथिला, पिता रो नाम महाराज विजय अर माता रो नाम महाराणी वप्रा हो। आपरो निर्वाण स्थळ सम्मेदसिखर मानीजै। आपरै तीरथकाळ में इज कौसाम्बी नगरी में जयसेन नाम रा चक्रवर्ती सम्राट हुया।

२२. अरिष्टनेमि :

बाइसमा तीर्थंकर श्री अरिष्टनेमि हुया। अै नेमिनाथ पण कहीजै। आपरो जनम सौरीपुर में हुयो। आपरै पिता रो नाम समुद्रविजय अर माता रो शिवादेवी हो। नेमिनाथ यदुवंसी हा। श्रीकृष्ण समुद्रविजय रै छोटा भाई वासुदेव रा पुत्र हा। नेमिनाथ रो लांछण शङ्ख है। नेमिनाथ ब्याव नीं करणो चावता पण श्रीकृष्ण अर आपणी भाभी सत्यभामा व रूक्मणी रै घणैं आग्रह करण सूं आप ब्याव करणा नै राजी हुया। श्रीकृष्ण जूनागढ़ रै राजा उग्रसेन री रूपाळी कन्या राजुळ सूं आपरी सगाई पक्की करी। सावण सुद छठ रै दिन विवाह रो मोरत आयो। बरात चढ़ी। बींद वेस में राजकुंवर नेमि खूब सजायाग्या। बारात रवाना व्हैय नै उग्रसेन रै महलां कनै पहुँची कै एकाएक नेमिकुंवर पसुवां रो हाको सुणियो। वां सारथि नै पूछियो—ओ पसुवां रो करुण क्रन्दन कठा सूं आवै? सारथि कयो—राजकुंवर आपरै ब्याव री खुसी में बहोत वड़ी जीमणवार हुवैली, वीं में इण पसुवां री बळि दी जावैली।

पसुवां री बळि देवण री बात सुण'र नेमिकुमार रो कोमळ काळजो पसीजग्यो। वणा सारथि नै आज्ञा दीवी कै—जा'र सैं पसु-पक्षियां नै वाड़ सूं बारै काढ़ दो। मिनख नै जियां आपणो जीव वाल्हो लागै उणीज भांत जिनावरां नै पण आपाणो जीव वाल्हो है। म्हारै ब्याव रै मौकै हजारां-लाखां निरपराध भोला

जिनावरां री हत्या हुवै, एड़ौ ब्याव म्हूं नी करूंला। यूं कैयर नेमिकुमार आपरो रथ तोरण सूं पाछो मुड़वा लियो।

अबै तो नेमिकुंवर मुनि धरम अंगीकर करण रो निश्चय कर लियो। आपणां कीमती गैणा–गाभा उतार सारथि नै दे दिया अर खुद संयम मारग पर चालबा खातर पग बढ़ा दिया। सब जणां वांसूं ब्याव करण खातर घणी विनती करी, पण धरमवीर नेमिनाथ किणीरी बात कोनी सुणी। दीक्षा अंगीकार कर प्रभु गिरनार परवत री ऊंची चोटी पर जाय कठोर तपस्या करी।

महाराज उग्रसेन री पुत्री राजुळ नै जद आ मालूम पड़ी कै जिनावरां रो करुण क्रन्दन सुण अहिंसा रा पुजारी प्रभु नेमिनाथ तोरण पर आया थका पाछा मुड़ग्या, तो वा मन में संकल्प कर्‌यो कै म्हूं अबै किणी दूजा पुरुष रै सागै ब्याव नी करूंला। राजकुंवर नेमि इज म्हारा पति है। वी राजसी सुखां नै छोड़ मुनि धरम अंगीकार कर‌र्‌या है तो म्हूं भी वणांरै मारग रो इज अनुसरण करूंला। पछै राजुळ पण दीक्षा लेय नै गिरनार परवत पर घोर तपस्या करी।

केवळज्ञान पाम्या पछै प्रभु जगां-जगां विचरण कर अहिंसा धरम रो उपदेस दियो अर गिरनार परवत सूं निर्वाण पायो।

यादवकुमार अरिष्टनेमि विशिष्ट व्यक्तित्व रा धणी हा। महाभारत, स्कन्दपुराण, श्रीमद्‌भागवत जिसा पुराणा ग्रंथा में इणांरो उल्लेख मिलै। महाभारत रै 'शान्तिपर्व' में प्रभु रा दियोड़ा उपदेसां रो वर्णन आवै। अरिष्टनेमि प्रभु राजा सगर नै उपदेश देतां कयो कै संसार में मुगति रो सुख इज सांचो सुख है। जो मिनख धन दौलत अर विषय सुखां में रम्यो रैवै वो अज्ञानी है, जो मिनख आसक्ति सूं अळगो है वोइज इण संसार में सुखी है। हरेक

प्राणी अकेलो जनम लेवै, बड़ो हुवै अर संसार में सुख-दुख भोग'र मौत री सरण लेवै। सांसारिक सुख-दुख पूरव जनम में कर्योड़ा करमा रा फ़ळ है।

तीर्थंकर नेमिनाथ रो जनम हुयो जद याज्ञिक अर वैदिक संस्कृति रो प्रभाव वत्तो हो। वींके सामै श्रमण संस्कृति फीकी पड़गी ही। चारुंकानी हिंसा रो बोलबालो हो। वी समै लोगां नै अहिंसा धर्म रो उपदेश देय नै प्रभु श्रमण संस्कृति रो पाछो उत्थान करियो।

कह्यो जावै कै छप्पन दिनां री कठोर तपस्या रै उपरांत गिरनार पर्वत पर आसोज वदी एकम रै दिन प्रभु नै केवल ज्ञान हुयो। जैनागमां रै मुताबिक तीर्थंकर अरिष्टनेमि श्रीकृष्ण रा आध्यात्मिक गुरु हा। 'ज्ञाता धर्म कथा' में भगवान अरिष्टनेमि अर श्रीकृष्ण री आपसी चर्चा रा घणाई वर्णन मिलै। श्रीकृष्ण अरिष्ट-नेमि सूं घणाई प्रश्न पूछ्या अर वां सवां रो आछो समाधान पायो। कह्यो जावै है कै कृष्णजीरी आठूं राणियां पुत्र अर परिवार रा घणाई लोग भगवान अरिष्टनेमि सूं दीक्षा अंगीकार करी ही। 'यजुर्वेद' में स्पष्ट रूप सूं अरिष्टनेमि रो वर्णन मिलै। सौराष्ट्र अर गुजरात में नेमिनाथ री शिक्षावां रो घणो प्रचार र्यो। आज पण गिरनार, सत्रुंजय अर पालीताणा जैनियां रा सिद्ध क्षेत्र मानिया जावै।

२३. पार्श्वनाथ :

तेईसवां तीर्थंकर पार्श्वनाथ भगवान हुया। आपरो जनम वाराणसी में हुयो। आपरै पिता रो नाम राजा अश्वसेन अर माता रो वामादेवी हो आपरो गोत्र कश्यप हो अर लांछण सरप है। इतिहासकारां रै अनुसार भगवान पार्श्व ऐतिहासिक महापुरुष है। इणां रो जनम पोष वद दसम रै दिन ईसा पूर्व ८७७ में हुयो। कठोर तपस्या कर'र अै सम्मेदशिखर सूं निर्वाण प्राप्त करियो।

भगवान पार्श्व रो व्यक्तित्व घणो अनोखो हो। आप टावर-पणां सूं ई दृढ़ प्रतिज्ञ, स्वाभिमानी, शांत, दयालु, चिन्तनशील अर मेघावी हा। एकदा पंचाग्नि तप करता हुया कमठ नामरै बड़े तपस्वी रै चारूंकानी वळती घूणीरी लाकड़ियां सूं आप नाग-नागणी री रक्षा करी। इण घटना सूं आपरै दिल में संसार सूं विरक्ति हुयगी अर आप आतमकल्याण खातर संन्यास ले लियो।

धर्म साधना करवा में भगवान पार्श्व चारित्रिक नैतिकता पर घणो बळ दियो। आप पंचाग्नि जिसा तपां में हुवण आळी जीव हत्या कांनी लोगां रो ध्यान खिंच्यो अर कयौ कै धर्म रो मूळ दया है। आग जलाणैसूं तो सैं भांत रा जीवां रो नास हुवै। जिण तप में जीवां रो नास हुवै वीं में धर्म कोनी। बिना पाणी री नदी री भांत दया शून्य धरम भी वेकार है। जिण भांत तीर्थंकर नेमिनाथ पशु-हत्या रो बहिष्कार करियो उणीज भांत भगवान पार्श्व धर्म रै नाम पर हुवण आळी जीव हिंसा रै विरुद्ध आवाज उठाई।

प्रभु पार्श्व आपणै युग में फैल्योड़ी कुरीतियां नै देख अहिंसा, सत्य, अस्तेय अर अपरिग्रह यां चार व्रतां रो उपदेश दियो, जो चातुर्याम धर्म रै नाम सूं प्रसिद्ध है। प्रभु रै आध्यात्मिक अर नैतिक विचारां सूं प्रभावित होयर वैदिक परम्परा रो एक प्रभावशाली दळ याज्ञिक हिंसा रो विरोधी वणग्यो हो। इण भांत दो विरोधी विचारधारा रो संगम इण काळ में हुयो। आचार अर विचार में जितरा वत्ता परिवर्तन इण काळ में हुया, उतरा किणीं युग में नीं हुया। इणीज कारण जैन तीर्थंकरां में पार्श्वनाथ सबसूं घणा लोकप्रिय है। भारतवर्ष रै जुदा-जुदा भागां में जितरा, मिंदर, मूर्तियां, तीर्थस्थान इणां रै नाम रा मिळै उतरा दूजा तीर्थंकरां रा नीं मिलै। गजपुर रै नरेश स्वयंभू, कुशस्थपुर रै राजा रविकीर्ति, तेरापुर रै स्वामी करकंडु जिसा केई बड़ा-बड़ा राजा अणांरा

परम भगत अर अनुयायी हा। उत्तरप्रदेश, बिहार, बंगाल, उड़ीसा, आंध्रप्रदेश ताईं पार्श्वनाथ रो घणो प्रभाव हो।

पार्श्वनाथ अर महावीर रै समै में लगभग ढाई सौ बरसां रो आंतरो है। इण बीच पार्श्व रा उपदेश अर बांकी श्रमण परम्परा अविच्छिन्न रूप सूं चालती रैयी। महावीर रो मातृकुल अर पितृकुल पार्श्व परम्परा रोइज अनुयायी हो। केवळज्ञान प्राप्त करिया पाछै महावीर जद उपदेश देवण लाग्या, तद पार्श्वनाथ परम्परा रा मुनि केशि श्रमण मौजूद हा।

२४. महावीर :

चौवीसवां तीर्थंकर भगवान महावीर हुया। इणां रो लांछण सिंह है। महावीर तीर्थंकर परम्परा रा आखरी तीर्थंकर है। वीर, अतिवीर सन्मति, वर्धमान आदि अनेक नामां सूं आप याद करिया जावै। भगवान महावीर रो जनम आज सूं २५७३ वरसां पैली इणीज भारत भूमि पै हुयो। आगै रा अध्यायां में महावीर रै जीवण अर शिक्षवां री ओळिखाण है।

४ | महावीर रै जनमकाल री स्थिति

जिण समै भगवान महावीर रो जनम हुयो उण समै देस अर समाज री हाळत घणी खराब ही। धरम रै नाम पर चारुंकांनी ढोंग अर पाखड रो बोलवालो हो। यज्ञ में घी, सैंत जिसी चीजां नै छोड'र जीवता मिनख अर जिनावरां री बळि दी जावती। श्रमण संस्कृति नै मानबा आळा लोग जीव हिंसा रो विरोध करता तो लोग कैवता कै भगवान जिनावरां नै यज्ञ में बळि देवण खातर इज बणाया है, यज्ञ में जिनावरां री बळि देवण सूं पाप कोनी लागै, आ हिंसा कोनी।

उण समै मंत्र-तंत्रा में लोगां रो घणो विसवास हो। वी आतमशुद्धि में धरम नीं मान'र सिनान आदि बाहरी सरीर री सफाई नै इज घणो महत्त्व देता अर कैवता कै सरीर नै कष्ट देणै सूं इज मुगति मिलै। कैई तपस्वी पंचाग्नि तप करता हा। वी आपणै आसण रै चारूंकानी आग जळा'र ऊपरसूं सूरज री तेज गरमी सहण करता। घणखरा तपस्वी नुकीली सुइयां पर सूवता अर वींसूं होण आळी शारीरिक पीड़ा नै मुगति रो साधन मानता।

चारुंकानी ब्राह्मण लोगां रो वर्चस्व हो। लोग वांनै भगवान दाईं उत्तम समझता हा, भलैइ वे कित्ताइ दुराचार अर पाप करता। भगवान पार्श्वनाथ तप, संयम अर अहिंसा री जा पवित्र धारा वहाई वा २५० वरसां पछै सूखण लागी। भगवान महावीर जद साधना रै क्षेत्र में पधारिया तद समाज में एक नीं अनेक विषमतावां फैल्योड़ी ही।

समाज में धरम सूं वत्तो धन रो महत्त्व हो। धनवान गरीबां नै जिनावरां जियां खरीद'र उणांनै आपणा दास बणाय लैवता।

मालिकां नै दास वणायोड़ा लोगां नै कड़ी सजा देवण रो पूरो अधिकार हो। अमीर लोग खुद नै वड़ा ऊंचा आदमी समझ'र गरीब मिनखां पर घणा अत्याचार करता हा। जात पांत री भावना रो बोलवालो हो। मिनख री पूजा गुणां सूं नी हो'र जाति, धन, अर दण्डशक्ति सूं हुवती।

सेवा करणिया सूद्र लोगां रै प्रति ऊंचा तबका रै लोगां रो रवैयो घणो खराब हो। वां नै पढ़ण-लिखण रो अधिकार नीं हो अर नी धरम रा बोल सुणवा रो। सूद्र लोग जद कदैइ धरम (वेद) रा बोल सुण लैवता तो वणां रै कानां में ऊनो-ऊनो सीसो भरबा रो रिवाज हो अर जद कोई धरम रा बोल बोल लैवता तो वांरी जवान काट ली जावती। ऊंचा तबका रा लोग नीचा लोगां नै कैवता कै थां खोटा करम करनै आया हो जि खातर थां नै ओ फळ भुगतणो पड़र्यो है। बिचारा सूद्र लोग विवस भाव सूं सैं तकलीफां सहन करता।

स्त्री जाति री वीं वगत घणी बुरी हालत ही। वां नै धार्मिक पोथियां पढवा रो अधिकार नी हो। नारी सब भांत उपेक्षित अर अधिकारहीन ही। वीं रो मोल गाजर मूळी सूं वत्तो नी हो। गायां भैंसा दांईं लुगायां चौराया पर ऊभी कर'र वेची जांवती। नारी घर री लिछमी नीं होय'र एक मात्र दासी ही।

उण वगत री राजनीतिक हालत पण घणी वोदी ही। सबळ राजा कमजोर राजा सूं जुद्ध करता अर उणांरी सुन्दर स्त्रियां नै गुलाम वणा'र उणारो उपभोग अर शोषण करता। कासी, कौसल, वैसाली, कपिलवस्तु आदि राज्यां में गणतन्त्र शासन व्यवस्था ही पण वा राज-काज रै काम ताईं सीमित ही। साधारण जनता नै कोई लोकतन्त्रीय अधिकार नी मिल्योड़ा हा। अंग, मगध, सिन्धु-सौवीर, अवंती आदि देसां में राजतन्त्र शासन पद्धति ही। अठा रा

लोग धार्मिक रूढ़ियां अर सामाजिक गुलामी री भावना सूं दुखी हा। छोटी-छोटी बातां नै लै'र गणराज्यां में आपसरी लड़ाइयां हुवती। राजा-महाराजा री दाईं सेठसाहूकार लोग पण दास-दासियां रो लम्बो-चौड़ो परिवार राखता हा।

ऊपर लिख्योड़ी धार्मिक रूढ़ियां, अन्धविश्वास अर सामाजिक विसमता सूं मिनख घणा ऊबग्या हा। इण विषम परिस्थितियां में जनमलै'र भगवान महावीर भूल्या-भटक्या दुखी मिनखां नै सही रास्तो दिखायो।

---

५ | जनम अर टाबरपण

भगवान महावीर रो जनम वैसाली गणतंत्र रै क्षत्रिय कुण्ड-गांव में हुयो। आपरै पितारो नाम राजा सिद्धार्थ अर माता रो नाम महाराणी त्रिसलादेवी हो। आप इक्ष्वाकुवंसीय काश्यप गोत्रीय क्षत्रिय हा। आपरा माइत अर मामा (चेटक) भगवान पार्श्वनाथ रै धरमसासन री परम्परा नै मानवाआळा हा।

सुभ सुपना :

जद भगवान महावीर माता त्रिसला रै गरभवास में आया तो त्रिसला चवदह दिव्य अर उत्तम सुपना देखिया[1]। सुपना देख राणी नै घणी खुसी हुई। वीं रो रुं-रुं हरख अर उमाव सूं भरग्यो। उणीज वगत वा उठ'र राजा सिद्धार्थ कनै गई। वांनै खुसी-खुसी आपणै सुपना री बात सुणाई। राजा सिद्धार्थ राणी रा सुपना सुण राजी हुया। दिन उगतांई राजजोतसी नै बुला'र सिद्धार्थ राणी रै देख्योडा सुपनां रो फळ पूछियो। राजजोतसी बतायो कै इणां सुभ सपनां सूं मालम व्है कै राणी त्रिसलादेवी भागसाळी पुत्र री माता बणणआळी है। इणांरै जो पुत्र हुवैला

---

१. चवदह सुपना रा नाम इण भांत है—

(१) हाथी (२) बळद (३) ना'र (सिंह) (४) लिछमी (५) फूलांरी माळा (६) चन्दरमा (७) सूरज (८) ध्वजा (९) कळस (१०) पदम-सरोवर (११) क्षीर सागर (१२) विमान (१३) रतना रो ढेर (१४) निरधूम आग।

दिगम्बर परम्परा सोलै सुपना मानै।

वो या तो तीर्थंकर बर्णला या चक्रवर्ती सम्राट । ओ बाळक आपर्णै कुळ, वंस अर राज में सैं भांत री सुख-समृद्धि में वढोतरी करसी ।

सुपना रो फळ सुर्ण राजा-रार्णी समेत सगळो राज-परिवार हरखियो । महावीर गरभ में आया जद सूं ई राजा सिद्धार्थ रै खजाने में वढ़ोतरी हुवर्ण लागी । चारुंकांनी सूं खुसी अर उन्नति रा आछा समाचार आवर्ण लाग्या । त्रिसला अर सिद्धार्थ सोचियो कै ओ सब पुण्य परताप गरभ में आयोड़ै बालक रो इज है । जद बाळक जनमेला, आपां वींरो नाम वर्धमान राखांला ।

माता रै प्रति भगति :

महावीर जद माता त्रिसला रै गरभवास में हा, वांरै मन में विचार आयो कै म्हारै हलर्ण चलर्ण सूं माता नै कित्तौ कष्ट हुवै । जै म्हूं आ हलर्ण-चलर्ण री किरिया वन्द करदूं तो माता नै घर्णो आराम मिलैला । आ सोच'र महावीर गरभ में आपर्णो हिलर्णो-डुलर्णो बंद कर दियो । वाळक रो हालर्णो-चालर्णो वंद हुवतो देख माता त्रिसला घर्णी घबरायगी । वां नै लाग्यो के गरभ रो वाळक या तो मांदो है या कोई वेजां हरकत होयगी है । वा दुखी हुय'र भांत-भांत सूं विलाप करर्ण लागी । राजा सिद्धार्थ रार्णी री व्यथा समझ्या । राजा-रार्णी रै ईं दुख सूं सगळो राज परिवार उदास हुय'र चिन्ता में डूवग्यो ।

महावीर आ हालत जार्ण'र आपर्णै हलर्ण-चलर्ण री किरिया पाछी सरु कर दी, तद जा'र रार्णी रै जीव में जीव आयो । महावीर मन मांय सोच्यो—म्हारै कुछेक क्षर्णां रै वियोग सूं मां नै कित्तौ दुख हुयो । जद म्हूं संसार छोड़'र दीक्षा लूंगा तद मां रो कांई हाल हुवैलो, वां नै कित्ती पीड़ा हुवैली ? यूं सोचता-सोचता मां रै प्रति स्नेह भाव सूं भीग्योड़ा महावीर गरभवास में इज आ प्रतिज्ञा करली कै जठा ताईं मां-बाप जीवता रेवैला म्हूं वर्णां री सेवा करूंला, उर्णांरै आंख्यां सामै घरबार छोड़'र संजम नी लेऊंला ।

जनम :

ईसा सूं ५९९ वरसां पैली चैत सुद तेरस रै दिन राणी त्रिसला एक रूपाळै गुणवान पुत्र नै जनम दियो। पुत्र जनम रा समीचार सुण राजा अर प्रजा सै घणा हरखिया। इण खुसी में राजा सिद्धार्थ जेळखाना रा सगळा कैदियां नै सजा में छूट दी। गरीबां नै खूब दान-दक्षिणा दीवी। नगर रा मकान, गलियां, चौराया, भांत-भांत सूं सजायाग्या। भांत भंतीला खेल तमासा अर नाच-गाणां हुया। जनम रो मोछब घणै हरख अर उमाव सूं मनायो गयो।

नामकरण :

भगवान महावीर रै जनम रै बारह दिन पछै राजा सिद्धार्थ एक वहोत बड़ो जीमण करियो। ईं मांय आपणै सगळा रिसतेदारां, मित्रां अर जाति भाइयां नै बुलाया। घणै आदर मान सूं सगळा नै भोजन जिमायो अर पछै एक वड़ी सभा बुलाई। सभा मांय सिद्धार्थ बोलिया—जद सूं ओ बाळक त्रिसलादेवी रै गरभ में आयो वद सूं धन, धान अर राजकोष में घणी वढोतरी हुई। ईं खातर ईंण भागसाळी पुत्र रो नाम वर्धमान राखणो चाइजै। आयोड़ा सैं पावणापाई नै 'यथा नाम तथा गुण' होवण सूं ओ नाम घणो दाय आयो।

परिवार :

वर्धमान आपणै माइतां री तीजी संतान हा। इणांरै नंदिवर्द्धन नाम रो वड़ो भाई अर सुदर्शना नाम री एक वैन ही। वर्द्धमान रा मामा चेटक वैसाली गणराज्य रा अध्यक्ष हा। इणां रै दस पुत्र अर सात पुत्रियां ही। सवसूं वड़ा पुत्र सिंहभद्र हा। वी वज्जीगण रा प्रधान सेनापति हा। इण भांत वर्धमान रो

पारिवारिक रिश्तो अंग, मगध, अवंती सूं लै'र सिन्धु-सौवीर देश रा घणा राजपरिवारां सूं जुड़ियोड़ो हो।

वर्धमान सूं महावीर :

बाळक वर्धमान रो पाळण-पोषण घणा ठाटवाट सूं हुयौ। अणां रै चारुकांनी सुख-सुविधा अर आमोद-प्रमोद रा घणा साधन हा। महाराणी त्रिसला खुद आपणै हाथां सूं इणांरो लालण-पाळण करती ही। वर्धमान रो सरीर गठ्योड़ो अर कान्ति सूं दमकतो हो। इणां रै मुखमण्डळ पर घणो तेज हो। ज्यूं-ज्यूं बाळक वर्धमान उमर में वधवा लागा त्यूं-त्यूं धीरता, वीरता अर ज्ञान री गरिमा पण वधवा लागी। आपणं बुद्धिवळ, विनय अर विवेक सूं आप लोगां रा दिल जीत लिया। आप कदैई किणी रा दिल कोनी दुखावता अर सदा सांत भांत सूं रैवता।

वर्धमान जनम सूं ई अनन्त बळ रा धणी हा। एकदा शक्रेन्द्र आपणी देवसभा में वर्धमान री चरचा करतां कह्यौ कै-राजकुंवर वर्धमान बाळक हुवता थकां भी घणो पराक्रमी अर साहसी है। कोई मिनख, देवता अर राक्षस वींनै नी तो हरा सकै अर नी डरा सकै। आठ वरसां रै छोटे से बाळक रै बळ अर पराक्रम री इतरी वड़ाई सुण'र एक देवता नै रोस आयग्यो। वो वर्धमान री परीक्षा लेण खातर त्यार हुयो। वो सांप रो रूप वणा'र जठै वर्धमान आपणै गोठीड़ा सागै रूंख पर चढ़ण-उतरण रो खेल खेलरिया हा, बठै पोंच्यो अर उणीज रूंख सूं लिपटग्यो। वर्धमान रा सगळा साथी सरप नै देख'र डरग्या। वे अठी-उठी भागवा लागा। सांप फण ऊंचा'र फूंकाड़ा मारवा लाग्यो। वी आपणै गोठीड़ा नै कैवण लाग्या—डरपो मती, सान्त रैवो। म्हूं अवार ई नै पकड़'र छैटी छोड़ दूंला। वी सरप नै पकड़वा खातर वींकै नैड़े गया। सरप जोर सूं झपटो मारियो पण वहादुर वर्धमान वींनै रस्सी दाई पकड़'र छैटी कांकड़

में छोड़ आया। वर्धमान री बहादुरी नै देख सगळा साथी भणा राजी हुया।

जद वर्धमान देव रै सरप रूप सूं नीं डर्‌या तो देवता फेरुं परीक्षा लेवण री सोची। वो बाळक रो सरूप बणाय नै वर्धमान री टोळी में आय मिल्यो। हार-जीत रै ईं खेल में हार्‌योड़ो बाळक जीत्योड़े बाळक नै आपरै कांधा पर बैठा'र तै करयोडी ठोड़ ताईं लैजावतो। देव बाळक टावरां सागै खेलण लागो। खेल में वो हारग्यो। नियम मुताबिक वींरी वर्धमान नै कांधा पर बैठावण री बारी आयी। देव बाळक वर्धमान नै आपणै कांधा पर बैठा'र चालवा लाग्यो। चालतां-चालतां देव ताड़ जितरो ऊंचो व्हैग्यो और विकराळ रूप धारण कर'र वर्धमान नै डरावा-धमकावा लाग्यो। देव रो डरावणो सरूप देख'र सैं साथीड़ा डरग्या। पण आतमबळरा धणी वर्धमान तो नाममातरइ कोनी डर्‌या। वणां छद्मवेषधारी देव री पीठ माथै एक मुक्की मारी। मुक्की मारतांई वो हेठै बैठग्यो।। देव असल रूप में प्रगट हो'र राजकुंवर वर्धमान रै साहस अर बळ री घणी बढ़ाई करी। आठ वरसां री उमर में अद्‌भुत वीरता रै कारण इज वर्धमान महावीर नाम सूं प्रसिद्ध हुया।

चटसाल कांनी :

वर्धमान जनम सूं ईं मति, श्रुति अर अवधिज्ञान रा धणी हा। एक दिन सुभ घड़ी देख माइत वां नै पढ़वा खातर चटसाळ मोकलिया। वर्धमान माइतां रो कैणो मानणो अर गुरु रो आदर करणो आपणो फरज समझता हा। वां कदै भी आपणै ज्ञान रो दिखावो नी करियो। चटसाळ में गरुजी रे सामै वर्धमान विनीत चेला री दाईं बैठ्या। पैलड़े दिन गरुजी वां नै वरणमाळा रो पैलो पाठ पढ़ायो। कुमार रै जनमजात ज्ञानी हुवण री बात नीं माइत जाणता हा अर नीं गरुजी।

महावीर नै चटसाळ जावता देख इन्द्र तिळकधारी पंडित रो रूप बरण'र चटसाळ कांनी आयो। पंडित रै सरीर सूं ब्रह्म तेज टपक र्‌यो हो। इसो लखावतो कै ओ तो कोई मोटो ऋषि है। ऋषि आय'र वर्धमान रै पगां पड़ियो। वांसू सास्त्र अर व्याकरण रा घणाखरा टेढ़ा-मेढा सवाल पूछिया। वर्धमान तुरत-फुरत सगळा जवाब आच्छी तरैऊं दे दिया। वर्धमान रो ओ ज्ञान देख इन्द्र गरुजी नै कह्यौ— ओ बाळक घणो बुद्धिमान अर अवधिज्ञान रो धारक है। ईं नै साधारण ज्ञान देवण री जरूरत कोनी। आ सुण गरुजी समेत पूरी चटसाळ रा बाळक वर्धमान रै चरणां में झुकग्या। राजा सिद्धार्थ जद आ बात सुणी तो वी पण नेह सूं गळगळा व्हैग्या।



६ | विवाह अर वैराग

वर्धमान बाळपणा सूं ई गंभीर प्रकृति रा हा। वां नै संसार रा राग-रंग चोखा नी लागता। वी आपणी च्यारुमेर री राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक समस्यावां रै चिन्तन में लीन रैवता। वी चिन्तन में इत्ता गहरा डूब जावता कै वां नै नी भूख लागती, नी तिस।

पिता सिद्धार्थ अर माता त्रिसला वर्धमान रै इण गंभीर अर सांत सुभाव नै पळटणो चावता हा। ई खातर वणा वर्धमान रो व्याव करण री सोची। पण वर्धमान व्याव करणो नीं चावता। वी तो संयम रै मारग पर वढणो चावता हा। ई कारण व्याव रै प्रस्ताव नै वी वार-वार नामंजूर करता रया। वर्धमान री विरक्ति देख एक दिन माता त्रिसला घणी दुखी हुई। मां नै दुखी देख वर्धमान व्याव रो प्रस्ताव मंजूर कर लियो। समरवीर महासामन्त री वेटी जसोदा रै सागै वर्धमान रो व्याव हुयो।[1] उणां रै एक कन्या पण हुई जिरो नाम प्रियदर्शना हो। इणरो व्याव जमालि सागै हुयो। सांसारिक मोह-माया में महावीर नीं उलझ्या। वी ई जीवन नै काम, क्रोध अर विषय-वासना रै कीचड़ में कमळ री दांई सुद्ध अर पवित्र राखणो चावता हा।

भोग नीं योग :

महावीर रै चारुकांनी घणखरी भोग-सामग्री बिखरी पड़ी ही। माइतां री ममता, भाई नन्दिवर्धन रो हेत, अर पत्नी जसोदा

१—दिगम्बर परम्परा मुजब महावीर व्याव नीं करियो।

रो प्रेम नितहमेस वणा पर बरसतो हो, पण फेर भी महावीर रो मन उणां में रम्यो कोनी। वणां री आतमा बाहरी भौतिक सुखां में सुख रो अनुभव नी करती। वा तो जीवन रै सांचा सुखां री खोज में लाग्योड़ी ही। उण समै मिनख आपण सुवारथ खातर बीजा प्राणियां नै तकलीफ देवता हा, धरम रै नाम पर घणखरा अंधविसवास समाज में फैल्योड़ा हा। चारूंकांनी दुखी मानखा रो हाहाकार हो। महावीर रो हिरदय आ दसा देख पसीजग्यो। वां औ निश्चय करियो कै म्हनै इण मायावी संसार सूं ऊपर उठणो है, दुखी मिनखां रो दुख मिटावणो है। ईं दुख नै मेटण सारु आतमबळ री जरूरत है अर ओ आतमबळ त्याग रै मारग नै अपणाया बिगर कोनी मिल सकै।

माता-पिता रो वियोग :

जद महावीर अट्ठाइस वरस रा हा, वां रा माता-पिता देवलोक हुया। वर्धमान नै आपणां मां-बाप सूं घणो हेत हो। फेर भी वणां रोवणो-कळपणो नी करियो। वी आच्छी तरेऊं जाणता हा कै ओ सरीर नासवान है। उणरो मरणो-मिटणो वांकै वासतै कोई इचरज नी हो।

माता-पिता रै देवलोक हुयां पछै महावीर री गरभवास में करियोड़ी प्रतिज्ञा पूरी व्हैग्यी ही। अवै वणां रै मन में दीक्षा लेवण री भावना जागी। वां आपणै वड़े भाई नंदिवर्धन रै सांमै आपणै मन री वात राखी। छोटे भाई रै संजम लैण री वात सुण एक'र तो नंदिवर्धन रो काळजो कांप ग्यो। वीं गळगळा हो'र बोल्या- माइतां रै विजोग दुख नै हाल आपां भूल्या कोनी अर अवै थां भी संजम लेय नै म्हनै एकलो छोड़णो चावौ। ओ समै थांरै योग कांनी वढ़ण रो कोनी, थोड़ा औरुं ठैरो।

भाई री बात मान'र महावीर दो बरस तांई ओरुं घर में रवण रो तै करियो। इण दो बरसां में महावीर भोग-विळास सू अळगा रेय'र आत्मचिन्तन करियो।

दाता रै रूप में :

संजम लेण रै एक बरस पैलां सूं महावीर जरूरतमंद लोगां में आपणी संपत्ति बांटणी सरु करी। वी नितहमेस एक करोड़ आठ लाख सोना रा सिक्का दान में देवता। वी नी चावता कै धन किणी एक ठौड़ एकठो हुवतो रेवै। धन समाज री सम्पत्ति है। उणरो उपयोग समाज खातर हुवण में इज उण री सार्थकता है।

संजम रै पथ पर :

दो बरस पूरा हुयां पछै वर्धमान भाई नंदिवर्धन अर चाचा सुपार्श्व रै साम्है दीक्षा अंगीकार करण रो प्रस्ताव राखियो। दोन्यूं राजी-राजी वर्धमान नै प्रव्रज्या अंगीकार करण री आज्ञा दीवी। वर्धमान रै दीक्षा लेवण रा समीचार बिजळी री दांई सगळा कांनै फैलग्या। दीक्षा मोछव री घणी त्यारियां हुई।

मिगसर वद दसम रै दिन राजकुंवर वर्धमान मेहलां सूं चन्द्रप्रभा नाम री पाळकी में विराज'र ज्ञानखण्ड बाग में गया। वां रै पाछै-पाछै हजारां-लाखां लोग-लुगाई मंगळ गीत गावता चाल्या। इण मोछव नै देखबा खातर देवता भी धरती पर आया। सुपार्श्व अर नंदिवर्धन भी सागै हा। वडेरा वर्धमान नै आसीसां दीवी।

वर्धमान पाळकी सूं उतर अशोकव्रक्ष रै नीचे गया। वठै वणा गिरस्ती रा गाभा उतार निग्रन्थ रो रूप धारण करियो। सब

जणा एक निजर सूं महावीर कांनी देखर्‌या हा। एकाएक मंगळ गीत अर बाजा बन्द व्हैग्या। चारुंकांनी एकदम सांति छायगी। महावीर पंचमुष्ठि केसलुंचन करियौ। वर्णां रै चेहरा पर घणी खुसी ही, लिलाट अलौकिक तेज सूं चमकर्‌यौ हो। महावीर हाथ-जोड़ सिद्ध भगवान नै नमसकार करियो अर प्रतिज्ञा करी कै म्हूं आज सूं समभाव धारण करूं हूं। मन, वचन अर करम सूं पापपूर्ण (सावद्य) आचरण रो त्याग करूं हूं। मारै मारग में जै मुसीबतां अर उपसर्ग आवैला म्हूं उणानै समभाव सूं सहन करूंला। अर साधना रै ईं कंटीला मारग पर लगातार चालतोइ रैऊंला। देखता ईं देखता वर्धमान श्रमण बणग्या। अब वां रो घर, परिवार अर राज सूं नातो टूटग्यो। वीं इसा राज में पोंचग्या हा जठै किणी भांत रो दुख नी हो, वी इसा परिवार में मिलग्या हा जठै म्हारै अर थारै रै बीचै कोई भेद नी हो।

अगणित आंख्यां प्रभु महावीर रै दिव्य सरूप रो दरसण कर री ही, अगणित कान वांकी दिव्य साधना रो उद्‌घोष सुणर्‌या हा। श्रद्धा अर उमाव सूं हजारूं आंख्यां एकै सागै बरसबा लागी। लोगां रा हाथ आपै आप जुड़ग्या अर माथा आपै प्रभु रा चरणां में नमग्या। असंख्य कंठा सूं एकै सागै आवाज गूंजी 'श्रमण महावीर री जय।'

———

७ | साधक जीवन

श्रमण वर्धमान नै क्षत्रिय कुंडपुर अर अठारा लोगां सूं मोह-ममता नी र्‌यी । वर्णा कयी–म्हूं तो अबै श्रमण हूं । राज अर देस री सीमा सूं ऊपर । थां लोग अबै म्हारै साथै कठातांई रेवौला । वर्ध-मान री वाणी सुण सैं लोग आप आपरो गैलो पकड़ियो । श्रमण महावीर भी सबसूं विदा लै'र चालिया एकला वनकांनी ।

महावीर मन मांय निश्चय करियो कै जठा तांई म्हनै ज्ञान री पूरी ओळखाण अर प्राप्ति नी हुवैला म्हूं सरीर री ममता छोड'र समभाव सूं साधना में लीन रैऊंला । देव, मिनख अर तिर्यंच जीवा सूं जित्ता भी उपसर्ग (कष्ट) मिलैला, वांनै समभाव सूं सहन करूंला ।

महावीर री करुणा :

ज्ञातखण्ड वन सूं आगै बढ़ती बखत एक गरीब बामण आय नै महावीर रै चरणां में पड्यो अर कैवण लाग्यो—हे कुंवर ! थां साल भर तांईं खूब दान–दक्षिणा देय'र गरीबां री गरीबी मेटी, पण म्हूं खोटा भाग रो गरीब कोरोइज रेइग्यो । म्हारा टाबर अन्न रा दाणा–दाणा तांईं तरसर्‌या है। हे भगवन ! अबै म्हारी गरीबी मेटो । श्रमण महावीर बोलिया—अबै तो म्है घरबार, धन-दौलत, राजसी ठाठ–बाठ सैं त्याग दिया है । बामण कैवण लाग्यो-आपरै कनै कांई चीज नी हुवै तो आपरै कांधा पर पड़ियौ ओ कपड़ो म्हनै बगस दो । महावीर उण कपड़ै मांय सूं भी आधो फाड़'र बामण नै दे दियो अर आतम चिन्तन में लीन व्हैग्या ।

महावीर रो पुरुसारथ :

कुरमारगांव पोंहच'र महावीर एक रूंख हेठै ध्यान में लीन हुया। इण समै एक गवाळियो बळदां री जोड़ी लै'र वठीकर निकळियो। गवाळिया नै गायां दुवण खातर वेगोसोक गांव जाणों हो, ईं वास्तै वो आपणै बळदां री जोड़ी नै सागै नी लेजा'र वठै ध्यानमगन उभिओड़ै महातमा नै देख'र वो बोल्यो - बाबा ! थोड़ो म्हारै बळदा रो ध्यान राखज्यै। हूं अवार गायां रो दूध काढर वेगोसो'क आऊं। यूं कै'र गवाळियो वीर हयो। घड़ी दोय केड़े जद वो गांव जा'र पाछो आयो तो वठै बळदां नै नी देख गवाळियै नै घणी रीस आई। वीं महावीर सूं पूछ्यो—बोल ! म्हारा बळद कठै गया।

महावीर आपणै ध्यान में मगन आतम चिन्तर कररया हा। वणां गवाळियै री बात नी तो सुणी अर नी कांई पडूतर दियो। गवाळियो बळदां री तलासी में रात भर अठी-उठी घूमतो रैयो। पण कठै बळद नीं दिखिया। दिन उगै वो फेरूं बळदा री तलासी में महावीर कांनी आयो। वठै अचाणचक बळदा नै जुगाळी करतां देख'र वो दंग रैयग्यो। वो महावीर पर आग बबूलो हुयो। वीं नै लाग्यो कै ओ साधू तो कोई ठग है, ढोंगी है। इणीज कपट सूं म्हारा बळद छुपाय राखिया हा। आ सोच गवाळियो बळदां नै बांधण री रस्सी सूं महावीर पर वार करवा लाग्यो। पण महावीर सांत हा। इतरा में इन्द्र आय गवाळियै नै ललकारियो अर कयो कै—अै मुनि तो सिद्धार्थ रा पुत्र वर्धमान है। आतम कल्याण अर लोक-कल्याण खातर साधना में लीन है।

इण घटणा रै पछै इन्द्र प्रभु सूं अरज करी कै आपरी सेवा खातर म्हूं आपरै सरणां में रैवणो चावूं पण प्रभु ना दैवता कयौ — सिद्धि पावा खातर म्हनै किणी री सहायता री जरूरत कोयनी। साधक आपणै पुरसारथ अर आतमबळ सूं इज सिद्धि प्राप्त करै।

विदेह भाव :

महावीर जिण दिन सूं प्रव्रजित हुया, उण दिन सूं सरीर री मोह ममता छोड़ दी ही। आपणै साधनाकाळ में वी एकान्त गुफा, निर्जन झूंपड़ी अर धरमसाळा में ध्यानस्थ रैवता। कड़कड़ाती सरदी अर बळतै तावड़ै में वां नै घणी तकलीफां झेलणी पड़ती। सरप, विच्छू जिसा जहरीला कीड़ा अर कागळा, गिरजड़ा जिसा नुकीली चोंच आळा जिनावर वां रै सरीर नै नोंचता पण महावीर कदै वांसूं दुखी हो'र आपणा ध्यान सूं विचलित नीं हुया।

साधना काळ में महावीर नै एकला विचरण करतां देख लोग वां नै चोर, ठग समझ'र मारता पीटता, घणी तकलीफां दैवता पण महावीर देह भाव सूं मुक्त अचल, अडोल र्‌या।

साधना काळ में महावीर नींद लैणी छोड़ दिवी। आहा[र] खातर वी घर-घर गोचरी जावता। अमीर-गरीब रो उणारै मन [में] कांई भेद-भाव नी हो। मौका पर रूखो-सूखो जिसो सुद्ध निरदो[ष] आहार मिल जावतो वी बीं नै निस्पृह भाव सूं ग्रहण कर लेवता। मांदहाज में वी कांई ओखद नीं लैवता। इण भांत वां रो देह प्रति मोह भाव नी हो।

साधना काल रो पैलो बरस :

कोल्लागसन्निवेस सूं विहार कर महावीर मोराक सन्निवे[स] पधारिया। बठै दुईज्जंतक तापसियां रो एक आश्रम हो। उण आश्[रम] रा कुळपति राजा सिद्धार्थ रा भायळा हा। महावीर नै आश्रम कां[नी] आवता देख आश्रम रा कुळपति उणां सूं इण आश्रम में चौमा[सो] करण री विनती करी। महावीर विनती मंजूर कर बठै एक झूंप[ड़ी] में ध्यान साधना में लीन हुया।

महावीर रै हिरदै में जीव मातर रै प्रति दया अर मैत्री

भावना ही। किणी प्राणी नै किणी भांत रो कष्ट देणो वी नी चावता। उण वरस पाणी कम बरस्यो हो, चारा री कमी ही। जिनावर भूखा मरता अठी-उठी मूंडो मारता रैवता। महावीर जिण झूंपड़ी मे साधना रत हा वा घास-फूस री बणियोड़ी ही। भूखी मरती गायां आश्रम री झूंपड़ियां रो चारो खावा लागती। झूंपड़ियां में रैणआळा दूजा तापसी गायां नै भगा-भगा'र झूंपड़ियां री रक्षा करता। महावीर जिण झूंपड़ी में साधनारत हा, वींरी घणकरी घास गायां खायगी पण महावीर निश्चिन्त होय आतमचिंतन में लीन हा।

महावीर री झूंपडी रै प्रति इण उदासीनता नै देख तापसी कुळपति सूं वांकी सिकायत करी। कुळपति पण महावीर नै ओळमो दैण खातर आया अर कैवण लागा– कुंवर! इतरी उदासीनता किण कामरी? पंछी पण आपणै घोंसला री रक्षा करै फेर आप तो राजकुंवर हो। कांई झूंपड़ी री रक्षा आप सूं नी हुय सकै? महावीर कैवण लाग्या—किणरी झूंपड़ी? किणरा राजमहल?

पांच प्रतिज्ञा :

महावीर नै अनुभव हुयो कै इण आश्रम में साधना सूं बत्तो महत्त्व चीजां रो है। अठै म्हारै रैवण सूं तापसियां रै मन में ईर्ष्या री भावना पैदा हुए। अबै म्हनै अठै नी रैवणो चावै। यूं सोच'र महावीर वठा सूं विहार कर दियो। इण समै वां पांच प्रतिज्ञावां करी—

(१) इसी जगां नी रैवूंला जठै म्हारै रैवण सूं लोगां नै किणी भात रो कष्ट, ईर्ष्यादि हुवै।

(२) साधना खातर आच्छो स्थान खोजवा री कोसिस नीं करूंला अर सदा ध्यान में लीन रेऊंला।

(३) मौन वरत राखूंला ।

(४) हाथां में आहार करूंला ।

(५) जरूरत री चीजां खातर किणी गिरस्ती नै राजी राखण री कोसिस नी करूंला ।

यक्ष री बाधा :

वठासूं महावीर अस्थिग्राम पधारिया । वठै एकान्त में एक पुराणो टूट्योड़ो मिन्दर हो । इण मिन्दर में ठहरवारी आज्ञा वां वठारा गिरस्ती लोगां सूं लीवी । गामवासी महावीर नै कयौ—अठै मत ठहरो । ओ तो सूळपाणी यक्ष रो मिन्दर है । अठै भूल सूं कोई रैय जावै तो वो जिन्दो नी बचै । पण महावीर वठैइ ठहरवा रो निसचै कर लियो । वी मौत सूं कद डरवाआळा हा । गामआळां लोगां नै महावीर री इण हिम्मत पर घणो इचरज हुयो ।

यक्षरै मिन्दर में जा'र महावीर ध्यानलीन हुयग्या । रात रा अंधारा में घणी डरावणी आवाजां आवण लागी । इण रो महावीर पर कांई प्रभाव नी देख यक्ष नै गुस्सौ आयग्यो । वीं विकराळ हाथी, ना'र राक्षस, अर नाग जिसा सरूप बणा'र महावीर नै घणी तकलीफां दीवी, पण महावीर सांत भाव सूं सै परीसह सहन करता र्‌या । आखर यक्ष हारग्यो । वीं नै आपणी इण हार पर घणी सरम आई । वो मन ही मन सोचवा लाग्यो—ओ पुरुस कोई साधारण मिनख नी हो'र बड़ो मिनख है । वीं प्रभु रै चरणां में पड़'र माफी मांगी । उण रो हिरदय पळटग्यो । वीं आपणी हिंसावृत्ति सदा-सदा खातर छोड़ दी । दिन उगै महावीर नै राजी खुसी ध्यानमगन देख गांवआळा नै घणो इचरज हुयौ ।

दूजो बरस :

अस्थि ग्राम रो चौमासो पूरो कर'र महावीर वाचाला नगरी

कांनी चालिया । वीचै मोराक सन्निवेस पड़तो हो, सूनी ठौड़ देख महावीर थोड़ा दिन बठैइ ध्यान करण रो विचार कियो । कड़कड़ाती ठंड में महावीर नै उघाड़ै सरीर कठोर साधना करतां देख आखो गांव वणांरै दरसण खातर आयो । महावीर री ध्यान साधना सूं प्रभावित हुयर घणा मिनख वांरा भगत बणग्या ।

महावीर दक्षिण वाचाला सूं जाय र्या हा कै सुवर्ण वाळुका नदी रै किनारै री एक झाड़ी में उणारै कांधा पर पड़्यौ देवदुष्य वस्त्र उलझ'र अटकग्यो । ईं घटना रै पछै वां कदैइ वस्त्र धारण नी करिया ।

चण्डकौसिक नाग नै प्रतिबोध :

महावीर कनखळ आश्रम सूं उत्तर वाचाला कांनी जायर्या हा । उण रस्ते में एक भयङ्कर नाग रैवतो हो । वींरो नाम चंडकौसिक हो । महावीर नै इण रस्ता सूं जावतां देख एक गवाळियै हाको पाड़'र कयो—महात्माजी ! इण रस्तै मती जाओ । अठीनै भयङ्कर काळो नाग रैवै है । वो दृष्टिविष सरप है । वींकै देखतां पाण मिनख अर जिनावर मर जावै । ओ हरियौ-भरियो वनखंड इणीज सरप री विष दृस्टि सूं उजड़ग्यो है । पण महावीर पर ईं वात रो कांई असर नी पड़ियो । वांनै नीं तो जिनगाणी री चावना ही अर नी मौत रो डर । वी तो चण्ड नै प्रतिबोध देणौ चावता हा । इण कारण लोगां रै विरोध करवा पर भी वां आपणी गैल नी वदली । वै उणीज रस्तै गया अर जा'र सरप री वांवी माथै ध्यान मगन हुयग्या ।

वांवी माथै उभियोड़ा मिनख नै देख चण्डकोसिक आगवबूलो हुयग्यो । वीं खूब जोरां सूं फुफकार करी अर किरोध में आय महावीर रै चरण नै डस लियो । पण महावीर इण सूं तनिक भी नी

घबराया। वी आपरणै ध्यान में बराबर लीनरया। महावीर री आ हिम्मत अर मजबूती देख सांप भी कई दफा वांनै डसियो पण महावीर तो उणीज भांत अडोल, अकम्प ऊभा रह्या। महावीर री आ असाधारण वीरता देख सरप रो विश्वास डोलग्यो। वीरै डसण री ताकत नष्ट हुयगो।

सरप नै यूं लाचार देख महावीर सांत भाव सूं कयो—सरप-राज! जाग, आपरणै किरोध नै सांत कर। इण किरोध रै कारण ईज थनै सरप री जूंण मिली है। अबै थूं आपरणै मन में प्रेम अर मित्रता रा भाव ला। जै मन में शुद्धि नी लावैला तो थारी आतमा यूंईज अंधारा में भटकती रेवैली।

महावीर रा इमरत वचन सुण'र चण्डकौसिक रो किरोध सांत व्हैग्यो। वो टकटकी लगा'र महावीर कांनी देखतो रह्यो। अबै वींनै ज्ञान रो प्रकास मिलग्यो हो। वींनै आपरणा कियोड़ा खोटा करम एक-एक कर याद आवण लाग्या। आतमगलानि अर पछतावो करता थकां उणरो हिरदय पळटग्यो। उणरी द्रष्टि रो सगळो जहर इमरत में बदलग्यो। महावीर रै डसियोड़ै चरणां री ठौड़ सूं खून री जगां दूध री धारा बेवण लागी। महावीर रै समभाव अर वत्सलता सूं सारो वातावरण प्रेममय बणग्यो।

चण्डकौसिक नाग रो उद्धार कर महावीर उत्तर वाचाला मांय पधारिया। अठै नागसेन रै घरै पन्द्रह दिन रै उपवास रो पारणो कियो। वठासूं महावीर श्वेताम्बिका नगरी पधारिया। अठै राजा परदेसी आपरा दरसण कर घणा प्रभावित हुया अर पक्का भगत बणग्या।

नाव किनारे लागी :

महावीर श्वेताम्बिका नगरी सूं सुरभिपुर कांनी विहार

कियो । बीचै गंगा नदी पड़ती ही । महावीर नदी पार करण खातर नाविक री आग्या लेय नाव में वैठिया । नाव में घणाई मिनख बैठा हा । नदी रो पाट घणो चौड़ो हो । देखतां-देखतां भयंकर आंधी अर तूफान चालवा लागो । नाव डगमगावा लागी । नाव में वैठ्या लोग डरग्या । वै रोवा-चिल्लावा लाग्या पण महावीर तो आपणै ध्यान में मगन हा । वांनै मौत रो डर कोनी हो । आखर उणांरी साधना रै परताप सूं आंधी अर तूफान थमग्यो अर नाव किनारै लागी ।

धर्म चक्रवर्ती :

श्रमण महावीर गंगा रै किनारै रा रेतीला मारग सूं हो'र स्थूणाक सन्निवेस पधार्‌या । अठै आ'र आप ध्यान में लीन हुयग्या । इण गाँव में पुष्य नाम रो एक जोतसी हो । वीं रेत में मंडयोडा महावीर रा चरण चिह्न देख्या । वीं आपरै ज्ञान सूं सोच्यो कै अै चरण-चिह्न किणी चक्रवर्ती सम्राट रा है । म्हनै लखावै कै कोई सम्राट मुसीबत में पड़ग्यो है । वो अवार उरवांणै पगां ईं रेतीला मैदान सूं हुयर गयो है अर एकलोई दीसै । ईं समें म्हूं जाय'र वींकी मदद करूं तो सायद उण री किरपा सूं म्हारी गरीबी मिट जावै । आ सोच'र पगां रा निसाण-निसाण वो जोतसी प्रभु रै पास पोंच्यो । वठै जाय वीं देख्यो कै एक महात्मा ध्यान मुद्रा में लीन ऊभो है । वीं ध्यान सूं देख्यो तो वी नै श्रमण रै सरीर पर चक्रवर्ती रा सं सैनाण नजर आया । वो अचम्भा में पड़ग्यो अर सोचण लाग्यो कै चक्रवर्ती रा सैनाण आळो पुरस भी कदेई भिक्षु हो सकै अर दर-दर, जंगळ-जंगळ मारो-मारो फिरै ? म्हनै तो लागै कै सास्त्र सब झूठा है, आंनै गंगा में फेंक देणा चाइजै । इनरा में एक दिव्य ध्वनि वींकै कानां में पड़ी पंडित ! सास्त्रां नैं असरधा रै भाव सूं मत देख । श्रमण महावीर साधारण चक्रवर्ती नी हो'र धरम चक्रवर्ती है । अै बड़ा-बड़ा सम्राटां रा भी सम्राट है । आखा जगत

रा पूजनीक है ।

दिव्य वाणी सुणर पुण्य रा अन्तर्चक्षु खुलग्या । वींरो माथो सरधा अर विनय भाव सूं प्रभु रै चरणां में झुकग्यो ।

गोसाल़क रो प्रसंग :

विहार करतां-करतां चौमासी करण खातर महावीर नाळन्दा नगर पधारिया । वी एक तन्तुवाय साळ (जुलाहै री दुकान या कारखानो) में ठहरिया । अठै मंखलीपुत्र गोसाळक नाम रो एक तापसी पैलां सूं ईज ठहरियोड़ो हो । गोसाळक घणो मुंह फट, जीभ रो चटोरो अर झगड़ालू सभाव रो हो । वो ईर्ष्यावश भगवान री कयोड़ी बातां नै झूठी पटकणो चावतो हो । एकदा गोसाळक भगवान नै पूछयो-हे तपस्वी ! आज म्हनै भिक्षा में कांई-कांई चीजां मिलेला । महावीर सहज भाव सूं कयो-कोदू रो वासी भात, खाटी छाछ अर खोटो रीपियो ।

महावीर री वाणी नै झूठी सावत करण खातर गोसाळक वड़ा-बड़ा सेठां रै घरै भिक्षा सारूं गयो, पण वीं नै खाली हाथ आवणो पड्यो । आखर में एक लुहार रै घरै वीनै कौदू रो बासी भात, खाटी छाछ अर खोटो रीपियो मिल्यो । प्रभु रा वचन सांचा जाण गोसाळक नियतिवाद रो समर्थक बणग्यो अर महावीर रै तप त्याग सूं घणो प्रभावित हुयो ।

महावीर चौमासी पूरो कर नाळन्दा सूं कोल्लाग सन्निवेस पधारिया । गोसाळक उण समै भिक्षा खातर बाहर गयोड़ो हो । भिक्षा लेयनै पाछौ आयो तो तंतुवायसळ में महावीर नै नी देख वो घणो दुखी हुयो अर आपणा कपड़ा, कुंडिका, जिसी चीजां ब्राह्मणां-नै देय'र माथो मुंडवाय खुद भगवान री खोज में निकळ पड्यो ।

जावतां-जावतां कोल्लाग सन्निवेस में ध्यानस्थ महावीर रा दरसण करिया। वठै वहुल ब्राह्मण रै दान री महिमा सुणी तो वीं को दिल महावीर रै प्रति सरधा सूं भरग्यो। वो सोचण लाग्यो ओ महावीर रै तप अर साधना रो फळ है। वीं हाथ जोड़ महावीर सूं वंदना नमस्कार करी अर कयो—आज सूं आप म्हारा धरम गुरु हो अर म्हैं आप रो चेलो।

तीजो बरस :

कोल्लाग सन्निवेस, सुवर्णखळ, बामणगांव होता हुया महावीर चंपा नगरी पधारिया। अठै चौमासे मांय दो-दो मास री कठोर तपस्या करता हुया महावीर आपणी ध्यान साधना में लीन रैया।

चौथो बरस :

गांव-गांव विहार करता हुया महावीर चौराक सन्निवेस पधारिया। उणां दिनां उठै चोरां रो घणो डर हो। पैरेदार रात-दिन पैरो देवता हा। महावोर नै देख पैरेदारां वांको परिचय पूछयो पण महावीर मौन हुवण सूं कांई नी बोल्या। इण कारण पैरेदारां नै संका हुई। वी वांनै चोर अर भेदू समझ घणी तकलीफां दीवी। आ बात उत्पल निमितज्ञ री वैनां सोमा अर जयन्ती नै मालम पड़ी तो वी पैरेदारां कनै गई अर उणानै महावीर री सांची ओळखाण कराई। महावीर नै ऊँचो महात्मा जाण'र पैरेदारां आपणी गलती पर घणो पछतावो करियो अर महावीर सूं माफी मांगी।

चौराक सन्निवेस सूं महावीर पृष्ठचंपा पधारिया अर ओ चौमासो अठैई पूरो करियो। ईं काळ में महावीर च्यार महिना री लम्बी तपस्या कीवी।

पांचमो बरस :

पृष्ठचंपा सूं विहार कर श्रमण महावीर कयंगळा होता हुया

ावत्थी नगरी पधारिया । अठै नगर रै वा'रै कड़कड़ाती सर्दी री रवा कियां विगर रात भर ध्यान में लीन रह्या । सावत्थी सूं हार कर महावीर हेळदुग पधारिया । अठै एक रूंख हेठै महावीर यान मग्न हुया । सरदी सूं बचवा खातर मारग चालणिया लोगां ठै आग जलाई अर परभात व्हैता पांण विगर आग बुझायांई वै ागै रवाना व्हैग्या । हवा रै झोखे सूं सूखा घास फूस वळग्या । ाग वळती-वळती महावीर रै कनैं आयगी जिसूं वांका पग दाझग्या ण फेरूं भी महावीर ध्यान सूं डिगिया कोनी ।

करम खपावण खातर महावीर अनार्य देसां मांय पण विचरण करियो । एकदा महावीर लाढ देस कांनी आया । वठै उणानै भांत-भांत रा उपसर्ग (कष्ट) मिल्या । रैवण नै ठीक जग्यां नी मिली । खावण नै लूखो-सूखो भोजन भी मुश्किलां सूं मिलियो । अज्ञानी लोग वां पर रेत फेंकता, गंडकड़ा पाछै दौड़ाय देवता, हथियारां सूं सरीर पर वार करता पण महावीर सांत भाव सूं सगळा कष्ट सहन करता अर निर्द्वन्द्व भाव सूं आपणै ध्यान में लीन रैवता ।

अनार्य देसां मांय विचरण करता-करता महावीर आर्य देस री भद्दिला नगरी मांय पधारिया अर अठै चौमासो कियो । इण काळ में महावीर भांत-भांत रा आसना रै सागै ध्यान करता थकां चातुर्मासिक तप री आराधना कीवी ।

छठो बरस :

भद्दिला नगरी सूं कदळी समागम, जम्बूसंड, तंवाय सन्निवेस जिसा नगरां में विहार करता थकां प्रभु वैसाली नगर पधारिया अर वठा सूं ग्रामक सन्निवेस । वठै विभेलक यक्ष रै रैवण री ठौड़ महावीर ध्यान मगन हुया । यक्ष प्रभु रै ध्यान अर तपोमय जीवन सूं घणो प्रभावित हुयो ।

ग्रामक सन्निवेस सूं प्रभु महावीर शालिशीर्ष नगर रै वा' रै

एक बगीचे में आय'र ध्यान मगन हुया। माघ महिनो हो। सुनसान जंगल में ठंडी बरफीली हवा चाल री ही। उण समै कटपूतना नामरी देव कन्या रै मन में ध्यान मगन महावीर नै देख पूरव जनम रो बैर जाग्यो। वीं महावीर रो ध्यान भंग करण खातर विकराळ रूप धारण करियो। बिखरियोड़ी जटावां में वीं बरफ जिसो ठंडो पाणी भर'र महावीर रै उघाड़ै सरीर माथै जोरदार बरसात कीवी।

महावीर इण उपसर्ग सूं तनिक भी विचलित नी हुया। कस्ट अर तकलीफां सूं वांरी साधना रो तेज और निखरयो। वांरै धीरज अर हिम्मत रै आगै कटपूतना रो बैर सांत हुयग्यो। वीं प्रभु रै चरणां में सिर नवाय माफी मांगी।

सातमो बरस :

महावीर ओ चौमासो आलंभिया नगरी में बितायो। अठा सूं वी कडाग अर भद्दणा सन्निवेस होता हुआ बहुमाल गांव पधारिया। अठै शालार्य नाम री देवी महावीर नै घणा उपसर्ग दिया पण वी आपणै ध्यान सूं तनिक भी विचलित नी हुया।

आठमो बरस :

भद्दणा सूं विहार कर महावीर लोहार्गला पधारिया। अठै पडौसी राजावां में आपसी झगड़ा हा। ईं कारण नगर में प्रवेस करण पर पाबंदी ही। बिगर ओळखाण करियां किणी नै नगर में प्रवेस नी दियो जावतो।

महावीर सूं भी उणारो परिचय पूछयो। वांनै मौन देख अधिकारियां उणांनै राजा जितसत्रु रै सामैं हाजर किया। वठै निमितज्ञ उत्पल आयोड़ो हो। वी राजा नै महावीर री ओळखाण कराय दी। राजा महावीर रै तप-त्याग सूं घणो प्रभावित हुयो।

वीं घणं आदर मान सूं महावीर नैं नमन करियो। बठा सूं विहा
कर प्रभु राजगृह पधारिया। अठै चातुर्मासिक तप कियो।

नवमो बरस :

राजगृह सूं विहार कर'र महावीर फेरूं अनार्य देसां में विचरिया। अठारा लोग अज्ञानी अर निरदयी हा। वां महावीर नै घणी यातना दीवी। उणां रै उघाड़ै सरीर पर भाला, लाठी, भाटा आदि सुं वार करिया। महावीर लहूलुहान हुयग्या पण समता भाव सूं वां सैं तकलीफां सहन करी। वांनै ठहरण खातर झूंपड़ी तक नीं मिली। वी रूखां रै हेठै ध्यान मगन रैय'र चौमासो पूरो करियो।

दसमो बरस :

गोसालक री रक्षा :

अनार्य देसां सूं विहार कर महावीर कूरमगांव पधारिया। गोसाळक पण इण समै वांरै सागै हो। अठै गांव रै बारै वैस्यायन नाम रो एक तापस सूरज रै सामैं दीठ कर, दोन्यूं हाथ ऊपर उठा'र आतापना लेर्‌यो हो। उणरै लाम्बी-लाम्बी जटावां ही। सूरज री गरमी सूं तप'र उणरी जटावां सू घणकरी जूंवां हेठै गिर री ही। वो उणानें उठा'र उठा'र पाछी जटावां में राखरयौ हो। तापस री आ हरकत देख गोसाळक ऊणरै कनै आयो अर बोल्यो—अरे, तू कोई तापस है या जूंवां रो घर? तापस मौन-रयो। पण जद गोसाळक वार-बार आ वात दोहराई तद तापस नै क्रिरोध आयग्यो। वीं गोसाळक नै भसम करण खातर आपणै तपोवळ सूं प्राप्त करयोड़ी तेजोलेश्या (आग बरसावण आळी लब्धि) उण पर फेंकी। गोसाळक इण सूं डर'र भाग्यो अर महावीर रै चरणां मांय छिपग्यो। वीं महावीर सूं अरज करी-प्रभु! म्हारी रक्षा करो, म्हनै वचाओ। गोसाळक री करुण कातर पुकार सुण महावीर गोसाळक कांनी देखियो। महावीर रै तप-त्याग अर

साधनामय जीवन रै प्रभाव सूं देखतापांण गोसाळक री जळन सांत हुयगी ।

कूरमगांव सूं सिद्धार्थपुर होता हुया महावीर वैसाळी पधारिया अर नगर रै वा'रै ध्यान मगन हुया । आता-जाता लोग महावीर नै भूत-परेत समझ'र घणी तकलीफां दीवी । महावीर सैं तकलीफां सांत भाव सूं सहन करी । संयोग सूं राजा सिद्धार्थ रा दो मित्र संख अर भूपति उण रास्ता सूं निकळिया । वां महावीर नै ओळख लिया । वां उपसर्ग देवणियां लोगां नै समझा'र वठा सूं अळगा किया अर प्रभु रै चरणां में वन्दना करी ।

खेवट रो किरोध :

वैसाळी सूं महावीर वाणिजगाम कांनी आया । रास्ते में गंडकी नदी पड़ती ही । नदी पार करण खातर प्रभु नाव में बैठिया । जद नाव किनार लागी, खेवट महावीर सूं किरायो मांग्यो, पण महावीर कांई देवता ? महावीर नै मौन देख खेवट नै घणो किरोध आयो । वीं प्रभु नै खरीखोटी सुणाई अर तपती वाळू पर लै जाय वांनै ऊभा कर दिया । प्रभु महावीर वठै जाय ध्यानलीन हुयग्या । अचाणचक उठी नै राजा संख रो भाणेज चित्र आयो । वो महावीर नै जाणतो हो । वीं खेवट नै पण महावीर री ओळखाण कराई । वाणिजगाम सूं सावत्थी पधार'र प्रभु चौमासो पूरो करियो ।

ग्यारमो बरस :

महावीर सावत्थी सूं विहार करता-करता सानुलट्ठिय सन्निवेस पधारिया । अठै तपस्या कर'र ध्यान साधना में लीन हुया । एक दा पारणै रै दिन भिक्षा खातर महावीर आनन्द गाथापति रै घरै गया । उण समै दासी वहुला वच्योड़ो वासी अन्न फेंकण खातर वा'रै आई । वा'रै साधु नै ऊभो देख वीं पूछियो- महाराज ! थांनै

करियौ पण दृढ़ संकल्प रा धणी महावीर रो ध्यान तिळ भर भी नीं डिगियो।

उपसर्गों रो क्रम आगै बढ़तो ई र्‌यौ। एक भूखो तिरसो वटाऊ आयो। वो भूख मिटावण सारू खाणो बणावणो चावतो हो। वीनै कठैइ चूल्हो निजर नीं आयो। वीं ध्यान में लीन ऊभा महावीर रा चरणां सूं चूल्हा रो काम लेय'र खाणो बणा लियो। इण घोर पीड़ा सूं भी महावीर रो ध्यान भंग कोनी हुयो। एकइ रात में घणाखरा उपसर्गों सूं महावीर री साधना रो तेज ओरूं निखरग्यो। नूं ई चेतना सूं भर'र दिन उगै वणां आगै कदम बढ़ाया। पण संगम हाळताई महावीर रो साथ कोनी छोड़ियो। उणां नैं ओरूं तकलीफां देवण खातर वो भी उणांरै सागै-सागै चालियो।

एकदा तोसलिगांव रै बाग में महावीर ध्यान मगन हा। उणां नै ध्यान मगन देख संगम साधु रो भेस बणा'र गांव में चोरियां करण नै गयो। लोगां वीं नै पकड़'र मारियो-कूटियो। वो बोल्यो-म्हनै मती मारो। म्है तो म्हारै गुरु रै केवण सूं चोरी करी है। जै थां असली चोर नै पकड़नो चावो तो बाग में जावो। वठै म्हारो गुरु ध्यान रो स्वांग बणा'र ऊभो है। लोग बाग में जा'र प्रभु पर लकड़ियां अर लाठियां सूं वार करिया, पण महावीर अडौल बण'र ध्यान में लीन रह्या।

इण भांत संगम देव छह महिना ताई महावीर रै पाछै पड़ियो र्‌यौ अर उपसर्ग देवतो र्‌यो। इण उपसर्गां में महावीर नै अन्न-पाणी भी नी मिल्यो। संगम देख्यो कै इतरा कष्टां सूं भी महावीर आपरां ध्यान सूं अळगा नी हुया तो उणांरी साधना सूं प्रभावित रै हुय'र वो महावीर रै पगां पड़ियो अर वांसूं माफी मांगी। महावीर रै मन में कष्ट देवणिया संगम रै प्रति नीं रोस हो अर नीं द्वेष।

महावीर री इण क्षमा भावना नै देख संगम लाजां मरग्यो अर मन ही मन खुदरी आतमा नै धिक्कारवा लाग्यो।

कुलथ सूं पारणो :

गांव-गांव विचरण करतां हुया महावीर वैसाळी पधारिया। चौमासो अठैइ पूरो करियो। पारणा रै दिन भिक्षा खातर महावीर पूरण सेठ रै घरां गया। द्वार पर महावीर नै ऊभा देख सेठ उणां री उपेक्षा करी अर दासी सूं कयौ कै बारै भिक्षु ऊभो है। वीनै भिक्षा दैय दे। दासी एक कुड़छो भर'र कुळथ प्रभु नै दिया। महावीर उणा कुळथ सूं चातुर्मासिक तप रो पारणो कियो।

बारमो बरस :

चमरेन्द्र नै सरण :

महावीर सुन्सुमारपुर वन खंड में असोक वृक्ष रै हेठै ध्यान लीन हुया। एकदा चमरेन्द्र (असुरकुमारां रो इन्द्र) आपणै ज्ञान-बळ सूं देखियौ कै—इण संसार में म्हारै सूं धनवान अर बळवान कुण है। वींनै इन्द्र दिव्य भोग भोगतो निजर आयो। ओ देख चमरेन्द्र रो किरोध वधग्यो। वो आपणै साथी असुरकुमारां नै पूछियो—ओ विवेकहीन घमण्डी देव कुण है? असुर कुमार कयो कै ओ तो सौधर्मेन्द्र देव है, अर आपणै सूं वत्तो ताकतवर है। ईं सूं छेड़छाड़ करणो आपणी जान जोखम में नाकणी है।

चमरेन्द्र असुरकुमारां री मजाक वणावतां वोलियो-थां सब कायर हो, म्हूं किणी नै म्हारै माथा पर वैठ्यो देख नीं सकूं। अबार वीकी टांग पकड़'र वीं नै आपणै आसण सूं कांई देवलोक सूं हेठै पटक दूंला।

चमरेन्द्र रा रोस भरिया सबद सुण देवराज इन्द्र नै पण रोस आयग्यो। वो सिंहासण पर वैठ्या-वैठ्या वज्र हाथ में ले'यर

चमरेन्द्र रै दे मारियो। वज्र आग उगलतो थको चमरेन्द्र कांनी आवा लाग्यो। वींनैं देख असुरराज डरपग्यो। वो ध्यानस्थ भगवान रै कनै जाय उणांरै पगां में पड़ियो अर कैवा लागो–भगवान म्हनै शरण दो।

देवराज इन्द्र अवधि ज्ञान सूं देखियौ कै चमरेन्द्र प्रभु महावीर रै चरणां में पड़ियो है। कठै म्हारै छोड़्योड़ै इण वज्र सूं भगवान नै तकलीफ़ नीं हुवै, आ सोच वो भगवान रै कनै आयो अर वांसूं चार आंगळ दूरी सूं वज्र नै पाछो पकड लियो। भगवान रै चरणां-सरणां में होवण सूं देवराज इन्द्र चमरेन्द्र नै माफ करियो।

कठोर अभिग्रह :

सुन्सुमारपुर, भोगपुर, नन्दिग्राम, मेढ़िया ग्राम होता हुया प्रभु महावीर कोसाम्बी पधारिया। अठै पोस वदी एकम रै दिन महावीर एक कठोर अभिग्रह धारियो—छाजळै रै कूणै में उड़द रा वाकुळा लियां देहरी रै बीचै कोई राजकुंवरी दासी बणियोड़ी ऊभी हुवै। वींकै हाथां में हथकड़ियां अर पगां मांय बेड़ियां हुवै। माथो मूंडियोड़ो हुवै। आंख्यां मांय आंसू अर होठां पर मुळक हुवै। वींकै तेला (तीन दिन री भूखी) री तपस्या हुवै। भिक्षा रो समय बीतग्यो हुवै। अैड़ी बगत इसी कंवारी राजकन्या म्हनै भिक्षा देवैला तद म्हूं आहार करूंला अर नीं तो छह महिना ताईं भूखो रेऊंला।

आ कठोर प्रतिज्ञा ले'र महावीर नित हमेस भिक्षा खातर जावता। पर अभिग्रह पूरो नी हुवण रै कारण विना कांईं लियां पाछा आय जावता। लोग अचंभा में हा कै महावीर आहार कांनी लेवै ? इण नगर में इसी कांईं कमी है, कांइ बुराई है, जिसूं भगवान विना अन्न-पांणी लियां पाछा-पाछा फिर जावै ? इण भांत विना आहार करियां पांच महिना अर पच्चीस दिन बीतग्या। अचाणचक

एक दिन भिक्षा लेवरण नै प्रभु धन्ना सेठ रै घरै गया। वठै राजकंवरी चन्दरणबाळा तीन दिन री भूखी-प्यासी छाजळे में उड़द रा बाकुळा लियां देहरी में ऊभी-ऊभी मुनिराज नै आहार देवा री शुद्ध भावना भाय री ही (सेठाणी मूळा ईर्ष्यावश चन्दन बाळा रा केस कतराय, हथकड़ियां अर बेड़ियां पैराय, उरणनै भूंवारै में बंद कर राखी ही।) प्रभु महावीर नै भिक्षा खातर आवतां देख वा घणी राजी हुई। वींको रूं-रूं खुमीऊं भरग्यो। अभिग्रह री सगळी बातां मिल री ही। बस, एक बात री कमी ही। वींरी आँख्यां में आंसू नीं हा। आ कमी देख आयोड़ा महावीर बिना अन्न-पाणी लियां पाछा फिरग्या।

आपरणै बाररणै आयोड़ा महात्मा नै खाली हाथ जावता देख चन्दरणा रो जीव उदास व्हैग्यो। वींरी खुसियां पर पाणी फिरग्यो। वा सोचरण लागी—म्हूं कितरी अभागरण हूं। संसार-समुद्र सूं तारबा आळा प्रभु म्हनै मझधार में छोड़'र चल्याग्या। इण मुसीबत में नाता-रिस्ता आळा लोगां तो म्हनै विसराय दीवी ही। म्हूं तो प्रभु महावीर रै आसरै ईज दिन काट री हीं। म्हनै तो पूरो भरोसो हो कै प्रभु म्हारै हाथां सूं आहार ले'र म्हारो उद्धार करैला। पण हाय! इण खोटा समय में भगवान भी म्हनै भुलाय दी। आ सोचतां-सोचतां वींकी आंख्यां आसुंआं सूं भीजगी।

महावीर पाछै मुड़'र देखियो। चंदन बाळा री आंख्यां में आंसू हा। महावीर नै भिक्षा खातर पाछा मुड़ता देख, वींरी उदासी मिटगी। ओठां पर मुळक आयगी। सै बातां मिलती देख महावीर चन्दरण बाळा रै हाथा सूं आहार लियो। इणरै सागै इ चन्दरणा रो संकट टळग्यो।

महावीर नारी जाति रो उद्धार करणो चावता हा। समाज में नारी नै इज्जत देवण खातरईज महावीर इसो कठोर अभिग्रह धारियो। प्रभु महावीर कयो—पुरुष री भांत नारी नै भी साधना रै

मारग पर वढण रो पूरो अधिकार है। चन्दणा महावीर री पैली शिष्या अर साध्वी संघ री प्रमुख बणी।

कानां में कीला :

साधना काळ रै तैरमां वरस रै सरुआत में महावीर छम्माणि गांव रै वा'रै ध्यान में ऊभा हा। सांझै एक गवाळियो वळदां नै महावीर कनै छोड़'र किणी काम सूं आपणै गांव गयो। पाछो आय जद वीं आपणां वळदां नै जोया तो वी नीं मिल्या। गवाळियै महावीर सूं पूछियो—म्हारा वळद कठै गया? महावीर तो आतम-चिन्तन में लीन हा। वी कीं नी वोल्या। महावीर नै मौन देख गवाळियै नै रीस आयगी। वो बोल्यो—अै ढोंगी वावा! तू म्हारी वात सुणर्‌यो है कै नी? कठै तू बहरो तो नी है? पण महावीर कीं उत्तर नी दियो। गवाळियै रो किरोध ओरूं वढ़ग्यो। वीं कनै पड़ियोड़ी तीखी सळाका उठा'र महावीर रै कानां में आरपार ठोक दीवी। इण सळाका-छेदण सूं महावीर नै घणी वेदना हुई। पण ईंण परीसह नै वी सांत भाव सूं सहन करतार्‌या।

छम्माणि गांव सूं विहार कर'र महावीर मध्यम पावा पधारिया। अठा सूं भिक्षा खातर घूमता-घामता सिद्धारथ नामक वणिक रै घरै आया। इण वगत सिद्धारथ रो मित्र खरक वैद्य पण अठै हो। प्रभु नै आया जाण खरक वैद्य वां नै वन्दना करी। वीं देख्यो कै महावीर रो चेहरो अपार तेज सूं चमकर्‌यो है पण आंख्यां में गहरी वेदना झळकै। खरक भांपग्यो कै भगवान रै सरीर में सळाका चूभ री है। आहार लेवती वगत वीं भगवान रै सरीर नै देखियो। वी नै झट ठा पड़गो कै प्रभु रै कानां में किणी कीला ठोकिया है।

दोन्यूं मित्र प्रभु सूं रुकण सारु अरज करी पण महावीर रुक्या कोनी। वी पाछा गांव रै बा'रै जाय ध्यान में लीन हुयग्या।

सिद्धारथ अर खरक दवा लेय महावीर जठै ध्यानमगन हा, वठै गया। वठै पोंच'र वां देख्यो कै असह्य वेदना हुयां पाण भी महावीर सांत भाव सूं ध्यान में लीन है। खरक संडासी सूं सळाका खेंच'र बारै काढ़ी। सळाका रै सागै लोही री धारा वैवण लागी। साधक जीवन री आ आखरी वेदना ही। कानां री सळाका बा'रै निकलण सूं महावीर बाहरी दुखां सूं ईज मुक्त नीं हुया। अबै वी साधना रै इत्ती ऊंचै सिखर पर चढ़ग्या हा कै वी सदा सर्वदा खातर आन्तरिक दुखां सूं भी मुक्त हुयग्या।

महावीर री तपस्या :

छद्मस्थकाळ रै साढ़ै बारा बरसां रै लम्बे समय में महावीर तीन सौ उनचास दिनां इज आहार ग्रहण करियो। बाकी रा दिनां में बिगर अन्न-पाणी लियां वी कठोर तपस्या करता रया। महावीर री आ तपस्या सब तीर्थंकरां सूं घणी कठोर अर बेसी ही। इण री तालिका इण भांत है—

छह मासिक तप—१	(१८० दिनां रो)
पांच दिन कम छह मासिक तप—२	(१७५ दिनां रो)
चातुर्मासिक तप—९	(१२० दिनां रो एक तप)
तीन मासिक तप—२	(९० दिनां रो एक तप)
सार्ध द्विमासिक तप—२	(७५ दिनां रो एक तप)
द्विमासिक तप—६	(६० दिनां रो एक तप)
सार्ध मासिक तप—२	(४५ दिनां रो एक तप)
मासिक तप—१२	(३० दिनां रो एक तप)
पाक्षिक तप—७२	(१५ दिनां रो एक तप)
भद्र प्रतिमा—१२	(२ दिनां रो एक तप)
महाभद्र प्रतिमा—१	(४ दिनां रो एक तप)
सर्वतोभद्र प्रतिमा—१	(१० दिनां रो एक तप)

सोलह दिनां रो तप—१
अष्टम भक्त तप—१२ (३० दिनां रो एक तप)
षष्ट भक्त तप—२२९ (२ दिनां रो एक तप)

इणरै अलावा महावीर दसम भक्त (चार दिन रो उपवास) आदि घणी तपस्यावां कीवी। वां री तपस्या निरजळ (विगर जळ री) हुवती, अर ध्यान साधना री उणमें खासियत रैवती।

मूल्यांकन :

भगवान महावीर रै साधना रो ओ लम्बो समय वां री अग्नि परीक्षा रो कठोर समय हो। साढ़ा बारा बरसां में वांकी सहनशक्ति, समता, अहिंसा, करुणा अर ध्यानलीनता री अंड़ी कठोर परीक्षावां हुई कै वां री कल्पना सूं इज मन थर-थर कांपवा लाग जावै। साधक जीवन में महावीर नै जं उपसर्ग मिलिया वी एक तरफी हा। महावीर उणां रो कांई प्रतिकार नी कियो। यूं तो किरोध सूं किरोध री अर अहङ्कार सूं अहङ्कार री टक्कर हुवै, पण श्रमण महावीर तो सब विकारां सूं अळगा हा, मुक्त हा। वां किरोध नै क्षमा सूं अर अहङ्कार नै समभाव सूं जीतियो।

८ | केवलीचर्या

केवलज्ञान :

महावीर री साधना रै तैरमे वरस रो सातवो महीनो हो। वैसाख सुद दसमी रो चौथो पहर। महावीर जंभिय ग्राम रै बा'रै ऋजुवालुका नदी रै किनारे स्यामाक नाम रै गाथापति रै खेत में साळ रुंख रै हेटै ध्यानमगन हा। वांकै दो दिनां रो निजळ उपवास हो। इणीज ध्यान मुद्रा में भगवान नै केळवज्ञान री प्राप्ति हुयी। अबै वी प्रत्यक्ष ज्ञानी वणग्या। सगळा लोक रै जीवां-अजीवां री सब पर्यायां नै देखवा अर जाणवा री खमता वांमें आयगी।

महावीर री केवळज्ञान सूं पैलां री साधना आतमकल्याण री साधना ही। अबै लोककल्याण री भावना वांकै मन में आई। अबार तांई आतमदरसण खातर वी मूंन राख'र सूनी ठौड़ में ध्यान अर तप करता हा। अबै वांनै कठोर साधना रो फळ मिलग्यो हो। वांनै आतम साक्षात्कार हुयग्यो। अबै वी जातपांत रो भेदभाव मेट'र वासना अर दासता री वेड़िया सूं मिनखां नै मुक्त कर'र आजादी रो वातावरण देणो चावता हा। महावीर री अनन्त करुणा अर भाईचारा री भावना वांनै संसार रो कल्याण करण री प्रेरणा देय री ही।

ग्यारह गणधर

केवळज्ञान पाम्या पछै महावीर मध्यम पावा पधारिया। अठै आर्य सोमिल एक वहुत बड़ो यज्ञ रचियो। बड़ा-बड़ा पंडित यज्ञ में

आयोड़ा हा। यज्ञ रो सैं काम इन्द्रभूति जिसा वेदान्त पंडित रै हाथां में हो।

वैसाख सुदी ग्यारस रो मंगळ परभात हो। देवता एक बड़े समवसरण (सभागृह) री रचना करी॥[1] उण समवसरण में भगवान जनता नै उपदेश देणो सरू करियो। वांरी अमरत वाणी सुण सैं जण हरख अर उमाव सूं भरग्या। महावीर री वाणी सुणवा खातर आकास मारग सूं देवगण भी आया हा। आ देख इन्द्रभूति गौतम नै आपणी विद्वता पर आंच आवती सी लागी। महावीर नै उणीज नगरी में आया जाण वां प्रभु रै अलौकिक ज्ञान री परख करवा अर सास्त्र ज्ञान में वांनै हरावण रै भाव सूं उण समवसरण में आया। वांरै सागै पांच सौ चेला अर बीजा पंडित पण हा।

इन्द्रभूति गौतम जिण समय समवसरण में पहुंचिया, वांरै मन में महावीर सूं बदळो लेवण री भावना उमड़ री ही। वां उठै पौंच'र महावीर कांनो देखियो। वांनै लागौ कै महावीर री आंख्यां सूं प्रेम अर मित्रता री अमरत बरखा वैयरी है।

इन्द्रभूति नै आयता देख महावीर बोलिया—गौतम ! थां आयग्या !

गौतम नै लाग्यो—महावीर री वाणी में प्रेम, अपणायत अर मित्रता रो भाव है। वांरै मन में उठी बदळै री भावना सांत ह्वैयगी। महावीर रै मूंडा सूं आपणो खुदरो नाम सुण गौतम नै घणो अचम्भो हुयो। वी सोचण लाग्या—म्हारी ज्ञान री चरचा सगळी जगां है, ईं खातर महावीर म्हारै नाम जाणता वेला। पण जठा तांई म्हारै

---

१ दिगम्बर परम्परा मुजब भगवान महावीर री पैली देसना राजगृह रै विपुलाचळ पर सावण वदी एकम रै दिन हुई।

मन में उठयोड़ा सवालां रा जवाब वी नीं देला, वठा तांई म्हूं अणा नै सर्वज्ञ नी मानूंला।

गौतम रै मन री आ भावना जाण महावीर बोलिया—आयुस्मान गौतम ! थांनै आतमा रै अस्तित्व पर संका है। थां सोच-रया हो कै आतमा (जीव) नाम रो कोई तत्त्व है या नीं ? गौतम आतमा रो अस्तित्व है। वा आ आंख्यां सूं कोनी देखी जा सकै। आतमा इन्द्रिय ज्ञान सूं परै अनुभव री वस्तु है। महावीर कैवता जायर्‌या हा—इन्द्रभूति ! तत्त्व नै तर्क सूं समझो, अनुभव सूं जाणो अर हरदय सूं वीनै मंजूर करो। थां खुद विद्वान हो । थांनै वत्तो कैवण री जरूरत कोनी।

महावीर रा प्रेम भर्‌या सबद सुण इन्द्रभूति री सै संकावां मिटगी। वांरो अहंकार गळग्यो। वी विनय भाव सूं कैवण लाग्या—भगवन् ! आज म्हारै भरम रा सैं आवरण दूर व्हैग्या। आप म्हनै सांचो रास्तो बतावण आळा हो। म्हूं आज सूं आपनै म्हारा गुरु मानूं हूं। म्हनै आप रै सरणां में राखो अर आतम साक्षात्कार करण रो गैलो बतावो। ज्ञान रा प्यासा, सांच रा इच्छुक इन्द्रभूति महावीर रा शिष्य बणग्या। वांरै सागै वांरा पांच सौ चेला भी महावीर रै चरणां में दीक्षा ग्रहण करी।

इन्द्रभूति गौतम रै दीक्षित होणै रा समीचार बिजळी री दाईं सब ठौड़ फैलग्या। सोमिल रै यज्ञ में तहळको मचग्यो। वेदान्त पंडित अग्निभूति अर वायुभूति पण महावीर नै आपणै ज्ञानबळ सूं पराजित करण री भावना सूं भगवान रै कनै आया, पण नेड़े आवतां-आवतां वांरो अहंकार चूर-चूर व्हैग्यो। प्रभु महावीर सूं आपणी संकावां रो समाधान पा'र वै भी भगवान रा शिष्य बणग्या। शिष्य इण भांत आर्य व्यक्त, सुधर्मा, मंडित, मौर्यपुत्र, अकम्पित, अचळाभ्रता, मेतार्य अर प्रभास जिसा पंडित महावीर रै चरणां में दीक्षा लीवी। महावीर रा अै पैला ग्यारह शिष्य गणधर कहीजै।

धरम संघ री थरपणा :

मध्यम पावा री पैली धरम सभा मांय ईज इग्यारे बड़ा बड़ा विद्वान अर उणारा चार हजार चार सौ शिष्य, भगवान महावीर रै कनै प्रव्रजित हुया। आ एक वड़ी इचरजकारी घटना ही। इण भांत भगवान महावीर रै उपदेशां सूं प्रभावित हुयर कंई राजा-महाराजा, सेठ-साहूकार, अर वोजा घणाई लोग-लुगाई महावीर रा शिष्य वणिया। भगवान मिनखां नै श्रुत धर्म अर चारित्र धर्म री सीख दे'यर साधु, साध्वी अर श्रावक-श्राविका रूप चतुर्विध संघ री थरपणा करी ।

इण व्यवस्था नै प्रभु दो भागां में वांटी। एक पूरो त्यागी वर्ग अर दूजो आंशिक त्यागी वर्ग। पूरो त्याग करणिया साधु अर साध्वियां रो न्यारो-न्यारो सघ वणायो। इणीज भांत आंशिक त्यागियां मांय भी श्रावक अर श्राविका रो न्यारो-न्यारो संघ कायम कियो। घरवार छोड़'र पांच महाव्रतां रा पाळण करणिया नर-नारी श्रमण अर श्रमणी कैवाया अर गृहस्थी में रैय'र वारा अणुव्रतां रा पाळण करणिया नर-नारी श्रावक अर श्राविका रै रूप में भगवान रै धर्म संघ में भेळा हुया।

श्रमण संघ री शिक्षा-दीक्षा, व्यवस्था अर अनुशासन री देखभाळ रो भार गणधरां रै जिम्मै रहियो। श्रमणी संघ रो भार आर्या चंदणा नै सूंप्यो गयो। वा छतीस हजार साध्वियां री प्रमुख ही।

महावीर रै धर्म शासन में जाति, पद, अधिकार या उमर सूं कोई साधु वड़ो नीं मानीजतो। उण रै बड़प्पन रो कारण उण री साधना मानीजती। महावीर रै श्रमण संच में राजा, राजकुमार, ब्राह्मण, वाणिया, सूद्र, चांडाळ आदि सगळी जातियां रा लोग भेळा हा। संघ में सवरै सागै समता रो व्यवहार हो। जात-पांत सूं कोई ऊंचो-नीचो नी मान्यो जावतो।

प्रभु महावीर रै शासनकाळ में मुनिगण स्वेच्छा सूं नियम, धरम री पाळणा करता हा। संघ व्यवस्था में विनय, सरळता अर समानता ही। सै श्रमण गुरु री आज्ञा अर अनुशासन में चालता हा। साधना री दृष्टि सूं धरम संघ में तीन भांत रा श्रमण हा—

१ प्रत्येक बुद्ध :—अै श्रमण सरू सूं ई संघ री मरजादा सूं अळगा रैय'र धरम साधना करता हा।

२. स्थविरकल्पी :—अै श्रमण संघ री मरजादा अर अनुशासन में रैय'र साधना करता।

३. जिनकल्पी :—अै श्रमण किणी खास साधना पद्धति नै अपणा'र संघ री मरजादा सूं अळगा रैय'र तपस्या आदि करता।

प्रत्येक बुद्ध अर जिनकल्पी साधु स्वतंत्र रैवता। इणां नै किणी रै अनुशासन री जरूरत नीं ही। स्थविरकल्पी साधुवां खातर धरम संघ में नीचे मुजब सात पदां री व्यवस्था ही :—

१. आचार्य—आचार विधि री सीख देण आळा।

२. उपाध्याय—श्रुत-शास्त्र रो अभ्यास कराण आळा।

३. स्थविर—वय, दीक्षा अर श्रुत-ज्ञान,में वत्ता जाणकार।

४. प्रवर्तक—आज्ञा, अनुशासन री प्रवृत्ति कराण आळा।

५. गणी—गण री व्यवस्था करण आळा।

६. गणधर—गण रो पूरो भार संभाळणिया।

७. गणावच्छेदक संघ री संग्रह-निग्रह व्यवस्था रा जाणकार।

अै सगळा पदाधिकारी संघीय जीवण में शिक्षा, साधना, आचार-मरजादा, सेवा, धर्म प्रचार, विहार जिसी व्यवस्थावां नै

सम्भाळता। अनुशासन रै नाम पर किणीरी भावनावां अर स्वतंत्रता रो लोप बठै नी हुवतो। सेवा करण आळा या आज्ञा रो पाळण करणिया साधु यूं नीं सोचता कै म्हानै ओ काम जबरन करण पड़्यो है। सै श्रमण आतमीय भाव सूं आपूआप सेवा करता अर आज्ञा रो पाळण करता।

केवलीचर्या रो पैलो बरस

धरम संघ री थरपणा कर, महावीर राजगृह रै गुणसील चैत्य में आपणै साधु परवार समेत आय ठहरिया। आर्या चन्दनबाळा अर ग्यारह बड़ा-बड़ा विद्वान पंडितां रै श्रमण दीक्षा अंगीकार करण रै समांचारां सूं लोगां में तहळको मचग्यो अर धर्म रै प्रति वांरी आस्था जागी। महावीर रै पधारण री खबर सुण राजा श्रेणिक, आपणै राजपरिवार समेत प्रभु-दरसण करण नैं आया। महावीर रा उपदेस सुण राजा श्रेणिक समकित लीवी अर राजकुंवर अभयकुमार श्रावक धर्म अंगीकार करियो।

मेघकुंवर नै आतमबोध :

श्रेणिक पुत्र मेघकुंवर पण भगवान् महावीर रै दरसण खातर आया। महावीर रो उपदेस सुण मेघकुंवर रो मन भोग सूं योग कांनी मुड़ग्यो। वां नै आपणो जीवन सफळ बणावण री कळा प्रभु सूं मिलगी। मेघकुंवर भगवान महावीर रै चरणां में वंदना कर'र बोल्या—भगवन् ! म्हारी सोई आतमा जागगी है। अबै म्हूं पण दीक्षा लेय नै साधना रै ईं मारग पर आगे बढ़णो चाऊं। प्रभु ! म्हनै दीक्षा देवो।

मेघकुंवर री भावना देख भगवान् बोल्या—देवानुप्रिय। जिण मारग पर चालण में थारी आतमा नै सुख मिलै, उण मारग पर बढ़ण में जेज मत कर।

प्रभु महावीर री आज्ञा पाय मेघकुंवर माता–पिता कनै गया अर वांकै सामै आपणै मन री (श्रमण वणण री) इच्छा परगट करी। पुत्र मेघ रा सबद सुण पिता श्रेणिक अर मां धारिणी री आँख्यां भर आई। पण माता–पिता रो मोह मेघ नै साधना रै मारग पर बढ़ण सूं रोक नीं सक्यो। मेघ कुंवर रै श्रमण बणण रो अटळ निश्चय जाण माता धारिणी आपणी आखरी इच्छा परगट करतां बोली –बेटा! म्हूं थनै राजसिंहासण पर बैठ्यो देखणो चाऊं। थारै जिस्या लायक बेटा नै पाय म्हूं राजमाता रो गोरवशाली पद पावणो चाऊं। तू म्हारी आ मनसा पूरण कर, भलेइ एक दन खातर ई तूं राजसिंहासन पर बैठ।

मां रा प्रेम भरिया करुण सबद सुण मेघकुंवर एक दिन खातर राजसिंहासण पर बैठ'र लोगां नै सीख दी कै आ जिंदगानी भी एक दिन रो राज है। इण राज री सफळता भोग अर वैभव में कोनी। ईं री सफळता योग अर साधना में ईज है।

दूजै दिन मेघकुंवर संसार रा सगळा ऐस आराम छोड़'र महावीर रा चरणां में जाय दीक्षा लीवी। दीक्षा लियां पछै दिन तो बीतग्यो पण रात पड़ियां, दीक्षा मांय सत्रसूं छोटा हुवण रै कारण, मेघकुंवर नै सैं मुनियां रै लारै दरवाजा रै कनै सोवण री ठोड़ मिली। सवांरै लारली जगां में सोणै सूं मेघकुंवर नै नींद नीं आई। अंधारा में ध्यान आदि खातर बा'रै आवता जावता मुनियां रा पग कदेई वणां रै हाथां पै लागता तो कदेई पगां पर। ईं कारण मेघ मुनि नै रोस आयग्यो। वी सोचण लाग्या-म्हूं राजकुंवर हो, महलां में म्हारो कितरो आव-आदर हो। पण अठै म्हारो ओ अपमान? महलां में म्हूं मखमळ रा गादी-तकिया पर सूवतो हो, पण अठै कड़ी जमीन पर सूवणो पड़ै। गादी-तकिया तो ठीक पण बीछावणोई पूरो कोनी। म्हारै सोवण रा कमरा में कितरी शान्ति ही अर अठै कितरी भीड़। अठै तो म्हनै सवरी

ठोकरां खावणी पड़री है। सांचाई साधु रो जीवन घणो कठोर है। म्हूं तो इसो जीवन नी जी सकूंला। कांई सारी रातां जागतोई रेवूंला? इण उधेड़बुन में मेघकुंवर नै रात भर नींद नीं आई। वां निश्चय करियो कै परभात व्हैताईं म्हूं भगवान महावीर नै सैं वातां अरज कर पाछो गिरस्त बण जाऊंला।

परभात व्हैताईं मेघकुंवर महावीर कनै गया। अन्तरजामी महावीर मेघ री मन री पीड़ा समझग्या हा। वां फरमायो–मेघ! थोड़ा सा कष्टां सूं दुखी व्हैइनै आगै वढ़या चरण पाछा पलटणा काईं ठीक है? छणिक वेदनावां सूं दुखी होय तूं उजाळे सूं अंधारा में भटकणो चावै। तूं याद कर आपणैं वीत्योड़े भव नै जद पसु जूंण (हाथी री जूंण) में तूं घणा कष्ट भोग्या हा। उण पसु जूंण में थोड़ी सहन शक्ति रै कारण ईज थनै पाछो ओ मिनखजमारो मिल्यो है। दुरळभ मिनखजमारो पायनै तूं क्यूं कायर वणै है?

महावीर री वाणी सुणंता–सुणंता मेघ नै जाति समरण ज्ञान व्हैग्यो। वींनै आपणैं पूरव जनम री घटनावां एक–एक कर निजर आवा लागी। वींनै याद आयो–वो हाथी री जूंण में रूप अर बळ रो धणी हो। ईं खातर वो पूरा हस्तिमण्डळ रो नायक हो। एक बार अचाणचक जंगळ में लाय लागी। सैं पशु–पक्षी आपणी रक्षाखातर भाग'र वै एक मैदान में भेळा हुया। ईं मुसीवतरी घड़ी में ना'र, हिरण, लोमड़ी अर खरगोस जिसा जिनावर आपसी वैर भाव भूलग्या हा। आखो मैदान जिनावरां सूं खचाखच भरग्यो। पग धरवा री जगां नीं हो। उण वगत वीं हाथी खाज खुजावा ताईं एक पग ऊंचो करियो। इतरा में एक खरगोस उण रा पग हेटै रक्षा ताईं आ'र वैठग्यो। हाथी देख्यो कै म्हूं पग धर दूंला तो ओ खरगोस मर जावेला। ईं कारण वीं उठायोड़ो पग नीचे नीं मेलियो अर तीन पगां पर दो दिन–रात ऊभो रयो। तीजै दिन लाय सांत हुवण पर खरगोस वठा सूं दूजी ठौड़ चल्यो ग्यो। दजा जिनावर

सौ आपणैं-आपणैं गैरे लाग्या। हाथी खरगोस नैं गयो देख आपणो पग नींचे टिकायो। सरीर रो संतुलन नीं संभाळ सकणै रै कारण वो उणी माथै पड़ग्यो अर मरग्यो। आपणो प्राण देर भी वीं हाथी खरगोस री रक्षा करी।

प्रभु जूंण में आपणी इसी कष्ट सहिष्णुता अर दया भावना नैं याद कर'र मेघकुंवर रो हिरदौ नूंवैं प्रकास अर नूंवी चेतना सूं भरग्यो। वीं प्रभु रा चरणां में माथो टिकाय दियो अर कयौ-प्रभु! म्हनैं माफ करो। अवैं म्हूं अंधारा सुं ऊजाळा में आयग्यो। आपणी भूल अर अहम् पर म्हनैं पछतावौ है।

इण भांत मेघकुंवर रै टूटतै मनोबळ नैं थाम'र महावीर उणनैं आतम कल्याण रै मारग पर वढ़ण री प्रेरणा दीवी।

नंदीसेण री प्रतिज्ञा :

राजगृही में भगवान महावीर रै कनै जद मेघकुंवर श्रमण जीवन अंगीकार करियो तो राजकुंवर नंदीसेण रै मन में पण साधना रै मारग पर बढ़ण री इच्छा जागी। नन्दीसेण आपणैं पिता महाराजा श्रेणिक रै सामै आ भावना परगट करी, तद श्रेणिक कयौ-मेघकुंवर रै देखादेख तूं दीक्षा लेवण रो विचार मत कर। दीक्षा मारग में रैयर मन नैं साध। थारी प्रकृति भोग विळास री है। तूं पैली उणनैं सांत कर, पछै दीक्षा ले।

कुंवर नंदीसेण कयौ-म्हूं तप अर ध्यान सूं आपणी प्रकृति बदळ दूंला। इणीज विसवास रै सागै वीं भगवान महावीर कनै दीक्षा ग्रहण करी। दीक्षा लेर नंदीसेण कठोर तपस्या करणी सरू करी। तप साधना रै दिव्य प्रभाव सूं वांनै घणी चमत्कारी सक्तियां (लब्धियां) प्राप्त हुई।

एकदा वेळै रै पारणै रैं दिन वी गोचरी खातर एक गणिका रैं घरै गया। दरवाजै पर जावताईं मुनि बोल्या—धरम लाभ। मुनि रैं धरम लाभ री बात सुण गणिका हंस पड़ी। अर बोली—मुनिवर ! अठै तो धरम लाभ नीं अरथ लाभ री चावना है। गणिका रो हंसणो मुनि नै खारो लाग्यो। वणां वठैई आपणी चमत्कारी शक्ति सूं रतनां रो ढेर कर दियो अर कयो-ले ! ओ अरथलाभ ! सामै रतनां रो ढेर लाग्यो देख गणिका मुनि रैं पाछै पड़गी अर कैवण लागी—प्राणनाथ ! म्हनै छोड़'र कठै जाओ ? आप म्हारै सागै रैवो। आपरै वियोग में म्हूं प्राण छोड़ दूंली। गणिका रै वार-वार कैवण सूं नंदीसेण वठैइ रुकग्या। वठैं रैवतां थका नंदीसेण आ प्रतिज्ञा करीकै नित हमेस जठा ताईं म्हूं दस मिनखां नैं धरम रो उपदेश नीं देऊंला वठा ताईं भोजन ग्रहण नीं करुंला, अर जीं दिन म्हूं दस मिनखाँ नै प्रतिवोध नीं दे सकूंला ऊं दिन पाछो प्रभु रै चरणां में चल्यो जाऊंला।

गणिका रै सागै रैवतां दस मिनखां नै नंदीसेण रोज उपदेस देवता अर वांनै दीक्षा खातर प्रभु रै चरणां में मोकळता, जद जा'र वी रसोई जीमता। एक दिन नौ मिनखां नै उपदेस देय नै दीक्षा खातर तैयार कर दिया, पण दसवों मिनख उपदेस सुण'र भी दीक्षा लैण खातर राजी नी हुयो। गणिका वार-वार नंदीसेण नै रसोई आरोगवा खातर बुलाय री ही, पण आज वां को संकल्प पूरो नीं होर्‌यो हो। ईं खातर नंदीसेण रसोई नीं जीमर्‌या हा। जद दसवों आदमी कोई राजी नीं हुयो तद दृढ़ संकल्पी नंदीसेण खुद उठ'र प्रभु रै चरणां में चल्याग्या अर कठोर तपस्या कर'र आतम सुद्धि करण लाग्या।

इण भांत नंदीसेण नै पाछो आपणो चेलो वणाय महावीर सांची सहानुभूति अर वत्सल भाव रो परिचय दियो। महावीर रो कैवणो हो—घिरणा पाप सूं करणी चाइजै, पापी सूं नीं।

दूजो वरस :

ऋषभदत्त अर देवानन्दा नै प्रतिबोध :

गांव-गांव विचरण करता हुया भगवान महावीर ब्राह्मण कुण्ड ग्राम में पधार'र बहुसाळ चैत्य में बिराजिया। भगवान रै आवण री बात सगळी जगां फैलगी ही। पंडित ऋषभदत्त देवानन्दा ब्राह्मणी रै सागै प्रभु रै दरसण खातर आया।

भगवान नै देखताईं देवानन्दा रै मन में प्रेम उमड़ आयो। खुसी सूं वींको मन हरखियो। कंठ गळगळो सो व्हैग्यो। हिवड़ो हेत सूं भग्यो। वात्सल्य भाव रै वेग सूं बोबा सूं दूध री धारा बेवण लागी। आ अनोखी घटना देख गणधर गौतम भगवान महावीर सूं ईंको कारण पूछियो। भगवान बोल्या—गौतम! आ देवानन्दा ब्राह्मणी म्हारी माता है। त्रिशला क्षत्रियाणी रै गरभ सूं जनम लेवण रै पैलां म्हैं बयासी रातां माता देवानन्दा रै गरभ में पूरी करी। भगवान री बात सुण सारी सभा चकित रैयगी। ऋषभदत्त अर देवानन्दा दोन्यूं नै घणो अचंभो हुयो। इसा भाग्यशाली पुत्र री मां हुवण री बात सुण देवानन्दा हरखी अर पछै पुत्र रा बतायोड़ा मारग पर चालण रो संकल्प करियो अर दीक्षा लेय'र ऋषभदत्त गणधरां रै अर देवानन्दा चन्दनबाळा रै नेश्राय में तप साधना करी।

प्रियदर्शना अर जमालि री दीक्षा :

ब्राह्मणकुण्ड सूं प्रभु क्षत्रियकुण्ड ग्राम (महावीर री जनम भूमि) पधारिया। प्रभु रै आवण री खबर सुण आखो गाम हरखियो। महावीर री पुत्री प्रियदर्शना अर जवांई जमालि पण भगवान रा दरसण नै आया अर वांकी इमरत वाणी सुणी। भगवान रो उपदेश सुणता ईं जमालि नै संसार सूं वैराग्य हुयग्यो। मां-बाप रो मोह, आठ ईं राणियां रो प्यार, अर राजलिछमी रो लोभ

जमालि नै वैराग्य पथ पर बढण सूं कोनो रोक सक्या। वी पांच सौ साथियां रै सागै महावीर रै चरणां में प्रव्रजित हुया। राणी प्रिय दर्शना (महावीर री बेटी) पण पति नै वैराग्य रै मारग पर बढ़ता देख संजम लियो।

महावीर रा उपदेस घणा प्रभावी हा। सुणतां पांण लोगां नै आपैइ ई संसार री नश्वरता रो बोध व्है जावतो। भगवान मिनखां नै दीक्षा लेवण खातर वाध्य नीं करता अर नीं कीनै दीक्षा सूं स्वर्ग में जावण रो लोभ देवता। वी तो सहज भाव सूं जीवन री सांची स्थिति री ओळखाण करावता। वां की बात सुण लोग कैवा लागता—भगवन! आपरी वाणी सांची है, आतमहित करण आळी है। म्हां आपरै बतायोड़ा मारग पर चालण री इच्छा राखां।

तीजो बरस :

जयन्ती रा सवाल :

वैसाळी सूं विहार कर भगवान कौसाम्बी पधारिया अर अठै चन्द्रावतरण चैत्य में विराजमान हुया। भगवान रै पधारवा रा समीचार सुण वैसाळी गणराज चेटक री पुत्री मृगावती, उण रो पुत्र उदायन अर उदायन री भुआ जयन्ती महावीर रा उपदेस सुणण खातर आया। जयन्ती भगवान सूं घणाइ सवाल पूछिया, जियां—

१. जयन्ती पूछियो—भगवन्! जीव हळको अर भारी कियां हुवै? प्रभु कह्यो—पाप करम करण सूं जीव भारी अर पापां री निवृत्ति सूं जीव हळको हुवै।

२. जयन्ती पूछियो—भगवन्! मोक्ष री योग्यता जीव में सुभाव सूं हुवै कै परिणाम सूं आवै?

भगवान बोल्या—मोक्ष री योग्यता सुभाव सूं हुवै, परिणाम सूं नीं।

३. जयन्ती पूछियो—भगवन् ! जीव सूतो आछो के जागतो ?

भगवान बोल्या—कोई जीव सूतो आछो अर कोई जागतो। जो जीव अधरमी है, अधरम रो प्रचार करै, वींरो सूवणो आछो, जिसूं वींका पाप करम वत्ता नी वधै। पण जो जीव धरम रो आचार-विचार राखै, धरम रो प्रचार करै, वींको जागणो आछो। वींकै जागणै सूं खुद रो अर बीजां रो हित हुवै।

इण भांत जयन्ती भगवान सूं घणाई तात्विक सवाल पूछिया। वांका संतोष जनक उत्तर सुण जयन्ती नै विराग हुयग्यो अर वीं संजम ग्रहण करियो।

कौसाम्बी सूं विहार कर'र भगवान सावस्ती पधारिया। अठै सुमनोभद्र अर सुप्रतिष्ठ दीक्षा लीवी। अठा सूं विहार कर'र महावीर वाणिज गांव पधारिया। आनन्द गाथापति नै श्रावक धरम रो उपदेस दियो अर अठैइज चौमासो पूरो कियो।

चौथो बरस :

सालिभद्र नै वैराग :

वाणिज ग्राम सूं विहार कर'र मगध कांनी होता हुया भगवान राजगृही पधारिया। अठै गोभद्र नाम रो एक सेठ हो। उण री पत्नी रो नाम भद्रा हो। उणां रो पुत्र सालिभद्र घणो रूपाळो अर सुकुमार हो। बत्तीस रूपाळी राणियां रै सागै उण रो व्याव हुयो। सालिभद्र रा मां-बाप कनै अपार धन संपत्ति ही। ईं कारण वो दिन-रात भोग-विळास अर ऐस आराम में डूब्यो रैवतो।

एकदा राजगृही में रतन कम्बळ रा वैपारी रतन कम्बळ वेचण खातर आयाहा। कम्बळ घणा मंहगा हा। इण कारण राजा श्रेणिक पण कम्बळ खरीदण सूं इनकारी करदी। कम्बळ री विकरी नीं हुवण सूं वैपारी दुखी हुया। सेठाणी भद्रा नै जद वैपारियां रै आवण री ठा

पड़ी तो वीं मूंडै मांग्यो धन दैय'र उणा सूं सगळा रतन कम्बळ खरीद लिया। कम्बळ कुल मिला'र सोला हा। ईं खातर एक-एक कम्बळ रा दो-दो टुकड़ा कर'र भद्रा आपणी वहुआं नै पग पूंछवा खातर दे दिया।

राजा श्रेणिक नै जद आठा पड़ी कै सगळा रतन कम्बळ सेठाणी भद्रा खरीद लिया अर उणां रा टुकड़ा कर'र वहुआं नै पग पूंछवा खातर दे दिया तो वांनै घणो अचरज हुयो। उणां रै मन में जिज्ञासा हुई कै इसी सुकुमार राणियां रो पति कितरो कोमळ व्हैला। इसा सेठ-पुत्र सूं जरूर मिलणो चाइजै। आ सोच'र राजा श्रेणिक भद्रा नै सदेसो मोकल्यो कै-म्हूं सालिभद्र सूं मिलणो चाऊं।

भद्रा राजा रो संदेसो सुण राजी हुई। वीं राजा नै सपरिवार आपणै महलां तेड़िया। राजा सपरिवार उठै पधारिया। सेठाणी भद्रा राजा रो खूब स्वागत-सत्कार करियो। सेठाणी रै महल री सुन्दरता अर साही ठाठ-वाठ देख राजा दंग रैगयो।

सालिभद्र कदैई महलां सूं नीचै नीं उतर्‌यो हो। आज राजा उण रै महलां पधारिया हा। ईं'ण खातर भद्रा वीनै राजा सूं मिलण खातर नीचो बुलायो। माता री बात सुण एक'र तो सालिभद्र नीचो आवण सूं नां कर दियो। पण भद्रा सालिभद्र नै समभावता कयो-आज आपणां स्वामी, आपणां नाथ पधारिया है। वी थांरै सूं मिलणो चावै है। तूं नीचो चाल'र उणा रा दरसण कर।

'आपणा स्वामी!' 'आपणा नाथ!' इसा सबद सालिभद्र पैली वार सुणिया हा। वो सोचवा लाग्यो-म्हूं इत री धन-सम्पदा रो मालिक हूं। म्हनै आज तांई किणी चीज रै अभाव रो अनुभव नी हुयो। फेरूं म्हारै ऊपर कोई दूजो स्वामी है, नाथ है अर म्हूं उण रै अधीन हूं। ईं पराधीनता री गैहरी ठेस सालिभद्र रै काळजा में लागी।

सालिभद्र राजा श्रेणिक सूं मिलण खातर नीचे आयो। राजपरिवार समेत राजा श्रेणिक सालिभद्र रै रूप अर वैभव ने देख राजी हुआ। पण सालिभद्र पर इण मुलाकात रो कांई असर नीं पड़ियो। वी अवै इसो जीवन जीवणा चावता हा जठै सांची स्वतंत्रता मिलै अर किणी री अधीनता नीं हुवै।

आतम कल्याण रै मारग पर बढ़ण री वांरै मन में भावना जागी। वां नै विषय सुखां सूं विरक्ति हुवण लागी। वी नित हमेस एक-एक राणी अर सुख-सेजां रो त्याग करण लागा।

सालिभद्र नै त्याग मारग पर चालतां देख उणांरी छोटी बहन सुभद्रा नै घणो दुख हुयो। सुभद्रा उणीज गांव रै धन्ना सेठ री पत्नी ही। एक दिन सुभद्रा नै उदास देख धन्ना सेठ उण नै उदासी रो कारण पूछियो। सुभद्रा बोली-म्हारो भाई सालिभद्र नित हमेस एक-एक पत्नी अर सुख-सामग्री रो त्याग कर भोग सूं योग कांनी बढ़ र्‌यो है। आ बात कैवतां-कैवतां सुभद्रा रै आंख्यां मांय आंसू आयग्या।

सुभद्रा री आंख्यां मांय आसूं देख धन्ना सेठ व्यंग्य सूं बोलिया-थारो भाई कायर है। एक-एक स्त्री रो बारी-बारी सूं त्याग करण आळो कदै साधुपणो नी लेय सकै। इसा कमजोर मनोबळ रो पुरुष वैराग रै मारग पर नीं चाल सकै।

धन्ना सेठ रा अै सबद सुण सुभद्रा पण व्यंग्य सूं बोली-नाथ! कैवणो सरळ है, करणो मुस्किल है। आप सूं तो एक भी पत्नी नीं छूटै?

सुभद्रा रा मजाक में कयोड़ा अै सबद धन्ना रै हिरदय में गेहरो असर करग्या। वीं बोलिया-लो, आज सूं म्हूं सगळी पत्नियां अर धन सम्पत्ति रो त्याग करूं अर आतम कल्याण खातर संजम मारग पर बढण रो निश्चय करूं।

धन्ना री विरक्ति रा भाव जांण परिवार रा सैं जणां वांनै भोग कांनी मुड़वा खातर घणा समझाया पर धन्ना जी किण री वात नीं मानी। अवैं वांरो मनोवळ घणो मजबूत हो। वी आपणै निर्णय पर सैंठा हा।

सालिभद्र (साला) अर धन्ना (बहनोई) दोन्यूं घर सूं निकळ'र महावीर कनै आया अर श्रमण धरम री दीक्षा अंगीकार करी। दोन्यूं श्रमण तपस्या करता हुया वैभारगिरि पर अनशन व्रत धारण कर काळ धरम पायो।

पांचमो बरस:

राजगृह रो चौमासो पूरो कर'र महावीर चम्पा पधारिया। अठै पूर्णभद्र जक्षायतन में विराजिया। प्रभु रै आवण रा समाचार सुण अठारा महाराजा दत्त सपरिवार दरसण खातर आया। प्रभु री वाणी सुण राजकुंवर महाचन्द्र श्रावक धर्म अंगीकार करियो अर थोड़ै समै पाछै राजसी ठाठ नैं छोड़'र श्रमण धर्म अंगीकार करियो।

उदायन रो क्षमाभाव :

राजगृह रो चौमासो पूरो कर महावीर चम्पा सूं होता हुया वीतभय नगर पधारिया। अठै महाप्रतापी राजा उदायन राज करतो हो। उदायन तापस परम्परा नैं मानवा आळो हो पण उणंरी पत्नी राणी प्रभावती (वैसाळी गणराज चेटक री पुत्री) निग्रन्थ धरम नैं मानवा आळी ही। उणरी प्रेरणा सूं राजा उदायन भी निग्रन्थ धरम नै मानवा लागो। निग्रन्थ धरम रै दया, समता, क्षमा जिसा आदर्शां सूं प्रभावित हुयर उदायन पण आपणै जीवन में उण आदर्शां नैं उतारण रो संकल्प करियो।

उदायन रै क्षमा भाव रो एक अनूठो उदाहरण मिलै। वीं अवन्ती रै चण्डप्रद्योत जिसा पराक्रमी राजा नैं पराजित कर वंदो

वणायो। ईंसूं उदायन री चारुंमेर धाक जमगी। उदायन बाहुबळ में इज वीर नीं हो वो ग्रातमबळ ग्रर क्षमाभाव में पण घणो पराक्रमी हो। जद पजूसण परव ग्रायो। वीं जेल में जाय बंदी चण्डप्रद्योत सूं ग्रापणैं ग्रपराधां री क्षमा मांगी। उदायन नै यूं क्षमायाचना करतां देख चण्डप्रद्योत कह्यो–म्हूं तो ग्रापरो कैदी हूं, ग्रपराधी हूं, पराधीन हूं। ग्रा किसी क्षमा ? किणी नै गुलाम ग्रर पराधीन वणार उणासूं क्षमा मांगणी क्षमा नीं, क्षमा भाव रो ग्रपमान है। चण्डप्रद्योत रा ग्रै सबद उदायन नै चुभग्या। वींरै हिरदै पर ग्रणारो तेज ग्रसर हुयो। वी सोचण लाग्या–सांचैई म्हूं चण्ड सूं ग्रसली क्षमा नीं मांग, क्षमा रो नाटक कर र्‌यो हूं। म्हूं विजयी हुयर ग्राज ग्रपराधी हूं उणनै बंदी वणार उणसूं माफी मांगणी सांचो क्षमा धरम कोनी। यूं सोच'र उदायन चण्डप्रद्योत नै कारागार सूं मुक्त कर दियो।

उदायन री इण दया ग्रर क्षमा भाव सूं चण्डप्रद्योत घणो राजी हुयो! इण घटना सूं उदायन रै क्षमा भाव ग्रर ग्राध्यात्मिक भावनावां री चरचां सगळी जगां हुवण लागी। भगवान महावीर पण उण री ग्रा वात जाणी।

एकदा राजा उदायन पौषधशाला में वैठो-वैठो विचार कर र्‌यो हो कै वी गांव ग्रर नगर धन्य है जठै प्रभु महावीर रा चरण पड़ै ग्रर वी लोग धन्य है जै उणारा दरसण कर वांकी ग्रमरत वाणी सुणैं। वो सोचर्‌यो हो कदाच भगवान महावीर वीतभय नगर पधारै तो म्हूं पण उणा रा दरसण कर ग्रापणो मिनख जमारो सफळ वणाऊं।

भगतां रै हिरदा री वात भगवान जाणैं। महावीर उदायन रै मन री भावना जाण ग्रापणैं शिष्य समुदाय सागै वीतभय नगर पधारिया। चम्पा सूं वीतभय नगर घणो ग्रळगो हो। मारग में

रेगिस्तान पड़तो हो। गरमी रा दिन हा। कोसां दूर ताईं वसती नीं ही। भूख अर तिस सूं साधुआं नै घणी परेसानी हुई। पण सैं तकलीफां उठा'र भी महावीर वीतभय नगरी पधारिया। उदायन प्रभु रा दरसण करिया। उणांरी अमरतवाणी सुणी। अवै वीनै राजकाज सूं मोह नीं र्‌यो। वी राजपाट त्याग'र मुनि बणण रो संकल्प लियो। वींरै अभीचि कुमार नाम रो पुत्र हो पण वीं राज रो भार उणनै नीं सूंप्यो। वीं मन में सोचियौ कै जिण राज नै बंधन समझ'र म्हूं उणरो त्याग कर र्‌यो हूं उण राज रै बंधन में म्हूं आपणां पुत्र नै क्यूं फंसाऊं? आ सोच वीं राज रो वारिस भाणेज केसी कुमार नै बणायो अर खुद महावीर कनै दीक्षा अंगीकार करी।

मुनि उदायन दीक्षा ले'र कठोर तपस्या करण लागा। विचरण करता हुया एकदा वी वीतभय नगर पधारिया। केसीकुमार रो मंत्री खोटा सुभाव रो हो। मुनि नै नगरी में आया जाण वीं राजा रा कान भरिया—महाराज! उदायन पाछा गृहस्थी बणर्‌या है। उणां री राज करण री मनसा है। वी आपनै दियोड़ो राज पाछो खोसणो चावै। ईं कारण मुनि वेस में ईज उणां रो काम तमाम कर देणो चाइजै। नीं रेवैला वांस अर नीं वाजेलो वांसुरी। राजा केसी मंत्री रै वहकावा में आयग्यो। एक दिन वां भिक्षा में मुनि उदायन नै जहर दे दियो। भोजन में जहर री ठा पड़ियां पाण भी वां नै नीं तो राजा पर किरोध आयो अर नीं ईर्ष्या हुई। वां समता भाव रै सागै समाधि मरण अंगीकार करियो।

छट्ठो बरस :

चुलनीपिता अर सुरादेव :

वाणिज गांव सूं विहार कर महावीर वाराणसी कांनी पधारिया। अठै कोष्टक चैत्य में विराजिया। चुलनीपिता अर सुरादेव वाराणसी रा नामी गृहस्थ हा। इणांरै कनै २४–२४ करोड़

सोनैया री सम्पत्ति अर गायाँ रा आठ-आठ गोकुळ हा । महावीर नै नगरी में आया जांण दोन्यू सपरिवार दरसण खातर गया । अठै प्रभु री धरम देसना सुण चुलनोपिता अर सुरादेव आपणी सम्पत्तिरी निश्चित मर्यादा कर'र श्रावक धर्म रा बांरह व्रत ग्रहण करिया ।

अरजुनमाळी रो प्रसंग :

बाराणसी सूं आलंभिया नगरी होता हुया महावीर राजगृही पधारिया । अठै अरजुन नाम रो एक माळी हो । नगर सूं बारै उणरो एक बहुत बड़ो रूपाळो बाग हो । उणीज बाग में उणरै कुळ देवता मुद्गरपाणि जक्ष रो पुराणो मिन्दर हो ।

रोज री भांत एक दा परभातै अरजुन आपणी पत्नी बंधुमती रै सागै फूल तोड़ण खातर बाग में आयो । उणरै सागै नगरी रा छह बदमास पण बाग में घुस आया । बन्धुमती रै रूप नै देख वी उण पर मोहित हुयग्या । वां लोगां अरजुन नै रस्सी सूं एक पेड़ रै बांध दियो अर उणरी पत्नी रै सागै बेजां बरताव करियो । दुष्ट लोगां रै इण अत्याचार नै देख अरजुन नै घणो किरोध आयो पण वो रस्सी सूं बंध्यो हुवण रै कारण लाचार हो । क्रोधावेस में आय वीं आपणै कुळदेवता मुद्गर पाणि जक्ष नै कोसणो सरु कर्‌यो । वो कैवा लागो-म्हूं थांणी बाळपणा सूं उपासना करतो आयो हूं । आज म्हूं मुसीबत में पड़यो पण थां म्हारी कांई मदद नीं करो । म्हारो ओ अपमान थां भाटा री मूरत दाईं ऊभा-ऊभा देखर्‌याहो । म्हनै लागै थांणा में अबै कांई सत नीं र्‌यो । अरजुन री आ क्रोध भरी पुकार सुण जक्ष अरजुन रै सरीर में बड़ग्यो । वींमें घणी ताकत आयगी । वीं बंध्योड़ी रस्सी तोड़ नाखी अर मुद्गर हाथ में ले'र विसयवासना में आंधा हुयोड़ा बदमासां अर आपणी पत्नी बंधुमती री खूब पिटाई करी । जिण सूं उणांरो प्राणांत हुयग्यो । पर फेरूं अरजुन रो किरोध सांत नीं हुयो । उणनै मिनखजात सूं इज नफरत हुयगी । वो जै मिनखां नै आपणी कांनी

आवतां देखतो उणां पर भूखा ना'र जियां टूट पड़तो। अरजुनमाळी रै इण आतंक सूं लोग उठी कर आणो-जाणो छोड़ दियो। राज री तरफ सूं अरजुन री कांनी आणै-जाणै पर प्रतिबंध लागग्यो।

इणीज समय भगवान महावीर राजगृह पधारिया। हजारां लोग महावीर रा दरसण करणा चावता हा। पण अरजुन माळी रै डर सूं किणी में उण ठौड़ जावण री हिम्मत नो ही। आखर एक सरधावान श्रवक सुदरसण हढ़ता रै सागै प्रभु दरसण खातर आगे कदम वढ़ायो। वो नगर सूं वा'रै आयो। चारुं कांनी सन्नाटो हो। एक अकेलै मिनख नै सामै आवतां देख अरजुन माळी आग बबूलो हुयग्यो। उणनै मारण खातर वो मुद्गर लैय उण ओर झपटियो। सुदरसण वीरी आ हरकत देख किंचित भी नीं डर्‌यो। वो प्रभु रो सुमरण कर ध्यान में सांत भाव सूं खड़ो हुयग्यो। पण ओ कांई ? अरजुन रो उठ्यो मुद्गर उठ्योई रैयग्यो। वीं सुदरसण नै मारण री घणी कोसिस करी, पण मुद्गर हिल्योई कोनी।

सुदरसण री हिम्मत अर धरम री मजबूती रै सामै अरजुन रो किरोध सांत हुयग्यो। वो उण रै चरणां में पड़ग्यो अर आपणं क्रूर करमां रो प्रायश्चित करण लागो।

अरजुन नै यूं पस्चाताप करतां देख सुदरसण बोलिया— अरजुन तूं घबरा मत। तूं साचैइ मिनख है, दानव कोनी। किणी कारण सूं थारै सरीर मांय राक्षसी प्रवृत्तियां हावी हुयगी है। अबै थारा मिनखपणो पाछो जागग्यो है। तूं म्हारै सागै चाल'र क्षमानिधि प्रभु महावीर रा दरसण कर। अरजुन सुदरसण रै सागै महावीर कनै आयो। प्रभु रा उपदेस सुण वींरी आंख्यां सूं पश्चाताप अर करुणा रा आंसूं वेवण लाग्या। वीं भगवान रै सामै सगळा पाप करमां रो प्रायश्चित कर मुनि धरम अंगीकार करियो।

सातमो वरस :

श्रेणिक री जिज्ञासा :

भगवान महावीर राजगृही में विराजर्या हा । एकदा श्रेणिक महावीर रै कनै बैठा हा । वीं समय एक देव कोढ़ी रो सरूप बणार आयो अर भगवान सूं बोल्यो-वेगा मरजो, पछै कोढ़ी राजा श्रेणिक कांनी मूंडो कर बोल्यो-जीवता रैवो अर अभयकुमार आड़ी देख'र बोल्यो-चावै जीवो, चावै मरो। आखिर में कालसोकरिक सूं बोल्यो-न मर, अर नीं जी ।

कोढ़ी रा इसा अंटसंट सबद सुण श्रेणिक नै रोस आयग्यो । राजा नै रोस में भरियो देख वीं को सेवक कोढ़ी नै मारबा खातर दौड़ियो पण कोढ़ी तो वठा सूं ओझल हुयग्यो ।

दूजै दिन श्रेणिक वीं कोढ़ी रा कयोड़ा सबदां रो अरथ भगवान महावीर सूं पूछयो । प्रभु बोल्या-राजन् ! वो कोढी नीं वो तो देवता हो। म्हनै मरण खातर कयो ईं को मतलब है कै म्हूं वेगो मोक्ष जासूं । म्हूं अठै देह-बन्धन में हूं । आगै म्हारी मुगति है । शाश्वत सुख है । थाणै जीवा खातर कयो-ईं रो मतलब है-थांरो आगळो भव नरक रो है । इण भव में जठा ताईं थां जीवोला वठां ताईं थांनै सुख है । नरक में थांनै दुख भोगणो पड़ेला। अभयकुमार आपणै धर्माचरण अर व्रत-नियमां री आराधना सूं अठै भी आछो सुखी जीवन जी र्यो है अर इनै आगै भी सुख है । ओ देव गति रो अधिकारी बणैला । कालसौकरिक रा दोन्यूं भव दुखमय है। इण रो नी जीणो आछो है अर नीं मरणो ।

आ सुण श्रेणिक पूछियो-भगवन् ! म्हूं किण उपाय सू नरक रा दुखां सूं बच सकूं ? भगवान बोल्या-जद कालसौकरिक सूं जीव-हत्या करणो छुड़वाय दे या कपिला ब्राह्मणी सूं दान दिलाय

दे या पूणिया श्रावक री एक सामायिक मोल ले सके, तो थांनै नरक गति सूं छुटकारो हुय सकै।

राजा श्रेणिक घणो कोसिसां करी पण नीं तो। कालसोकरिक कसाई हत्या करणी बंद करी, नीं कपिला ब्राह्मणी दान दियो अर नीं श्रेणिक पूणिया श्रावक री सामायिक खरीद सक्या। पण इण घटना सूं श्रेणिक नै सांसारिक सुखां सूं विरक्ति हुयगी। वीं संसार रो त्याग तो नीं कर सक्या पण वां लोगां नै त्याग मारग पर बढ़ण री प्रेरणा देवण खातर आ घोसणा कराई कै जो कोई श्रमण धर्म अंगीकार करेला म्हू वीं नै राज री तरफ सूं सब भांत री मदद देऊंला। ईं घोषणा सूं प्रभावित हुय'र घणा ई लोग दीक्षा लीवी।

आठमो बरस :

चण्डप्रद्योत नै प्रतिबोध :

राजगृही सूं आलंभिया नगरी होता हुया भगवान कौसाम्बी पधारिया। अठै महावीर युद्ध करण खातर आयोड़ा अवन्ती रा राजा चण्डप्रद्योत नै प्रतिबोध देय'र मृगावती नै शील-संकट सूं मुक्त करी।

चण्डप्रद्योत मृगावती रै रूप अर गुणां पर मुग्ध हुय'र वींनै आपणी पटराणी बणावणो चावतो हो। इण भावना सूं वीं आ'र कोसाम्बी रै चारुं कांनी घेरो डाल दियो। उण समय कौसाम्बी पर लगोलग विपत्तियां आय री ही। एक कांनी दुसमन धावो बोलर्या हा। दूजी कांनी राजा सतानीक परलोकवासी हुयग्या हा। राजकुंवर उदायन बाळक हो। राज रो सैं काम राणी मृगावती नै देखणो पड़तो। इण मुसीबत में शील धरम पर आंच आवती जाण राणी हिम्मत नीं हारी। वा क्षत्रियाणी ही। वीं में घणो साहस हो। वा आपणा प्राण देय नै भी धरम अर शील री रक्षा करणी जाणती ही।

संकट री घड़ी में वीं चतुराई सूं काम लियो। दूत लारै चंडप्रद्योत नै वीं संदेसो मोकल्यो कै आप जिण उद्देश्य सूं अठै पधारिया हो, उण रै अनुकूल समय कोनी। राजा रै देवलोक सूं सगळो राजपरिवार इण वगत दुखी है । आप अनुकूल समय देख'र पाछा आवो। राणी आपरी वात मान लैला।

ओ संदेसो सुण चंडप्रद्योत सोच्यो-राणी कठै जाण आळी तो है नीं। राजा री मृत्यु रो सोग खतम हुवण पर वा म्हारी वात मान लै ला । आ सोच चंडप्रद्योत बिगर युद्ध करियां अवंती जावण री त्यारियां करण लागो।

इणीज समय भगवान महावीर धरम देसना देता हुया कौसाम्बी पधारिया। मृगावती नै प्रभु रै आवण री ठा पड़ी तो वा उणां रा दरसण करण आई। चंडप्रद्योत पण भगवान रै समवसरण में देसना सुणवा आयो। प्रभु देसना दैय र्‌या हा—मिनख रो जीवन वेवती नदी रै जळ री दाईं अस्थिर अर चंचळ है। धन, दौलत, जोवन, सक्ति सब छणिक है । काम-भोग री इच्छावां अनन्त है। उणां सूं कदै तरपति नीं हुवै । काम वासना रै दळदळ में फंसियोड़ा जीवां री हमेस दुरगति हुवै। आपणी इच्छावां पर अंकुस राखण आळो मिनख इज सांसारिक दुखां सूं मुक्त हुय सकै।

प्रभु रै उपदेसां सूं प्रभावित हुय'र राणी मृगावती बोली— म्हारै दीक्षा लेवण रा भाव है। पण दीक्षा लेवण सूं पैलां म्हैं अठै आयोड़ा राजा चंडप्रद्योत सूं आपणै अपराध खातर माफी मांगू हूं। क्यूं कै शील धरम री रक्षा खातर इणा सूं छळ कपट रो विव-हार करियो अर चालाकी सूं काम लियो।

मृगावती री आ वात सुण चंडप्रद्योत लाजां मरग्यो। वीं रो हिरदय वदळग्यो । वो कैण लाग्यो—बैन ! म्हनै माफ़ करदे। थैं

म्हनै भुलावै में राख'र म्हारो मारग दरमण करियो। म्हनै पथ भ्रष्ट हुवण सूं बचायो। थारो ओ उपकार म्हूं कदेई नीं भूलूंला। चण्डप्रद्योत नै सुमारग पर आयोड़ो देख मृगावती घणी राजी हुई। वीं कह्यो—आप म्हारा धरमभाई हो। म्हनै दीक्षा लेवण री आज्ञा दे ओ। उदायन री रक्षा रो सैं जिम्मो आप पर है। चण्डप्रद्योत उदायन रो राजतिळक कियो अर मृगावती दीक्षा ले'र आतम कल्याण रै मारग पर आगै वढ़ी।

नवमो वरस :

भगवान महावीर मिथिला होता हुया काकंदी आया अर सहस्राम्र उद्यान में विराजमान हुया। भगवान रै आवण रा समीचार सुण राजा जितसत्रु दरसण खातर आया। प्रभु रा उपदेस सुण वी घणा प्रवावित हुया। वां नगरी में डिडोरो पिटवाय दियो कै जनम-मरण रा वन्धन काटवा खातर जो भी कोई राजी-राजी संजम लेणो चावै, वो लेवै। वीं रै परिवार री देखभाळ म्हूं खुद करूंला। भद्रा सार्थवाहिनी रै पुत्र धन्यकुमार री दीक्षा महाराज जितसत्रु घणा ठाट-वाट सूं करवाई। मुनि धन्यकुमार कठोर तपस्या कर'र अनसनपूर्वक सरीर रो त्याग करियो।

काकंदी सूं विहार कर भगवान कम्पिलपुर पधारिया। अठै कुंडकौलिक श्रावक व्रत अंगीकार करिया। पछै महावीर पोलासपुर पधारिया। अठै कुम्हार सद्दालपुत्र श्रावक रा वारा व्रत अङ्गीकार करिया। पोलासपुर सूं प्रभु वाणिजगांव होता हुया वैसाली पधारिया अर चौमासो अठैई पूरो करियो।

दसमो वरस :

महावीर राजगृह रै गुणसीळ वाग में विराजमान हा। अठै प्रभु रा उपदेस सुण महासतक गाथापति श्रावक धरम अङ्गीकार

करियो। एक दिन रोहक मुनि रै मन में कंई संकावां उठी। वी भगवान रै कनै आया अर पूछियो – प्रभु ! लोक अर अलोक मांय सूं पैली कुण अर पाछै कुण है ?

भगवान कह्यो—लोक अर अलोक दोन्यूं शाश्वत है, ईं कारण पैली अर पाछै रो फरक कोनी।

रोहक मुनि दूजो सवाल पूछियो—भंते ! जीव पैलां हुयो कै अजीव ? भगवान फरमांयो– लोक अर अलोक री भांत जीव अर अजीव पण शाश्वत है। इण कारण आणां में आगै-पाछै रो कांई भेद कोनी। इणीज भांत रोहक मुनि महावीर सूं केई सवाल पूछ्या अर वां रो समाधान पायो।

ग्यारमो बरस :

राजगृह सूं विहार कर'र भगवान कयंगळा नगरी पधारिया। अठै छत्रपळास उद्यान में विराजिया। कयंगळा रै नैड़े श्रावस्ती नगर में स्कंदक नाम रो एक परिव्राजक रैवतो हो। वो विविध सास्त्रां रो जाणकार हो। एकदा पिंगळ निग्रंथ स्कंदक सूं लोक री स्थिति रै बारै में सवाल पूछिया। स्कंदक ऊणां सवालां रो जवाब नीं दे सक्यो। स्कन्दक नै ठा पड़ी कै भगवान महावीर छत्रपळास उद्यान में रुक्योड़ा है। वी इणां सवालां रो जवाब देय सकै। स्कन्दक भगवान रै कनै आयो अर वंदन नमस्कार कर'र आपणी जिज्ञासा परगट करी। स्कन्दक रा सवाल सुण भगवान फरमायो स्कन्दक ! लोक-चार भांत रा है—द्रव्यलोक, क्षेत्र लोक, काळलोक अर भावलोक। द्रव्य री अपेक्षा सूं लोक सांत हैं, क्षेत्र री अपेक्षा सूं असख्य कोड़ा-कोड़ि योजन विस्तार आळो है, काळ सूं लोक री नीं कदै सरुआत हुवै अर नीं समाप्ति, अर भाव री अपेक्षा सूं लोक अनन्त-अनन्त पर्यायां रो भंडार है। इण भांत लोक सांत पण है अर वर्णादि पर्यायां रो अन्त नीं हुवण सूं, अनन्त पण है।

स्कन्दक फेरुं दूजो प्रश्न पूछियो—भंते ! किसा मरण सूं जनम-मरण रा बन्धण टूटै अर किसा सूं वधै ?

भगवान उत्तर दियो– मरण दो भांत रा हुवै—बाळ मरण अर पंडित मरण । बाळ मरण सूं संसार वधै अर पंडित मरण सूं संसार घटै । क्रोध, लोभ, मोह आदि भावां सूं अज्ञान पूर्वक असमाधि सूं मरणो बाळमरण है अर सांत भाव सूं समाधिपूर्वक मरणो पंडित मरण है ।

बारमो बरस :

वाणिज गांव सूं विहार कर'र प्रभु ब्राह्मणकुण्ड आया अर वहूसाळ चैत्य में विराजिया । अठै अणगार जमालि महावीर सूं अळग विचरवा री आज्ञा मांगी । पण महावीर की नीं बोलिया । महावीर नै मौन देख वो पांच सौ साधुवां सागै स्वतन्त्र विहार करण खातर निकळग्यो ।

वठा सूं गांवा-गांवा विचरण करता हुया, लोगां री संकावां रो समाधान करता हुया प्रभु चौमासो राजगृही में पूरो करियो ।

तेरमो बरस :

राजगृह सूं विहार कर'र महावीर चम्पापुर पधारिया अर पूर्णभद्र उद्यान में विराजिया । चम्पा रो राजा कोणिक भगवान रै आवण री बात सुण वड़ी सज-धज रै सागै वन्दण करण नै आयो । भगवान महावीर री देसना सुण कैई लोग मुनि धरम अर श्रावक वरत अङ्गीकार करिया ।

चंवदमो वरस :

चम्पा सूं भगवान विदेह कांनी विहार करियो । काकन्दी नगरी में गाथापति खेमक अर धृतिवर प्रभु रै कनै दीक्षा अङ्गीकार करी । मिथिला में चौमासो पूरो कर विहार करतां भगवान पाछा

चम्पानगरी पधारिया अर अठै पूर्णभद्र नाम रै चैत्य में बिराजिया। इण समय वैसाली में जुद्ध चालर्‌यो हो। इण में एक कांनी अठारह गणराज हा अर बीजी कांनी कौणिक अर उणारा दस भाई आपणै दळबळ सागै जूं झ र्‌या हा। प्रभु रै आवण रा समीचार सुण राज-राणियां प्रभु रा दरसण करण नै आई। महावीर रा उपदेस सुण राणियां वां सूं पूछियो—भगवन्! युद्ध में गयोड़ा म्हांका पुत्र राजी-खुसी कद घर आवैला? उत्तर में दसूं ईं पुत्रां रै युद्ध में मरण री वात सुण राणियां नै घणो दुख हुयो। वी सोचण लागी—ईं संसार में सबरो मरणो निश्चित है। वां रो जीवन धन्य है जै आपणै मिनख जमारा नै सार्थक करै। ईं बोध रै सागै विरक्त हो'र दसूं राणियां आर्या चन्दना रै कनै दीक्षा अङ्गीकार करी।

पन्दरमो बरस :

गोसालक रो उतपात अर पश्चाताप :

मिथिला सूं वैसाळी कांनी होय भगवान महावीर श्रावस्ती नगरी पधारिया। अठै राजा कोणिक रा भाई हल्ल, वेहल्ल (ज्यांरै खातर वैसाळी में युद्ध होर्‌यो हो) भगवान रै दरसण खातर आया अर प्रभु रै उपदेस सूं प्रभावित हुयर मुनिधर्म अंगीकार करियो।

मंखलिपुत्त गोसाळक पण वां दिनां श्रावस्ती रै ऐड़ै नैड़ै घूमर्‌यो हो। हलाहल कुम्हारिण अर अयंपुळ गाथापति गोसाळक रा घणा पक्का भगत हा। गोसाळक तेजोलब्धि अर निमित्तज्ञान जिसी सक्तियां पाय'र घमंड में आयग्यो। वीं श्रावस्ती री जनता माथै आपणो सिक्को जमाय राख्यो हो। वो सवांनै कैवतो कै म्हूं तो आजीवक मत रो आचार्य हूं, तीर्थङ्कर हूं। भगवान महावीर रै श्रावस्ती आवण रा समीचार जाण वो लोगां नै कैवा लागो—आजकाल श्रावस्ती नगरी में दो तीर्थंकर विचरण करै है।—एक महावीर अर दूजो म्हूं।

गणधर इन्द्रभूति गौतम भिक्षा खातर जावता थकां लोगां रै मूंडा सूं दो तीर्थङ्करां री वात सुणी तो वां आयनै प्रभु सूं अरज कर पूछियो—भगवन ! **आजकाल** श्रावस्ती में दो तीर्थङ्करां रै होवण री चरचा चाल री है। कांई गोसाळक सर्वज्ञ अर तीर्थ-ङ्कर है ?

भगवान बोल्या—गौतम ! गोसाळक तीर्थङ्कर कहलावा लायक कोनी। वींरो हिरदो राग-द्वेष अर अज्ञान, अहंकार सूं भरियोड़ो है। आज सूं चौवीस वरस पैलां औ म्हारो शिष्य बणियो हो। पण उद्दण्ड अर स्वच्छन्द सुभाव रै कारण जगां-जगां ईं रो अपमान हुयो। एकर तो तापस वेस्यायन री तेज सक्ति सूं बळता-बळता म्हैं ईं नै बचायो अर इणनै तप अर साधना रै बळ सूं *तेजोलब्धि पावण री विधि बताई। थोड़ी सी सक्ति अर लब्धि पाय* औ खुद नै तीर्थङ्कर केवण लागग्यो है।

गोसाळक रै कानां में जद प्रभु रा कह्योड़ा अै सबद पहुंच्यातो वीनै गुस्सो आयग्यो। वो बा'रै निकळर आयो। वीं श्रमण आनन्द नै भिक्षा खातर आवतां देखिया। देखतांई वीं जोर सूं हाको पाड़ियो—आनन्द ! जरा ठहर। तू आपणै धर्माचार्य महावीर नै जाय कैय दीजै कै वी म्हारै बारै में कोई बात नीं करै, चुप रैवै। म्हारै सूं बोलणो या म्हारै बारै में कांई बात करणी सूता सांप नै छेड़णो है। म्हैं देखर्यो हूं कै म्हारो आव-आदर देख वो म्हारै सूं ईर्ष्या करै है। म्हूं अबार आय थां सवांरी बुद्धि ठिकाणै लगाय दूंला। इतरो कैवता-कैवता गोसाळक रा होठ फड़कवा लाग्या। वींरो चेहरो तमतमा उठ्यो। गोसाळक री बात सुण आनन्द महावीर कनै आया अर सगळी वात केय सुणायी। वां महावीर सूं पूछियो—भगवन ! गोसाळक आपणै तेज सूं कींनै बाळ भी सकै कांई ?

महावीर बोल्या—हाँ ! गोसाळक आपणी तेज सक्ति सूं किणी नै बाळ सकै पण तीर्थङ्कर नै वो नीं जलाय सकै। यूं तो

जितरो बळ गोसाळक में है ऊं सूं कंई गुणो बत्तो बळ निग्रंथ अण-गार में हुवै। पण अणगार क्षमासील हुवै, आपणी तपरी सक्ति रो दुरुपयोग नीं करै। वो किणी नै कष्ट नीं देवै। महावीर सावचेत करतां आनन्द सूं कयो— गोसाळक अठै आवण आळो है। वो किरोध अर मान रा नसा में आंधो हुयोड़ो है। वो कांई भी खोटो काम कर सकै। ईं कारण वीसूं कोइ मुनि बात नीं करै। सैं मौन रंवे।

उणीज ताळ लाल-पीळी आंख्या काढ़तो गोसाळक आपणै दळबळ सागे वठै आय पोंच्यो अर बोल्यो—महावीर ! थां सर्वज्ञ हुवतां थकां भी म्हनै नीं ओळखो। थांरो शिष्य मंखलिपुत्र गोसाळक तो कदकोई मरग्यो। म्हूं तो कौडिन्यायन उदायी हूं। म्हारो ओ सातमो सरीरांतर प्रवेस है। पण थां अणजाण बण'र अबार भी वाइज पुराणी रट लगार्या हो कै ओ म्हारो शिष्य गोसाळक है। गोसाळक री आ बात सुण महावीर बोल्या—गोसाळक ! जिण भांत कोई चोर आपणै बचाव रो दूजो साधन नीं देख, एक तिनका री आड़ में खुद नैं लुकावण री कोसिस करै ! पण यूं चोर लुक नीं सकै भलेई वो समझै कै म्हूं लुक्योड़ो हूं। इणीज भांत गोसाळक तूं गोसाळक ही है, पण तूं आपनै छिपावण खातर कूडो बोलै।

प्रभु री आ बात सुण गोसाळक आपा सूं बारै व्हैग्यो। अर गुस्से में आय अंटसंट बकवा लागो। वीं कह्यो—थारो काळ नैड़ो आयग्यो है। तूं अबार जलबळ नष्ट हुय जावेला।

गोसाळक रा रोस भर्या अै सबद सुण'र भी महावीर नै किरोध नीं आयो। दूजा मुनि भी शांत हा। पण सर्वानुभूति अणगार गुरु रै प्रति इसा अपमान भरिया सबद सुण चुप नी रैय सक्या। वी बोल्या-गोसाळक ! भगवान महावीर नै तो थें आपणा गुरु मानिया हा। आज थूं इणां री निन्दा कर र्यो हो है ? आ चोखी बात कोनी। किरोध में विवेक नै मत बिसर।

मुनि रा वचन आग में घी रो काम करग्या । गोसाळक मुनि पर तेजोलेस्या छोड़ दीवो, जिनूं मुनि रो शरीर बठैइ बळग्यो ।

गोसाळक फेरूं मन में आवै जूंईं बोलर्यौ । वीरां सबद सुण सुनक्षत्र नाम रा मुनि भी चुप नीं रैय सक्या । वीं उणनै समझाबा लागा । गोसाळक वां पर भी तेजोलेस्या छोड़ी पण अबै उण रो असर मन्दो पड़ग्यो हो जिसूं मुनि रो प्राणान्त तो नीं हुयो पण वी बुरी तरैऊं घायल हुयग्या । वानै असीम पीड़ा ही । काळ नै नैड़ो जाण वां समाधि मरण अंगीकार करियो ।

महावीर री धरम सभा में दो निरपराध मुनि इण भांत शहीद हुयग्या । चारुं कांनी सन्नाटो छायग्यो पण गोसाळक रो किरोध हाल ताईं सांत कोनी हुयो । वीं भगवान महावीर पर भी तेजोलब्धि छोड़ी । वीनै पूरो बिसवास हो कै म्हारो तेजो सक्ति सूं महावीर रो शरीर पण नष्ट हुई जावैला । पण प्रभु रा अपार तेज रै आगे गोसाळक री तेजोलेस्या कांई असर नी कर सकी । गोसाळक री छोड्योड़ी तेजोलेस्या री किरणां महावीर रै शरीर री प्रदक्षिणा कर'नै पाछी फिरगी अर गोसाळक नै बाळती थकी वींरै सरीर में ईज प्रविष्ट हुयगी । इण सूं गोसाळक रै सरीर में जलण हुआ लागी । वो इण पीड़ा सूं घणो दुखी हुयो ।

गोसाळक री आ हालत देख महावीर नै दया आयगी । वी बोल्या-गोसाळक ! थारी तेजोलेस्या रै प्रभाव सूं थूं खुद ही बळ र्यो है । अबै थारो काळ नैड़ो है । आपणो जीवण सुधारण खातर थूं आपणै कियोड़ै खोटा करमां पर प्रायश्चित कर ।

महावीर गोसाळक रै कल्याण री कामना कर र्या हा, पण वो अवार भी रोस में भरयोड़ो हो । उण री व्यथा धीरे-धीरे वधती जाय री ही । हाय ! हाय करतो वो कोष्ठक चैत्य सूं निकळ'र

आपणै आवास कांनी भागियो । बठै सरीर री जळण सांत कवार खातर वो कदैई गीली माटी रो लेप करतो अर कदैई पीड़ा भुलावण खातर पागळ दाईं नाचतो-गावतो । इण भांत घणी वेदना अर आकुळता सूं वींको समय बीत र्यो हो । ज्यूं-ज्यूं मौत री घड़ी नैड़ी आवा लागी, त्यूं-त्यूं गोसाळक । रो मन पळटा खावा लागो । वो महावीर रै सागै कियोड़े बुरे बरताव अर दो मुनियां री हत्या सूं दुखी होवा लागो । वीं अबै सच्चाई नै मंजूर कर ली । वो आपणै शिष्यां रै सामैं कैयर्‌यो हो–महावीर जिन है, सर्वज्ञ है, म्हूं पाखंडी हूं, पापी हूं । म्हैं थांनै अर सगळै संसार नै धोखो दियो । म्हारी आतमा नै धिक्कार है ।

जिन्दगी भर खोटा करम करण आळो गोसाळक आखरी समै में पश्चाताप री आग में बळ'र सोना री दाईं खरो हुयग्यो । वीं रो गुस्सो सांत हुयग्यो । वीं आपणै मरण नै सुधार लियो ।

रेवती रो निरदोस दान :

कोष्ठक चैत्य सूं विहार कर'र महावीर मेढ़िया गांव कांनी पधारिया अर साल कोष्ठक चैत्य में विराजिया । गोसाळक री तेजो-लेस्या रै प्रभाव सूं महावीर रै सरीर में तकलीफ रैवण लागी । वां नै रक्तातिसार जिसी बीमारी हुयगी । जिसूं वांको सरीर घणो कम-जोर हुयग्यो । महावीर रा सरीर नै देख'र लोग कैवता कै गोसाळक रै कह्यां मुताबिक कठै महावीर वेगोई आउखो पूरो नीं कर जावै । आ बात सालकोष्ठक रै नैड़ै मालुयाकच्छ में तप साधना करता हुया सीहा अणगार पण सुणी । महावीर री अस्वस्थता अर काळ धरम पावण री बात सुण सीहा अणगार रो ध्यान टूटग्यो अर वो चिन्ता में पड़ग्या ।

प्रभु महावीर नै आपणै ज्ञानयोग सूं मालम पड़ी कै सीहा मुनि म्हारी पीड़ा सूं घणा दुखी है । वां आपणै श्रमणां सूं कह्यो–

थां जा'र सीहा मुनि नै अठै बुलाय लावो। वी म्हारी पीड़ा सूं दुखी हो'यर चिन्ता कर र्या है। प्रभु महावीर री आज्ञा पाय श्रमण सीहा मुनि कनै गया अर वांनै कह्यो-धर्माचार्य भगवान महावीर आपनै बुलावै है।

सीहा मनि प्रभु रा चरणां में पौंच'र वंदना करी। महावीर रै कमजोर सरीर नै देख वी उदास हो'र ऊभा रैयग्या। महावीर बोल्या-सीहा! तूं चिन्ता मत कर। तेजोलेस्या रै प्रभाव सूं म्हूं मरण आळो कोनी। म्हूं दीरघकाळ ताईं इणीज पृथ्वी पर ओरुं विचरण करूंला। आ बात सुण'र सीहा अणगार बोल्या-भगवन! म्हां भी ओईज चावां। आप किरपा कर बताओ कै ईं रोग रो कांई इलाज है?

प्रभु बोल्या-मेढिया गांव में रेवती गाथापत्नी रै कनै ईं रोग नै दूर करण री ओखध है। वीं कुम्हंडै सूं बणियोड़ी ओखध म्हारै खातरइज त्यार करी है। पण श्रमण आपणै खातर त्यार करयोड़ी कांई चीज लेवै कोनी-इण सूं वा तो म्हारै कळपै कोनी पण दूजी ओखध बीजोरापाक किणी दूजा मतलब सूं बणाई है। थां जाय नैं वीं सूं बीजोरापाक री माँग करो। वीं दवा रै उपयोग सूं आ बीमारी ठीक हुय जावैला।

भगवान री आ बात सुण सीहा मुनि रेवती रै घरै गया अर वीं सूं बीजोरापाक री मांग करी। सुद्ध ओखध रो दान देय'र रेवती आपणो मिनख जमारो सफळ करियो।

वीं दवा रै उपयोग सूं महावीर री तबियत ठीक हुयगी अर वीं पैला री भांत सुख सूं विचरण करण लागा।

सोलमो बरस

केसी–गौतम मिलन

महावीर रा शिष्य इन्द्रभूति गौतम साधु मुनियां रै सागै विचरण करता हुया श्रावस्ती आया अर कोष्ठक उद्यान में विराजिया। उणीज वगत भगवान पार्श्वनाथ री परम्परा रा केसीकुमार पण आपणै मुनि मण्डळ रै सागै तिन्दुक उद्यान में रुक्योड़ा हा। श्रावस्ती नगरी मांय केसीकुमार अर इन्द्रभूति गौतम रा साधु आपस में मिलिया। दोन्यूं रै आचार-विचार अर वेशभूषा में फरक हो। फरक देख उणांरै मन में संका हुई कै एक लक्ष्य री कांनी बढ़बा आळी इण धरम परम्परा में भेद क्यूं है? मुनियां री आ वात जाण इण संकावा नै मिटावण खातर गौतम अर केसीकुमार दोन्यूं आपस में मिलण रो विचार करियो। गौतम केसीकुमार नैं साधुपणां में वड़ा मान'र मुनि मंडळी समेत वांरै कनै गया। केसीकुमार गौतम मुनि नै आवता देख उणारो घणो आव–आदर करियो, बैठण खातर आसण दियो। दोन्यूं मुनियां रै मिलण रो ओ घणो आछो दृस्य हो।

मुनि केसीकुमार गौतम मुनि सूं घणा हेत सूं मिलिया अर पूछियो—मुनिराज! पार्श्वनाथ चातुर्याम धरम कह्यो अर महावीर पंच महाव्रत रूप धरम। इणरो कांई कारण है? गौतम मुनि वोलिया—महाराज! धरम रै तत्त्वां रो निर्णय वुद्धि सूं हुवै। जीं समय लोगां री जिसी मति हुवै वीं समै विसोइ धरम रो उपदेस दियो जावै। पैला तीर्थङ्कर रै समय लोग वुद्धि रा सरळ अर जड़ हा। वांनै धरम रो तत्त्व समझावणो मुश्किल हो अर आखरी तीर्थङ्कर रै समैं लोग बुद्धि रा वक्र (तार्किक) अर जड़ है। इणा सूं धरम रो पाळण करणो मुश्किल हुवै। ईं खातर भगवान ऋषभ अर महावीर दोन्यूं पंच महाव्रत (अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य अर अपरिग्रह) रूप धरम वतायो अर बीच रै तीर्थङ्करां रै समय लोग सरल अर बुद्धिमान हुवे। थोड़े में वी सारी बातां समझ'र उणां रो पाळण कर

लेवै। ईं खातर बीचरा बाईस तीर्थङ्करां चातुर्याम धरम (अहिंसा, सत्य, अस्तेय, अपरिग्रह) बतायो।

इण भांत केसी मुनि इन्द्रभूति गौतम सूं घणांई तात्त्विक प्रश्न पूछिया अर उणांरो संतोषप्रद उत्तर पाय'र घणा राजी हुया। वांरी इण ज्ञान गोष्ठी सूं श्रावस्ती नगरी में ज्ञान अर शील धरम रो घणो विकास हुयो। सभा में ज्ञान चरचा सुणणियां लोग धरम मारग कांनी प्रवृत्त हुया।

राजर्षि शिव रो संशय–निवारण

भगवान महावीर मिथिला सूं बिहार कर'र हस्तिनापुर पधारिया। अठारा राजा शिव घणा संतोषी अर धरम प्रेमी हा। वांनै सुखोपभोग सूं घृणा हुयगी। राज्य रो त्याग कर'र जंगल में जाय वी वल्कलधारी तापस बणग्या अर घोर तपस्या करण लागा। लम्बी तपस्या सूं वांनै विशेष ज्ञान उत्पन्न हुयो जिणसूं उणां में सात समन्दर अर सात द्वीपां ताईं देखण री खमता आयगी। वी लोगां नै कैवता—ईण संसार में सात समन्दर अर सात द्वीप ईज है, इण रै आगै कांयनी है।

तापस री आ बात जद गणधर गौतम सुणी, वां भगवान महावीर नै पूछियो—प्रभु! इण तापस री आ बात कठा ताईं सांची है?

प्रभु कयौ—इण पृथ्वी पर असंख्य द्वीप अर अनेक समन्दर है।

तापस रै कानां में महावीर री आ बात पड़ी तो वां सोच्यो—म्हारै ज्ञान में कमी है। सर्वज्ञ महावीर रो कथन सांचो है। इण भावना रै सागै वी महावीर कनै आय'र उणारो उपदेस सुणियो। उपदेस सुणण सूं वारो संसय मिटग्यो अर, उणां सूं प्रभावित हुयर वी महावीर रा शिष्य बणग्या।

भगवान महावीर रा उपदेसां नै सुण'र धरम में सरधा राखणिया घणा लोगां मुनि धरम अङ्गीकार करियो। उणां में पोट्टिल अणगार रो नाम प्रमुख है। हस्तिनापुर सूं प्रभु 'मोका' नगरी होता हुया वाणिज गांव पधारिया अर उठैई चौमासो पूरो करियो।

सतरमो बरस :

विदेह प्रदेस में विचरण करता हुया महावीर राजगृही रै गुणसील चैत्य में पधारिया। अठै इण समै बौद्ध, आजीवक आदि सैं धरम परम्परावां रा साधु हा। अै लोग समय-समय पर भेळा हुय'र ज्ञान चरचा करता। एकदा इन्द्रभूति गौतम भगवान महावीर सूं पूछियो कै आजीवक म्हानै पूछै है कै जै थारां श्रावक सामायिक व्रत में हुवै अर उणांरो कोई भांड (वरतन आदि) चोरी चल्यो जावै तो सामायिक पूरी करियां बाद वै उणरी तलास करै कै नीं, अर जै वे तलास करै तो आपणै भांड री करै या पराये री ?

भगवान महावीर इण प्रश्न रो उत्तर देवता फरमायो— गौतम ! वी आपणै भांड री इज तलास करै, पराये री नीं। सामायिक अर पौषधोपवास करण सूं उणारो भांड, अभांड नीं हुवै। जीं समै वी सामायिक आदि वरत में रैवै उणीज समैं उणारो भांड, अभांड मानियो जावै।

इण भांत प्रभु श्रावक धरम री विशेष जाणकारी दीवी। ओ चोमासो महावीर राजगृही में इज पूरो कियो।

अठारमो बरस :

राजगृह रो चौमासो पूरो कर'र भगवान चम्पा कांनी सूं होता हुया पृष्ठचम्पा नाम रै उपनगर में विराजिया। प्रभु रै आवण रा समीचार सुण पृष्ठचम्पा रा राजा शाळ अर युवराज महाशाळ

भक्ति भाव सूं प्रभु रा दरसण करण नै आया। धर्मोपदेस सुणन सूं दोन्यूं नै संसार सूं विरक्ति हुई अर वां आपणै राज रो भार भाणैज गांगळी नै संभळाय दीक्षा अंगीकार करी।

कामदेव रो समभाव :

पृष्ठचम्पा सूं भगवान चम्पा नगरी रै पूर्णभद्र चैत्य में पधारिया। अठै कामदेव श्रावक प्रभु री धरम देसना सुणन खातर आया। धरम देसना फरमायां पछै भगवान श्रमणां सूं कह्यो कै—कामदेव श्रावक गृहस्थपणां में रैय'र भी घणाइ उपसर्ग समभाव सूं सहन करिया।

एकदा जद वी पौषध में हा, आधी रात में एक मायावी देव, दैत्य, हाथी, सरप आदि रा विकराळ रूप धारण कर कामदेव नै धरम सूं विचलित करण रा घणाई प्रयास किया पण कामदेव धरम मारग सूं किंचित् भी नीं डिगिया। उणांरी धरमनिष्ठा, सहनशक्ति अर समभाव देख दैत्य परास्त हुयग्यो अर आपणै असली रूप में आ'र वीं कामदेव सूं आपणै दुष्कृत्यां री माफी मांगी। कामदेव रो ओ समभाव श्रमणां खातर भी अनुकरणीय है अर ईं सूं साधुआं नै प्रेरणा लेणी चाइजै।

दसारणभद्र नै आतमबोध :

चम्पा सूं विहार कर'र भगवान दसारणपुर पधारिया। अठा रो राजा दसारणभद्र प्रभु महावीर रो बड़ो भगत हो। वो चतुरङ्ग सेना अर राजपरिवार रै मागै वडी सजधज सूं प्रभु वंदण नै निकल्यो। वीं रै मन में ओ विचार आयो कै—म्हारै समान ठाटबाट सूं प्रभु-वंदण नै कुण आयो वेला? आ बात इन्द्र जाण ली। दसारणभद्र नै नीचो दिखावण खातर इन्द्र उणसूं वत्ती रिद्धसिद्ध रै सागै प्रभु-वन्दण नै आयो। जद दसारणभद्र इन्द्र री आ रिद्ध-सिद्ध

देखी तो वीं रो गरव चूर-चूर हुयग्यो। पण वीं हार नीं मानी। वीं री दीठ बदळगी। वीं नै आ बाहरी रिद्ध-सिद्ध निस्सार लागण लागी। वी आत्मिक रिद्ध-सिद्ध नै प्राप्त करण रो निश्चय कर लियो अर राजपाट छोड़'र प्रभु महावीर कनै दीक्षा अङ्गीकार करी। दसारणभद्र री आ हिम्मत अर धरमनिष्ठा देख इन्द्र लाजां मरग्यो अर वां नै नमस्कार कर लौटग्यो।

सोमिल री तत्त्व चरचा :

दसारणपुर सूं प्रभु वाणिजगांव पधारिया। अठै सोमिल नाम रो एक पंडित हो। वो सास्त्रां रो आछो जाणकार हो। वीं रै पांच सौ शिष्य हा। महावीर जद दूतिपळास उद्यान में पधारिया तो सोमिल वांकै दरसण खातर आयो। वीं भगवान सूं घणाई द्वैत, अद्वैत, नित्यवाद, क्षणिकवाद जिसा गूढ़ दार्शनिक सवाल पूछिया। महावीर अनेकान्त सिद्धान्त सूं सगळा सवालां रा पडूतर दिया। सही समाधान पा'र सोमिल घणो राजी हुयो। वीं घणी सरधा सूं प्रभु री धरम देसना सुणी अर प्रभु सूं श्रावक धरम अङ्गीकार करियो।

उगणीसमो बरस :

अम्बड़ री निष्ठा :

कौसल, साकेत, सावत्थी होता हुया प्रभु पांचाळ कांनी पधारिया। अठै सूं विहार कर'र कंपिळपुर रै सहस्राम्र वन में विराजिया। अठै अम्बड़ नाम रो एक ऋषि सात सो शिष्यां रै सागै रैवतो हो। वो घणो चमत्कारी महात्मा हो। वीं नै कैई लब्धियां प्राप्त ही। इण रै प्रभाव सूं जद वो भिक्षा खातर जावतो, सौ घरां सूं एकै सागै आहार लेवतो वीं रो सरूप लोग देखता। इन्द्रभूति गौतम जद आ बात सुणी तो वां भगवान सूं पूछियो -भगवन्!

अम्बड़ ऋषि री आ बात कठाताईं सांची है ? भगवान पडूत्तर दियो – गौतम ! अम्बड़ परिव्राजक वेळे-वेळे री तपस्या करै। उणरी भावना सुद्ध है। ईं कारण ईं नै इण भात री लब्धियां प्राप्त है।

महावीर रै आवण री खबर सुण अम्बड़ आपणै शिष्यां सागै उणारा दरसण करण नै आयो। महावीर री धरम देसना सुण वो उणारै ज्ञान अर चारित सूं घणो प्रभावित हुयो। सब भांत री सक्तियां हुवता थकां भी सरळ परिणामां रै कारण वीं महावीर सूं श्रावक धरम अंगीकार करियो। अर उणारो उपासक बणियो।

बीसमो बरस :

भगवान वाणिजगांव रै दूतिपळास चेत्य में विराजमान हा। वां की धरम देसना सुणन खातर हजारां मिनख रोजीना आवता। एकदा भगवान पारसनाथ री परम्परा रा गांगेय मुनि भगवान महावीर री धरम सभा मांय आया। वां भगवान सूं जीव, सत, असत आदि रै बारै में कैई तात्विक सवाल पूछिया। महावीर सूं उणारो आच्छो समाधान पा'र वी घणा प्रभावित हुया अर महावीर रै धरम संघ में सम्मिलित हुयग्या।

इक्कीसमो बरस :

मद्दुक रो तत्वज्ञान :

भगवान महावीर वैसाळी सूं मगध कांनी विहार करता हया राजगृह रै गुणसील चैत्य में ठहरिया। अठै काळोदायी, सैलोदायी आदि परिव्राजकां रो आश्रम हो। एकदा भगवान रै पंचास्तिकाय (धरम, अधरम, आकास, जीव अर पुद्गल) सिद्धांत रै विसय में भै परिव्राजक चरचा कररया हा। इणीज वगत भगवान रै आणै

री वात सुण अठा रो एक श्रद्धावान प्रमुख श्रावक मद्दुक प्रभु दरसण जायर्‌यो हो। चरचा करणियां परिव्राजकां नै मालूम हुयो कै मद्दुक नै भगवान महावीर रै सिद्धान्तां रो आच्छो ज्ञान है तो उणां मद्दुक सूं घणाई तात्विक प्रश्न पूछिया। मद्दुक सगळां प्रश्नां रो तरक संगत उत्तर दियो।

मद्दुक रै इण तत्त्वज्ञान री महावीर पण घणी प्रशंसा करी। ओ चौमासो महावीर राजगृही में ही पूरो करियो। अठै प्रभु री धरम देसना सुण लोगां घणाई व्रत-नियम अङ्गीकार करिया।

वाइसमो वरस :

पेढालपुत्त उदक री जिज्ञासा :

राजगृही सूं जुदी-जुदी ठौड विचरण करता हुया प्रभु पाछा राजगृही पधारिया अर गुणसील चैत्य में विराजिया। प्रभु सूं आपणी तात्विक संकावां रो समाधान पा'र काळादायी तीर्थक घणा राजी हुया। वां भगवान सूं उपदेस सुणण री इच्छा परगट करी। महावीर रै उपदेसां सूं प्रभावित हुयर वी निग्रंथ धरम में दीक्षित हुया।

एकदा प्रभु महावीर नाळन्दा रै हस्तियाम उद्यान में ठहरियोड़ा हा। अठै पार्श्वपत्य श्रमण पेढालपुत्त उदक री भेंट इन्द्रभूति गौतम सूं हुई। उदक गौतम सूं बोल्या-म्हारै मन में थोड़ी संकावां है। आप उणांरो समाधान करो। गौतम उदक रा लाम्बा-चौडा प्रश्नां रो सांति रै सागै समाधान करियो। इतरा में अठै पार्श्वपत्य परम्परा रा बीजा स्थविर पण आयग्या। वी भी चरचा सुणण लागा। उदक आपणी संकावां रो समाधान पा'र बिगर आवआदर करियां अर बिगर बोल्यां वठा सूं जावा लागा, तद गौतम कह्यो-

थां विगर अभिवादन करियां उठ'र जायर्‌या हो। कांई थांनै मामूली शिष्टाचार रो ज्ञान कोनी ?

गौतम रै इण स्पष्ट अर मार्मिक कथन सूं उदक वठै रुकग्या अर बोल्या—हां मुनिवर ! म्हनै इण धरम व्यवहार रो ज्ञान नीं हो। अबै म्हूं आपरै कथन पर सरधा राखर चातुर्याम धरम परम्परा सूं पंच महाव्रतिक धरम मार्ग अङ्गीकार करणो चाऊं। उदक री उत्कट जिज्ञासा देख, गौतम उदक नै महावीर कनै लेयग्या। उदक प्रभुरी आज्ञा पाय वांरै धरम संघ में सम्मिलित हुया।

तेइसमो बरस :

चौमासो पूरो कर'र भगवान नाळन्दा सूं विहार कर'र वाणिजगांव रै दूतिपळास चैत्य में पधारिया। ओ गांव वणज-वैपार रो आछो केन्द्र हो। अठै सुदर्शन नाम रो एक बड़ो वैपारी हो। वो प्रभु रा अमृत वचन सुणण नै आयो। वणी भगवान सूं कैई तात्त्विक प्रशन पूछिया। इणांरो उत्तर देवतां प्रभु सेठ नै वींरै पूरव भव रो सगळो हाल सुणाय दियो। भगवान रै मुख सूं वीत्योड़ै भवां रो हाण सुण सेठ रो अन्तरमानस जागग्यो। वीं नै आतमसरूप रो बोध हुयो अर वीं महावीर सूं श्रमण धरम अङ्गीकार करियो।

गाथापति आनन्द अर गणधर गौतम :

गणधर गौतम महावीर री आज्ञा लेय'र वाणिजगांव में भिक्षा खातर पधारिया। वी भीक्षा लेय'र जद पाछा लौटर्‌या हा तद वां लोगां सूं आनन्द गाथापति रै संथारा री चरचा सुणी। वी आनन्द श्रावक नै दरसण देवण खातर कोल्लाग सन्निवेस पधारिया।

इन्द्रभूति गौतम नै आया देख आनन्द घणा राजी हुया।

चरण वंदन करनै वी बोल्या—भगवन् ! गृहस्थी नै कांई अवधिज्ञान हुय सकै ।

गौतम कह्यो— हां ! हुय सकै ।

आनन्द बोल्या—म्हनै अवधिज्ञान हुयग्यो । म्हूं पूरब, पश्चिम अर दखण दिसा में लवण समुद्र रै पांच-पांच सौ जोजन ताईं, उत्तराध में हिमवंत पर्वत ताईं, ऊर्ध्वलोक में सौधर्म देवलोक ताईं, अर अधोलोक में लोलच्चुय नाम रै नरकावास ताईं रा सगळा पदारथ देखूं हूं ।

इण पर गौतम बोल्या—आनन्द ! गृहस्थी नै अवधिज्ञान हुवै तो जरूर, पण इतरी दूरी रो नीं हुवै । थांनै इण मिथ्या कथन पर आलोचना करणी चाइजै ।

गणधर गौतम रा अै सबद सुण विनयपूर्वक दृढ़ सबदां में आनन्द बोल्या—भगवन् ! म्हैं जो भी कांई कैयर्‌यो हूं वो यथार्थ अर सांच है । आप इण नैं झूठ मत समझो । झूठ बोलण रो प्रायश्चित म्हनै नीं, आपनै ईज करणो पड़ैला ।

आनन्द री आ बात सुण गौतम दुगध्या में पड़ग्या । वां महावीर रै कनै आय सगळी वांत बताय दी । गौतम री बात सुण महावीर कह्यो—गौतम ! आनन्द रो कैवणो सांचो है । थां वींकै सत्य नै असत्य बतायो है । आ थांरी गलती है, ईं वास्ते थां वेगासा' आनन्द रै कनै जाओ अर वींसूं माफी मांगो ।

परम सत्य रा खोजणहार गौतम पग पाछा फेरिया अर आनन्द रै कनै जा'र वींसूं माफी मांगी । एक श्रावक रै साम्है श्रमण-संघ रा सबसूं वड़ा मुनि नै यूं माफी मांगता देख आनन्द गद्‌गद् हुयग्या अर मन में सोचण लागा—निग्रंथ धरम में सांच रो कित्तो महत्त्व है ।

बीस बरसां ताईं गृहस्थ धरम री सुद्ध आराधना कर'र आनन्द समाधिपूर्वक देह त्याग करियो।

चौबीसमो बरस :

बेसकीमती भावरतन :

वैसाळी रो चौमासो पूरो कर'र महावीर कोसळ नगरी रै ऐड़ै-नैड़ै विचरण करता हुया साकेतपुर पधारिया। अठै जिनदेव नाम रो एक बड़ो वैपारी हो। एकदा वो विणज-वैपार खातर कोटि वरस नगर गयो अर अठा रा राजा किरातराज नै कीमती रतन अर गैणा आदि निजर करिया। वांनै देख राजा बोल्या-इसा रतन कठै पैदा हुवै? राजा री आ बात सुण जिनदेव बोल्यो-राजन्! म्हारै देस में इण सूं भी वत्ता कीमती रतन पैदा हुवै। किरातराज रै मन में इसा रतना आळा देस नै देखण री इच्छा हुई। जिनदेव साकेतपुर रा राजा नै इण बात री खबर दीवी। पछै किरातराज जिनदेव रै सागै साकेतपुर आया। वठै वां दिनां भगवान महावीर आयोड़ा हा। राजा सत्रुंजय अर हजारां री तादाद में घणाई लोग प्रभु दरसण खातर आया हा। नगर में आ भीड़भाड़ अर चहळ-पहळ देख किरातराज नै घणो इचरज हुयो। वीं जिनदेव सूं पूछियो-सार्थवाह! ऐ इतरा मिनख कठै जायर्‌या है? जिनदेव पडूत्तर दियो-राजन्! रतना रो एक बड़ो वैपारी अठै आयो है। वो सबसूं बढ़िया बेस-कीमती रतना रो धणी है। जिनदेव री बात सुण किरातराज रै मन में उण वैपारी सूं मिलण री जिज्ञासा हुई।

जिनदेव अर किरातराज दोन्यूं महावीर (ज्ञान, दर्शन चारित्र इण तीन रतनां रा धारक) री धरम सभा में गया। वठै जा'र प्रभु रा चरणां में वंदनां-नमस्कार करनै, उणां सूं किरातराज रतना रै प्रकार अर कीमत रै बारै में पूछियो। महावीर बोल्या-देवानुप्रिय! रतन दो भांत रा हुवै। एक द्रव्य रतन अर दूजा भाव रतन भाव

काळोदायी फेर दूजो प्रश्न पूछियो–भगवन ! जीव खुद सुभ फळ देण आळा करम किण भांत करै ?

महावीर बोल्या–काळोदायी ! ज्यूं रोग री दवा कड़वी हुवण पर भी सरीर नै फायदो पोंचावै, उणीज भांत सत्य, अहिंसा, शील, क्षमा अर अलोभ जिसी प्रवृत्तियां व्यवहार में थोड़ी भारी लागै पण आगै उणां रो परिणाम घणो सुखदायी हुवै ।

इण भांत काळोदायी प्रभु सूं औरुं कंई प्रश्न पूछिया अर उणां रो आछो समाधान पा'र वो संतुष्ट हुयो ।

छाईसमो बरस :

गांव-गांव विहार करता हुया प्रभु महावीर राजगृही पधारिया अर गुणसील चैत्य में बिराजिया । गणधर गौतम प्रभु सूं घणाई तात्त्विक प्रश्न पूछिया अर उणारो समाधान पायो । इणीज बरस में अचळभ्राता अर मेतार्य गणधर अनशन कर निर्वाण प्राप्त करियो । ओ चौमासो भगवान नाळन्दा में पूरो कियो ।

सत्ताइसमो बरस :

नाळन्दा सूं विहार कर'र प्रभु विदेह जनपद कानी होता हुया मिथिला नगरी पधारिया अर मणिभद्र चैत्य में बिराजिया । अठारा राजा जितसत्रु प्रभु दरसण करण नै आया । महावीर री धरम देसणा सूं लोग घणा प्रभावित हुआ । इन्द्रभूति गौतम सौर-मंडळ, उणरै भ्रमण, प्रकास, उण रै क्षत्र आदि रै बारै में घणाई प्रश्न पूछिया ।

अट्ठाइसमो बरस :

मिथिला सूं विहार कर प्रभु महावीर विदेह रै गांवा-गांवा में विचरण कर अनेक सरधावान लोगां नै धरम देसना दीवी । कंई लोग श्रमण धरम में दीक्षित हुया अर कंई श्रावक व्रत अङ्गीकार करिया । ओ चौमासो पण महावीर मिथिला में ईज पूरो कियो ।

महावीर री आज्ञा मान'र गौतम महासतक कनै गया अर उणनै प्रभु महावीर रो संदेसो कह्यो। महासतक संदेस रै मुजब आपणै कियै पर पश्चाताप कर'र आतम सुद्धि कीवी।

तीसमो बरस :

राजगृही सूं विहार कर महावीर पावापुरी रै राजा हस्तिपाळ री रज्जुग सभा में पधारिया। ओ आखरी चौमासो अठै इज पूरो हुयो। हजारां लोग प्रभु रा उपदेस सुणण नै आया। प्रभु कयो— हरेक प्राणी नै आपणो जीव वाल्हो है। मौत अर दुख कोई नीं चावै। मिनख नै दूजा रै सागै इसोईज बैवार करणो चाइजै जिसो वो खुद आंपणै वास्तै चावै। ओईज सांचो मिनखपणो अर धरम रो मूळ है।

प्रभु रा उपदेस सुणण राजा पुण्यपाळ पण आयो हो। वों पिछली रात में देख्या आठ सुपना (हाथी, बानर, क्षीरतरू, कागळो, ना'र, कमळ, बीज अर घड़ो) रो फळ महावीर सूं पूछियो। महावीर रो पड़ूत्तर सुण राजा पुण्यपाळ नै संसार सूं विरक्ति हुयगी। वों राज वैभव छोड़'र साधु धरम अंगीकार करियो।

चौमासे रा तीन महिना पूरा हुयग्या। चौथो महीनो चाल-र्‌यो हो। काती वद चवदस (अमावस) रै दिन परभात र समें भगवान रज्जुग सभा में आखरी धरम देसना देयर्‌या हा। प्रभु रै मोक्ष पधारण रो समय नैड़ो जाण इन्द्र आपणै परिवार रै सागै महावीर कनै आयो अर वांसूं आपणो उमर बढ़ाबा सारु अरज करी। महावीर कह्यो—उमर नै घटावा अर बढ़ावा री ताकत किणी में कोनी। भगवान री आ बात सुण इन्द्र मौन रैयग्यो। वो वन्दना-नमस्कार कर पाछो चल्योग्यो।

मूल्यांकन :

इण भांत तीस बरसां ताईं केवळीचर्या में विचरण करता हुया प्रभु महावीर बिगर जातपांत, वरगभेद अर वर्णभेद सूं सैं

लोगां नै धर्म देशना दीवी। वांरै प्रभाव सूं संस्कार शुद्धि रौ एक नूंवो अभियान सरू हुयो। आतम तत्त्व री सही ओळखाण कर कंई परिव्राजक, राजा-महाराजा, सेठ-साहूकार महावीर रै धरम संघ में सम्मिलित हुया। वांरै संघ में चवदह हजार साधु, छत्तीस हजार साध्वियां, एक लाख गुणसठ हजार श्रावक अर तीन लाख अठारह हजार श्राविकावां ही।

——

९ | परिनिर्वाण

आपणो आउखो नैड़ो जाण भगवान महावीर आपरा प्रिय शिष्य गौतम नै देवसरमा नाम रै ब्राह्मण नै उपदेस देवण खातर अळगा मोकळ दिया। प्रभु रै बेळै री तपस्या ही। इण दिन वी सोला पहर ताई चरम उपदेस देवता र्‌या। घणाई तात्विक सवाल जवाब हुया। इणीज रात मांय काती वद चवदस नै (अमावस) प्रभु चार अघाति करम रो नास कर'र ७२ वर्ष रा अवस्था में सिद्ध-बुद्ध मुक्त हुया। ज्ञान रो अद्भुत ज्यात अचाणचक लुकगी।

अै समाचार चारु' कांनी फैलग्या। जद गौतम नै इण बात री ठा पड़ी तो वी शोक विह्वल हुय'र विलाप करण लाग्या—भगवन् आप ओ कांई करियो? इण मौके आप म्हनै अळगो क्यूं भेज दियो। म्हूं कांई टाबर दाई आपरै लारै पड़तो, आपनै मोक्ष पधारण सूं राक लेवतो? म्हूं अबै किण नै वन्दणा करूंला, किण रै सामं आपणी संकावां राखूंला। देर ताई यूं मोह ग्रस्त बणिया गौतम आंसूंड़ा ढळकावता र्‌या। पण जद विह्वलता रो ओ तूफान थमग्यो तद वांरी दीठ वदळगी। वी सोचण लाग्या—अरे! म्हारो ओ मोह किण रै खातर है? भगवान तो वीतराग है. उणां रै प्रति ओ किसो राग! क्यूं नीं म्हूं भगवान रै चरणां रो अनुसरण करूं? ओ सरीर तो जड़ है, इण नै छोड़ियां विगर मुक्ति कोनी। भगवान पण इण पार्थिव सरीर नै छोड़ मुगत पधारिया है। म्हनै भी इणीज मारग पर आगै वढ़णो है। इण भांत सोचण सूं गौतम रा मोहनीय करम हटग्या। वांनै केवलज्ञान हुयग्यो।

जिण रात में प्रभु महावीर रो निर्वाण हुयो वीं रात में नौ मल्लवी, नौ लिच्छवी अठारह कासी-कोसल रा गणराजा पौषव्रत में हा। वां कयो–आज संसार सूं भाव उद्योत उठग्यो। अबै म्हां द्रव्य उद्योत करांला। घणघोर अंधारी रात में देवतावां रतनां रो आलोक बिखेर'र अर मिनखां दीया जला'र सै ठोड़ चांनणो कर दियो। चारूं कांनी प्रकास रा पग मंडग्या। महावीर रो देहत्याग ओछव रो रूप ले लियो। इण भांत दीपमाळा री नूं ई भांत सूं सरुआत हुई।

महावीर रै निर्वाण रै सागै संसार री एक दिव्य ज्योत विलीन व्हैगी। तीस बरस री भरी जवानी में महावीर साधना रै कंटीलै मारग पर वढ्या। साढ़ै बारा बरसां वां कठोर तपस्या कीवी अर साधना रै बळ सूं केवळज्ञान प्राप्त करियो। केवळी बण्या पाछै तीस बरसां ताईं वां लोक कल्याण खातर उपदेस दे'र लाखां लोगां नै संजम मारग कांनी बढ़ण री प्रेरणा दीवी।

महावीर रा उत्तराधिकारी गणधर सुधर्मा प्रभु महावीर रै प्रति भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करतां कयो–जियां हाथियां में ऐरावत, पसुवां में सिंह, नदियां में गंगा, पक्षियां में गरुड़, पुष्पां में कमळ अर रसां में इक्षुरस श्रेष्ठ है, उणीज भांत तपस्वी ऋषि-मुनियां में भगवान महावीर श्रेष्ठ हैं।

---

१० | महावीर रा सिद्धान्त

भगवान् महावीर आज सूं ढाई हजार बरस पैलां जै उपदेस दियो वै आज भी तर्क अर विज्ञान री कसौटी पर खरा उतरै है। वांरा सिद्धान्त प्राणिमातर री स्वतत्रता, समानता पुरुषार्थवादिता, वैचारिक उदारता अर मैत्री भाव पर आधारित है। वां में जो सत्य व्यंजित है वो किणी एक जुग, काळ अर देश रो कोनी वो सार्वजनीन अर सार्वकाळिक है। जुग जुग तांई वांसू लोगां नै प्रेरणा मिलती रैवेली। उणां रा प्रमुख सिद्धान्त इण भांत है।

[१] तत्त्व-चिन्तन

जैन धरम साधना रो धरम हैं। ओ अनादिकाळ सूं कलुषित आतमा रै अशुद्ध रूप नै दूर कर'र शुद्ध रूप री प्राप्ति रो मारग बतावै। साधक नै संसार रै बंधण सूं मुक्ति हुवण खातर आतमा री शुद्ध अर अशुद्ध स्थिति अर उणरै कारणां रो ज्ञान जरूरी है। ओ ज्ञान तत्त्व ज्ञान कहीजै।

नौ तत्त्व :

जैन दर्शन में मुख्य तत्त्व नौ मानीजै—(१) जीव (२) अजीव (३) पुण्य (४) पाप (५) आस्रव (६) बंध (७) संवर (८) निर्जरा अर (९) मोक्ष। इणांरो परिचय इण भांत है —

१. जीव तत्त्व :

जीव तत्त्व रो लक्षण उपयोग-चेतना है। जिणमें ज्ञान अर दर्शन रूप उपयोग है, वो जीव है। जीव चेतन पण कहीजै। इणमें

सुख-दुख, अनुकूलता-प्रतिकूलता आदि भावां रै अणभव री खमता हुवै ।

जीव तत्व रा दो भेद हुवै—(१) मुक्त अर (२) संसारी। जो जीव करम मळ सूं रहित हुयर ज्ञान, दरसन रूप अनन्त शुद्ध चेतना में रमण करै, वो मुक्त अर करमां रै कारण जनम-मरण रूप संसार में मिनख, तिर्यंच, देव अर नारक गतियां में घूमतो रैवै वो संसारी कहीजै ।

संसारी जीवां मांय सूं देव ऊर्ध्व लोक में, मिनख अर पशु मध्यलोक में अर नारक अधोलोक में निवास करै । मिनख रै स्पर्शन (सरीर) रसन (जीभ) घ्राण (नाक) चक्षु (आंख) अर श्रोत्र (कान) अै पांच इन्द्रियां मन सहित हुवै, इण कारण वो मिनख कहीजै ।

जीव री पांच जातियां हुवै—(१) एकेन्द्रिय, (२) द्वीन्द्रिय, (३) त्रीन्द्रिय (४) चतुरिन्द्रिय अर (५) पंचेन्द्रिय ।

एकेन्द्रिय जीव रै सिर्फ एक इन्द्रिय सरीर हुवै । पृथ्वी, पानी, अग्नि, वायु, वनस्पति रा जीव एकेन्द्रिय जीव है ।

द्वीन्द्रिय जीवां रै स्पर्शन (सरीर) अर रसन (जीभ) अै दो इन्द्रियां हुवै । लट, संख, जौंक आदि जीव द्वीन्द्रिय है ।

त्रीन्द्रिय जीवां रै स्पर्शन, रसन अर घ्राण (नाक) अै तीन इन्द्रियाँ हुवै । चींटी, कानखजूरा आदि जीव त्रीन्द्रिय है ।

चतुरिन्द्रिय जीवां रै स्पर्शन, रसन, अर घ्राण चक्षु (आंख) अै चार इन्द्रियाँ हुवै । मक्खी, मच्छर, टिड्डो, पतंगा आदि चतुरिन्द्रिय जीव है ।

पंचेन्द्रिय जीवाँ रै स्पर्शन, रसन, घ्राण, चक्षु अर श्रोत्र (कान) अै पांच इन्द्रियां हुवै । नारक, मनुष्य, देव, गाय, भैंस, कागला, कबूतर आदि पंचेन्द्रिय जीव हैं ।

२. अजीव तत्त्व :

जिण में चेतना नीं हुवै जो सुख-दुख रो अनुभव नीं करै वो अजीव कहीजै। अजीव तत्त्व जड़ अर अचेतन हुवै। सोनो, चांदी, ईंट, चूनो आदि मूर्त अर आकास, काळ आदि अमूर्त जड़ पदार्थ अजीव तत्त्व है। अजीव तत्त्व रा पाँच भेद हुवै-(१) पुद्गल, (२) धर्म, (३) अधर्म, (४) आकास अर (५) काल।

जिण में रूप, रस, गंध अर स्पर्श हुवै। जो आपस में मिल'र आकार ग्रहण कर लै अर विळग हो'र परमाणु बण जावै वो पुद्गल है। इणां में मिलण अर अळग होवण री आ क्रिया स्वभाव सूं हुवै। दर्शन री भाषा में मिलण री क्रिया नै संघात अर विळग होणै री क्रिया नै भेद कैवे।

धर्म तत्त्व गति में सहायक हुवै। जियां मछली खातर पाणी अप्रत्यक्ष रूप सूं सहकारी है, उणीज भांत जीव अर पुद्गल द्रव्यां रै गति करण में धर्म सहकारी कारण है।

क्रियायुक्त जीव अर पुद्गल नै ठहरण में जो अप्रत्यक्ष रूप सूं सहायता देवै वो अधर्म द्रव्य है। धर्म द्रव्य अर अधर्म द्रव्य जीव अर पुद्गल द्रव्यां नै जबरदस्ती नीं चलावै अर नीं ठहरावै। अै तो निमित्त रूप सूं उणारा सहायक बणै।

जो सब द्रव्यां नै आधार देवै वो आकाश है। इण रा दो भेद लोकाकास अर अलोकाकास हुवै। जीव, पुद्गल, धर्म अधर्म, काल अै द्रव्य जितरा आकाश में ठहरै वो लोकाकास अर जठै आकास रै सिवाय दूजा द्रव्य नीं हुवै वो अलोकाकास कहीजै।

जो द्रव्यां रै परिवर्तन में सहकारी हुवै वो काळ द्रव्य कहीजै। घंटा, मिनट, समय आदि काळ राईज पर्याय है।

अै जीव अर अजीव तत्त्व संसार रै निर्माण रा मुख्य तत्त्व है। संसार अनादि अनन्त है। ईं री रचना किणी ईश्वर नीं करी।

३. पुण्य तत्त्व :

पुण्य शुभ करम हुवै अर पाप अशुभ करम। अै दोन्यूं अजीव द्रव्य है। शास्त्रीय दृष्टि सूं पुण्य रा नौ भेद है। वी इण भांत है- (१) अन्न पुण्य, (२) पान पुण्य [३) लयन (स्थान) पुण्य, (४) शयन (शैया) पुण्य, (५) वस्त्र पुण्य, (६) मन पुण्य, (७) वचन पुण्य, (८) काय पुण्य अर (९) नमस्कार पुण्य। अर्थात् अन्न, पाणी, औखध आदि रो दान करणो, ठहरण खातर जग्यां देवणी, मन में आच्छा भाव राखणा, खोटा वचन नीं बोलणा, सरीर सूं आच्छा काम करणा, देव गुरू नै नमस्कार करणी अै सगळा पुण्य करम है।

४. पाप तत्त्व :

पापां रा कारण अनेक हुवै पण संक्षेप में अै अठारा मानी-जै। अै पापस्थान पण कहीजै। इणारा नाम इण भांत है- (१) हिंसा (२) झूठ (३) चोरी (४) अब्रह्मचर्य (५) परिग्रह (६) क्रोध (७) मान (८) माया (९) लोभ (१०) राग (११) द्वेष (१२) कलह (१३) अभ्याख्यान (झूठो नाम लगाणो, दोस देवणो। (१४) पैशुन्य (चुगली) (१५) परनिन्दा (१६) रति-अरति पाप में रुचि धरम में अरूचि) (१७) माया-मृषावाद, (कपट सूं झूठ बोलणो) अर (१८) मिथ्या दर्शन।

व्यावहारिक दृष्टि सूं आ बात कहीजै कै पाप करण सूं नरक रो दुख मिलै, लोक में अपयश मिलै अर निन्दा हुवै। पुण्य करण सूं देवलोक रो सुख मिलै, अर लोक में यश, सन्तान, वैभव आदि री प्राप्ति हुवै। पण पूर्ण मुक्ति रै मारग पर बढ़णिया साधक खातर

पाप अर पुण्य दोन्यूं हेय है। सुभ-असुभ ने छोड़'र सुद्ध वीतराग भाव मै रमण करणोइज अध्यातम रो लक्ष्य है।

५. आस्रव तत्त्व:

पुण्य-पाप रूप करमां रै आवण रो रास्तो आस्रव कहीजै। आस्रव रा पांच भेद इण भांत है- (१) मिथ्यात्व, (२) अविरति, (३) प्रमाद (४) कषाय अर (५) योग।

मिथ्यात्व रो अरथ है विपरित सरधा राखणी, तत्व ज्ञान नीं हुवणो। इण में जीव जड़ पदारथां में चेतना, अतत्त्व में तत्त्व, अधरम में धरम बुद्धि आदि विपरीत भावना री प्ररूपणा करै।

अविरति रो अरथ हुवै-त्याग री भावना रो अभाव, त्याग में अरुचि, भोग में सुख अर उत्साह री भावना।

प्रमाद रो अरथ है-आतम कल्याण खातर आच्छा काम करण री प्रवृत्ति में उत्साह नीं हुवणो, आलस्य, मद्य, मांस आदि रो सेवन करणो।

कषाय रो अरथ है-क्रोध, मान, माया, लोभ री प्रवृत्ति।

योग रो अरथ है—मन, वचन काया री शुभाशुभ प्रवृति। योग दो भांत रा हुवै। सुभयोग अर असुभ योग। सुभ योग सूं पुण्य रो बंध हुवै अर असुभ योग सूं पाप रो।

६. बंध तत्त्व:

सुभ-असुभ करम जद आतमा रै सागै चिपक जावै तद वा अवस्था बध कहीजै। औ बंध चार भांत रा हुवै—(१) प्रकृति बंध, (२) स्थिति बंध, (३) अनुभाग बन्ध अर (४) प्रदेस बन्ध।

प्रकृति बंध करमां रै सभाव नै निश्चित करै। स्थिति बंध करमां रै काळ रो निश्चय करै। अनुभाग बंध करमां रो फळ निश्चित

करै अर प्रदेस वन्ध ग्रहण करियोड़ा करम पुद्गलां नै कमबेसी परिमाण में बांटै।

७. संवर तत्त्व :

करम रै आवण रो रास्तो रोकणो संवर है। संवर आतमा री राग-द्वेष मूलक असुद्ध वृत्तियां नै रोकै। संवर रा पांच भेद इण भांत है—

(१) सम्यक्त्व—विपरीत मान्यता नीं राखणी।

(२) व्रत—अठारह प्रकार रै पापां सूं वचणो।

(३) अप्रमाद—धरम रै प्रति उत्साह राखणो।

(४) अकषाय—क्रोध, मान, माया, लोभ आदि कषायां रो नास करणो।

(५) अयोग—मन, वचन, काया री क्रियावां रो रुकणो।

८. निर्जरा तत्त्व :

आतमा में पैलां सूं आयोड़ा करमां रो क्षय करणो निर्जरा है। निर्जरा आतम सुद्धि प्राप्त करण रै मारग में सीढियां रो काम करै। आ दो भांत री हुवै—(१) सकाम निर्जरा अर (२) अकाम निर्जरा। सकाम निर्जरा में विवेक सूं तप आदि री साधना करीं जावै। अकाम निर्जरा में बिना ज्ञान अर संयम सूं तप साधना करी जावै। बिना विवेक अर संयम सूं करियोड़ो तप बाळ तप कहीजै। इण सूं करम निर्जरा तो हुवै, पण सांसारिक वंधण सूं मुक्ति नीं मिलै।

९. मोक्ष तत्त्व :

मोक्ष रो अरथ है–सगळा करमां सूं मुक्ति। राग अर द्वेष रो सम्पूर्ण नास। मोक्ष आतम विकास री चरम अर पूर्ण अवस्था है।

इण अवस्था में स्त्री-पुरुष, पशु-पक्षी, छोटा-बड़ा आदि रो कांइ भेद नी रैवै। आतमा रा सगळा करम नष्ट हुवण पर वा लोक रै अग्र भाग में पौंच जावै। व्यावहारिक भाषा में उण नै सिद्धशिला कैवै। यूं मोक्ष कोई स्थान नीं है। जिण भांत दीपक री लौ रो सुभाव ऊपर जावणो है, उणीज भांत करम मुक्त आतमा रो सुभाव पण ऊपर उठण (ऊर्ध्वगामी हुवण) रो है। करमां सूं मुक्त हुवण पर आतमा आपणै सुद्ध सुभाव सूं चमकबा लागै। उणी रोइज नाम मुक्ति, निर्वाण अर मोक्ष है।

मोक्ष प्राप्ति रा चार उपाय है—सम्यक् ज्ञान, दर्शन, चारित्र अर तप री आराधना। ज्ञान सूं तत्त्व री जाणकारी हुवै। दर्शन सूं तत्त्व पर सरधा वढ़ै। चारित्र सूं करमां नै रोक्या जावै अर तप सूं आतमा रै बंध्योड़ा करमां रो क्षय हुवै। इण चारुं उपाय सूं जीव मोक्ष प्राप्त कर सकै। इण री साधना में जाति, कुळ, वंश आदि रो कांई बंधण कोनी। जो आतमा आपणै आतम गुणां नै प्रकट कर लेवै वा मोक्ष री अधिकारी वण जावै।

[२] आतमा

भगवान महावीर आतमा नै अनादि, अनन्त अर अनासवान बताई। वांरै मत में आतमा इज आपणै गुणां रो विकास कर परमातमा वण जावै। बीजा दार्शनिकां री मान्यता है कै आतमा परमातमा रो इज अंस है। वांरै मुताबिक जियां आग सूं एक चिनगारी छिटक'र न्यारी हुय जावै अर पाछी आग में मिल जावै, उणीज भांत आतमा अर परमातमा रो सम्बन्ध है। पण भगवान महावीर आतमा रो स्वतंत्र अस्तित्व मानियो अर कयो—आतमा जद करम मळ रो नास कर'र निर्विकार हुय जावै तद वा खुदइज परमातमा बण जावै।

प्रभु महावीर आतमा री ओळखाण करावतां कयौ– आतमा अमूर्त्त है। वा आंख्यां सूं देखी नीं जा सकै। वा शुद्ध चैतन्य स्वरूप है। सरीर में चेतना री अनुभूनि आतमा रै कारण सूं इज है। करमां रै मुताविक आतमा मिनख अर जिनावरां रो सरीर धारण करै अर उणां रै कारण इज कदै नारकी रो दुख भोगै तो कदं देवलोक रो सुख। आतमा इज आपरणै सुख-दुख री कर्ता है अर वाइज उणां री भोक्ता।

महावीर री दृष्टि में आतमा अर सरीर जुदा-जुदा है। जठा ताईं आतमा संसार सूं मुक्त नीं हुवै वा एक सरीर नै छोड़' र वीजो सरीर धारण करती रैवै। भगवान महावीर परमातमा री कल्पना सृष्टि री रचनाकरण आला रै रूप में नीं करी। वांरी दृष्टि सूं परमातमा वीतरागी हुवै। वांनै संसार सूं कांई लेणो-देणो नीं। आतमा रो चरम विकास इज परमातमा हैं। इण दृष्टि सूं जितरी आत्मावां तपसंयम रै मारग पर चाल' र आपरणा करम क्षय कर देवै, वी सव परमातमा वरण जावै। परमातमा वणियां पछै भी उणारो स्वतंत्र-अस्तित्व रैवे। किणी एक जोत में मिल' र वी आपणो अस्तित्व नष्ट नीं करै। स्वातंत्र्य वोध री आ मान्यता महावीर रै आतमवाद री खास विशेषता है।

महावीर री दृष्टि में आतमा अनन्त ज्ञान, अनन्त दर्शन, अनन्त चारित्र, अर अनन्त वळ री धणी है। वींनै ओ वळ किणी वीजी शक्ति सूं नीं मिलै। वा खुद आपणी साधना सूं आपणै में छिप्योडा इण वळ नै जागृत करै। चार घातिक करम (ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहनीय, अर अन्तराय) आतमा री मूळ शक्ति रै स्रोत नै रोक लेवै। जद अै घाती करम नष्ट हुय जावै तद आतमा रो विकास अर उणरी अनन्त शक्ति रो वोध हुवै।

आतमा री तीन अवस्थावां

1. बहिरातमा :

आतमा री तीन अवस्थावां मानीजै—वहिरातमा, अन्तरातमा

अर परमातमा ।

१. बहिरातमा :

बहिरातमा वा अवस्था जिणमें आतमा जागृत नींहुवै, वींनै आतमज्ञान नीं हुवै । जीव, सरीर अर इन्द्रियाँ नैइज वा आतमा समझै ।

२. अन्तरातमा :

अन्तरातमा वा अवस्था है जद जीव नै ज्ञानी पुरुसां रै सम्पर्क सूं आतमज्ञान हुवै । वीं नै सरीर सूं आपणै अळग अस्तित्व रो भान हुवै । वा आ बात समझ जावै कै जिण भांत म्यान अर तलवार एक नीं है, उणीज भांत आतमा अर सरीर पण एक कोनी । अन्त-र्मुख आतमा सरीर नै पर पदारथ समझ' र उण पर मुग्ध नीं हुवै । उण नै संसार अर उणरै पदार्थां सूं हर्ष अर विषाद नीं हुवै । उणनै इष्ट-सयोग में सुख अर इष्ट-वियोग में दुख नीं हुवै । समभाव री जोत उणरै मानस नै जगमगावा लागै । राग-द्वेष रो भाव नष्ट हुय जावै । दुनियां री सैं वस्तुआं अर घटनावां नै वा मध्यस्थ भाव सूं देखै ।

३. परमातमा :

परमातमा वा अवस्था है जद आतमा नै अतीन्द्रिय ज्ञान हुय जावै । वा अनन्त सुख, अनन्त ज्ञान अर अनन्त सक्ति रो स्रोत बण जावै । उणमें किणीं भांत रो विकार नीं हुवै । वा परमानन्द-मयी अर विशुद्ध चैतन्य स्वरूप आळी हुय जावै ।

आ परमातम दसाइज परमब्रह्म है, जिनराज है, परम-तत्त्व है, परमगुरु, परमज्योति, परमतप, अर परम ध्यान है । जै इण सरूप नै जाण लियौ वी सैं कुछ जाण लियो अर जै इण सरूप नै नीं जाणियो वां सैं कुछ जाण' र भी कांई नीं जाणियो ।

[३] कर्म

विश्व रै विशाल रंगमंच पर निजर डालण सूं मालूम हुवै कै इण में चारुंकांनी विविधता अर विषमता है । चार गतियां अर

चारासी लाख जीव योनियां में भ्रमण करण आळा जीव एक जिसा रूप अर शक्ति आळा कोनी । कोई मिनख है तो कोई पसु, कोई पंछी है तो कोई कीड़ा-मकोड़ा ।

मनुष्य गति में पण अनेक भांत री विषमतावां देखण नै मिलै । कोई मिनख हृष्ट-पुष्ट है तो कोई दुबळो-पातरो । कोई रूपाळो मनमोवणो है तो कोई कालो-कलूटो । कोई धनवान है तो कोई गरीब । कोई सूखी है तो कोई दुखी । कोई नीरोगी है तो कोई जनम-जात रोग आळो । प्रभु महावीर इण सगळी विषमतावां रो कारण आपणा-आपणा करमां नै बतायो । आच्छा करम रै बंध सूं मिनख नै सुख अर बुरा करमां रै बंधण सूं दुख मिलै ।

करम रो सरूप

लोक व्यवहार अर सास्त्रां में करम सबद काम-धन्धा अर व्यवसाय करण रै अरथ में प्रयुक्त हुवै । खावण-पीवण, हलण-चलण आदि कामां में भी करम सबद रो प्रयोग हुवै । पण जैन दर्शन में करम सबद रो एक विशेष अरथ हुवै । संसारी जीव जद राग-द्वेष युक्त मन, वचन, काया री प्रवृत्ति करै तद आतमा में एक स्पन्दन हुवै जिसूं वा चुम्बक री दाई बीजा पुद्‌गळ परमाणुवां नै आपणी तरफ खींचै, अर वै परमाणु लोहे री दाई उण सूं चिपक जावै । अै पुद्‌गळ परमाणु भौतिक अर अजीव हुवै पण जीव री राग-द्वेषात्मक मानसिक, वाचिक अर कायिक क्रिया रै द्वारा खींच'र आतमा रै सागै दूध-पाणी दाई घलमिल जावै, आग अरलो हपिण्ड री दाई आपस में एकमेक हुय जावै । जीव रै द्वारा कृत (क्रिया) हुवण सूं अै कर्म कहीजै । कर्म बंध रा मूल कारण राग अर द्वेष है । राग-द्वेष री भावना रै वसीभूत हुय जै करम करै उण रो फळ वांनै अवस मिलै । आच्छा करमा रो फळ आच्छो अर बुरा करमां रो फळ बुरो मिलै ।

करम रा भेद :

आतमा रा मुख्य आठ गुण हुवै । इणांन आच्छादित करण सूं करम भी आठ प्रकार रा मानीजै (१) ज्ञानावरण (२) दरसनावरण (३) वेदनीय (४) मोहनीय (५) आयु (६) नाम (७) गोत्र अर (८) अन्तराय ।

इणा आठ करमां मांय सूं ज्ञानावरण, दरसनावरण, मोहनीय अर अन्तराय अै चार घाती करम कहीजै अर बाकी रा चार वेदनीय, आयु, नाम अर गोत्र अघाती करम कहीजै । घाती करम आतमा रै सागै रैवै । अै आतमा रै ज्ञान, दरसण, चारित्र, सुख आदि मूल गुणां रो घात करै । इण करमां नै नष्ट कियां बिगर आतमा सर्वज्ञ अर केवळी नी वण सकै । अघाती करम आतमा रै मूल स्वरूप नै नष्ट नीं करै । इणांरो असर केवल सरीर, इन्द्रिय, उमर आदि पर पड़ै । इणांरो सम्बन्ध इणीज जनमताईं रैवै ।

१. ज्ञानावरण :

जो करम आतमा री ज्ञान शक्ति नै आच्छादित करै वो ज्ञानावरण करम कहीजै । ज्यूं आंख्यां पर लाग्योड़ी कपड़ै री पट्टी देखण में बाधा डालै, उणीज भांत ज्ञानावरण करम आतमा नै पदारथ रो ज्ञान करण में रुकावट डालै ।

२. दरसनावरण :

दरसनावरण करम आतमा री पदारथां नै देखण री शक्ति नै आच्छादित करै । ओ करम पैरेदार रै समान है जो राजा रै दरसण करण या मिलण में रुकावट डालै ।

३. वेदनीय ।

वेदनीय करम रा दो भेद हुवै—साता वेदनीय अर असाता वेदनीय । साता वेदनीय रै उदय सूं जीव सारीरिक अर मानसिक

सुख रो अनुभव करै अर असाता वेदनीय रै उदय सूं जीव दुख रो अनुभव करै। वेदनीय करम सैंत सूं पुत्योड़ी तलवार रै माफिक है। सैंत पुत्योड़ी तलवार री धार चाटतां समय जो छणिक सुख मिलै वो साता वेदनीय अर चाटतां वगत तळवार री धार सूं जीभ कटण रो जो दुख मिलै वो असाता वेदनीय। कैवा रो मतळब ओ कै संसार रा सगळा सुख दुख-मिश्रित है।

४. मोहनीय

मोहनीय करम दारू रै माफक है। ज्यूं दारु मिनख री बुद्धि नै नष्ट करै अर वो बेभान हुय जावै, वीं नै हिताहित रो ज्ञान नीं रैवै, उणीज भांत ओ करम आत्मा रै ज्ञान सुभाव नै विकृत बणावै। उणमै पर पदार्थां रै प्रति ममत्व बुद्धि जगावै। आठ करमां माय मोहनीय करम सगळा सूं भयंकर अर ताकतवर है। ओ करमां रो राजा कहीजै।

५. आयु :

आयु करम री स्थिति सूं प्राणी जीवै अर उणरै नष्ट हुवण सूं जीव मरै। इण करम रो सुभाव कैदखाना रै माफिक है। जियां अदालत सूं सजा पायोड़ो अपराधी पूरी सजा पायां बिगर पैलां नीं छूट सकै, उणीज भांत आयु करम जठा ताईं वणियो रैवै वठा ताईं जीव आपणै सरीर रो त्याग नीं कर सकै। आयु करम रा नरकायु, तिर्यञ्च आयु, मनुष्य आयु अर देव आयु अै चार भेद है।

६. नाम :

नाम करम जीव नै एक जूंण सूं दूसरी जूंण में लै जावै। इण करम रै कारणइज जीव री जूंण अर जूंण सम्बन्धी सरीर री अवस्था-व्यवस्था निश्चित हुवै। ओ करम चित्रकार रै मुजब है। जियां चित्रकार भांत-भांत रा चित्र बणावै उणीज भांत ओ करम

देव, नारक, मनुष्य, पशु-पंछी रै सरीर, इन्द्रिय, अवयव वर्ण, गंध, रस, स्पर्श आदि री रचना करै। नाम करम रा दो भेद हुवै-सुभ अर असुभ। सुभ नाम करम सूं रूपाळो, सुडौळ, आकर्षक अर प्रभावशाली सरीर बणै अर असुभ नाम करम सूं बदसूरत, बेडोल सरीर री स्थिति हुवै।

७. गोत्र :

गोत्र करम जीव री उण स्थिति रो निर्धारण करै जिण रै कारण जीव इसा कुळ, जाति, परिवार आदि में जनम लेवै कै वो ऊंचो-नीचो समझ्यो जावै। ईं करम रो तुलना कुम्हार सूं करी जावै। जियां कुम्हार भांत-भतीला घड़ा बणावै, उणांमें सूं कुछेक घड़ा इसा हुवै कै लोग वांरी अक्षत, चंदण आदि सूं पूजा करै अर कुछेक घड़ा इसा हुवै कै दारु आदि राखण में काम आवै अर खराब समझ्या जावै।

८. अन्तराय :

अन्तराय करम रै उदय सूं आतमा री दान, लाभ, भोग उपभोग अर वीर्य (बळ) सम्बन्धी सक्तियां में रुकावट आवै। इण करम रै कारण इज लोगां में साहस, वीरता, आतम विश्वास आदि री कमी-बेसी हुवै। ओ करम खजांची रै मानिन्द है। जियां राजा रो हुकम हुवण पर भी खजांची रै विपरीत होणै सूं इच्छा माफक धन री प्राप्ति में रुकावट पड़ै, उणीज भांत आतमा रूप राजा री दान, लाभ आदि री अनन्त शक्ति होता हुयां भी ओ करम उण रै उपभोग में वाधा डालै।

पुरुसारथ अर करम :

मिनख आपणै करमां (भाग्य) रो खुद निरमाता है। वो आपणै कियोड़ै करमां नै भुगतण खातर वाध्य है, पण इतरो वाध्य

कोनी कै वो उणांमें कांई वदळाव नीं ला सकै। करम वांधण में मिनख नै जित्ती स्वतंत्रता है, उत्तीई स्वतंत्रता उणनै करम भोगण में भी है। पुरुसारथ रै वळ सूं मिनख करम रै फळ में परिवर्तन ला सकै। भगवान महावीर करम-परिवर्तन रा चार सिद्धान्त वताया—

१. उदीरणा—नियत अवधि सूं पैलां करम रो उदय में आवणो।

२. उद्वर्तन—करम री अवधि अर फळ देण री शक्ति में वढ़ोतरी हुवणी।

३. अपवर्तन—करम री अवधि अर फळ देण री सक्ति में कमी होवणी।

४. संक्रमण—एक करम प्रकृति रो वीजी करम प्रकृति में संक्रमण हुवणो।

इण सिद्धान्त रै माध्यम सूं प्रभु महावीर वतायो कै मिनख आपणै पुरुसारथ रै वळ सूं वंध्योड़ा करमां री अवधि कम-वेसी कर सकै। वो करमां री फळ-सक्ति नै मंद या तीव्र पण कर सकै। इण भांत नियत अवधि सूं पैली करम भोग्यो जा सकै। तीव्र फळ आळो करम मंद फळ आळै करम रै रूप में अर मंद फळ आळो करम तीव्र फळ आळै करम रै रूप में भोग्यो जा सकै। पुण्य करम रा परमाणु पाप रै रूप में अर पाप करम रा परमाणु पुण्य रै रूप में संक्रात हुय सकै।

करम रा अै सिद्धान्त मिनख नै निरासा, अकर्मण्यता, अर पराधीनता री मनोवृत्ति सूं वचावै। जै मिनख रो वर्तमान पुरसारथ सत् हुवै तो वो अतीत रा असुभ करम-संस्कारां नै नष्ट कर सकै या उणांनै सुभ में वदळ सकै। अर जै उणरो वर्तमान पुरसारथ असत् हुवै तो वो आपणै लाभ सूं भी वंचित रैय जावै। संक्षेप में कयो जा

सकै कै जो मिनख आपणै पुरषारथ रै प्रति सांची है, जागरूक है, तो वो आपणै करमां री अधीनता सूं बारै निकळ सकै। महावीर रो करम सिद्धान्त इण बात पर जोर देवै कै मिनख नै मिल्योड़ा दुख-सुख किणी ईश्वर रै विरोध या किरपा रा प्रतिफळ कोनी। वां रो कर्ता-भोक्ता मिनख खुदईज है अर वीं में ईज आ ताकत है कै वो आपणी साधना रै बळ सूं आपणो भाग्य (कर्म) बदळ सकै। ईश्वर-निर्भरता सूं छुड़ा'र मिनख नै आतम निर्भर बणावण में महावीर रै करम सिद्धान्त री महत्त्वपूर्ण भूमिका है।

[४] तप

राग-द्वेषादि पाप करमां सूं जै आतमा मलीन अर असुद्ध हुवै। उणरी सुद्धि खातर तप रो विधान है। तप एक इसी आग है जिमें तप'र आतमा विसुद्ध बण जावै। तप दो भांत रो हुवै—(१) बाह्य तप (२) आभ्यन्तर तप।

बाह्य तप :

जिण क्रिया रै करण सूं, इन्द्रियां रो निग्रह हुवै, वृत्तियां रो संयम हुवै, लोगां नै भी मालूम हुवै कै ओ तप कर र्‌यो है वो बाह्य तप कहीजै, जियां उपवास या दस वीस दिनांरी लाम्बी तपस्या या विगय (घी, दूध, दही आदि) त्याग तथा सरीर नै सरदी, गरमी आदि में राख'र तकलीफां सहन करण रो अभ्यास करणो आदि।

बाह्य तप रा छ भेद :

बाह्य तप रा छ भेद है—अनसन, ऊणोदरी, भिक्षाचरी, रसपरित्याग, कायकलेस अर प्रतिसंलीनता।

१. अनसन :

अनसन रो अरथ है—आहार रो त्याग करणो। ओ तप

सगळा तपां में पैलो है आहार रै प्रति सगळा प्राणियां री आसक्ति हुवै। भूख पर विजय पाणो सबसूं दोरो है। आहार त्याग रो मतलब हुवै प्राणां रो मोह छोड़णो, मौत रै डर नै जीतणो। आहार त्याग सूं मानसिक विकार दूर हुवै। ओ तप उपवास कहीजै। उपवास सबद दो सबदां सूं बण्यो है। उप+वास। उप रो अरथ हुवै समीप अर वास रो अरथ है—रैवणो। अर्थात् आत्मा रै नंड़ेरैवणो। आतमा रो सुभाव आनन्दमय अर ज्ञानमय है। इण आनन्द री अनुभूति वोईज कर सकै जो राग-द्वेष आदि विकारां सूं अळगो रै'र समभाव में रमण करै।

२. ऊणोदरी :

तप रो दूजो भेद ऊणोदरी है। इण रो मतलब है भूख सूं कम खावणो। इण तप सूं खाद्य-संयम री भावना नै बळ मिलै अर अनावश्यक धन संचय करण री प्रवृत्ति पर अंकुस लागै। ओ तप धार्मिक दृष्टि रै सागै-सागै आर्थिक अर सामाजिक दृष्टि सूं भी घणो उपयोगी है।

३. भिक्षाचरी :

तीजै तप भिक्षाचरी रो सम्बन्ध निरदोस आहार ग्रहण करण री विधि सूं है। इण तप रो सम्बन्ध विशेष कर मुनियां सूं है। मुनि निरदोस आहार ग्रहण करवा खातिर भिक्षावृत्ति करै। वीं कैई घरां सूं थोड़ो-थोड़ो भोजन लै'र आपणो गुजर-बसर करै। इण तप में साधक रै खातर विधान है कै वो अभिग्रह आदि नियमां सूं लूखो-सूखो जिसो भी निरदोस आहार मिल जावै, समभाव सूं ग्रहण करै। श्रावक नीतिपूर्वक जीवननिर्वाह रा साधन जुटावै।

४. रसपरित्याग :

चौथै रस परित्याग तप में सुवाद वृत्ति पर विजय पावण रो

ग्रादर्श है। जीभ रै सुवाद पर विजय पावणी घणी मुसकल है। इण कारण इण साधना नै भी तप मानियो है। इण तप रो साधक सवाद पर विजय पा'र अभक्ष्य चीजां रै ग्रहण सूं बचै।

५. कायक्लेस :

पांचमो कायकलेस तप है। कलेस रो ग्रर्थ है-कष्ट। ग्रातम कल्याण खातर शरीर नै कष्ट देवणो कायाकलेस तप है। इण तप में ग्रातमा रा करम मळ दूर करण खातर सरीर नै भूख, तिस, सर्दी, गरमी, ध्यान, ग्रासन ग्रादि धार्मिक क्रियावां सूं तपायो जावै। इण क्रिया सूं ग्रातमा में स्थिरता, शुद्धता ग्रर सहनशीलता जिसा गुणां रो विकास हुवै।

६. प्रतिसंलीनता :

छटो प्रतिसलोनता तप है। इन्द्रियां नै ग्रसद्वृत्तियां सूं हटा'र सद्वृत्तियां में प्रवृत्त कराणो प्रतिसंलीनता तप है। इण रा मुख्य रूप सूं चार भेद है।

इन्द्रिय प्रतिसंलीनता तप में पांचूं इन्द्रियां (ग्रांख, नाक, कान, जीभ, सरीर) नै विषय विकारां सूं दूर राखण री कोसिस हुवै। कषाय प्रतिसंलोनता में कषाय (क्रोध, मान, माया, लोभ) री प्रवृत्ति रो निग्रह कियो जावै। योग प्रति संलीनता में मन, वचन ग्रर काया नै ग्रसुभ भावां सूं सुभ भावां कांनी मोड्यो जावै। मन नै एकाग्र कियो जावै, मौन राख्यो जावै। विवक्त सय्यासन सेवना तप में इसी ठौड़ रैवण री मना हुवै जिसूं काम, क्रोध ग्रादि मनोविकारां नै उत्तेजना मिलै।

ग्राभ्यन्तर तप :

ग्राभ्यन्तर तप री साधना सूं सरीर नै कष्ट तो कम मिलै पर मन री एकाग्रता, सरळता, भावां री शुद्धता रो प्रभाव वेसी रैवै।

आभ्यन्तर तप रा छह भेद :

आभ्यन्तर रा छह भेद हुवै—प्रायश्चित, विनय, वैयावृत्य, स्वाध्याय, ध्यान अर व्युत्सर्ग।

१. प्रायश्चित :

प्रायश्चित रो अरथ है—प्रमाद या अणजाण में हुई भूलां रै प्रति मन मे ग्लानि या पश्चाताप करणो अर उणां नै फेर दुबारा नीं करण रो संकल्प लेवणो। इण भांत आतम निरीक्षण सूं जीवन शुद्ध अर सरळ बणै।

२. विनय :

विनय रो अरथ है नम्रता। आपणै सूं वड़ा रै प्रति नम्रता अर छोटा रै प्रति स्नेह अर वात्सल्य भाव राखणो विनय तप है। विनय सूं अहंकार टूटै अर सदाचार री भावना में वढोतरी हुवै।

३. वैयावृत्य :

वैयावृत्य रो अरथ है—सेवा। जो साधक निस्काम भाव सूं समाज सेवा अर राष्ट्र सेवा करै वो भी वड़ो तपस्वी मानीजै। जैन आगमां मुजब सेवा करण सूं तीर्थङ्कर गोत्र करम री प्राप्ति हुवै। सेवा परम धर्म है। इण सूं करमां री निरजरा हुवै।

४. स्वाध्याय :

स्वाध्याय रो अरथ है—विधिपूर्वक सत् शास्त्रां रो अध्ययन करणो। अध्ययन में तल्लीन हुवण सूं मन एकाग्र हुवै, शुद्ध विचार आवै अर ज्ञान वधै। इण सूं ज्ञानावरणी करम रो नास हुवै। वाचना, पृच्छना, परिवर्तना, अनुप्रेक्षा, धरमकथा आदि स्वाध्याय रा पांच प्रकार है।

५. ध्यान :

ध्यान रो अरथ है-मन री एकाग्रता। मन नै असुभ विचारां सूं सुभ कांनी मोडणो। सुभ कांनी बढ़तो मन किणी विषय में तन्मय हुय जावै तो वो ध्यान कहीजै। ध्यान सूं आतम वळ रो विकास हुवै। ध्यान चार भांत रो हुवै-आर्त, रौद्र, धर्म अर शुक्ल। पैला दो ध्यान असुभ मानीजै। औ त्यागण जोग है। आखर रा दो ध्यान सुभ है। लम्बी तपस्या उपवास सूं जितरा करम क्षय नीं हुवै, उतरा मुहूर्त भर रै सुभ ध्यान सूं हुय जावै।

६. व्युत्सर्ग :

व्युत्सर्ग रो अरथ है—विशिष्ट विधिपूर्वक त्याग करणो। धन, सम्पत्ति, सरीर आदि रै प्रति आसक्ति अर कषाय (काम, क्रोध, मान, माया, लोभ आदि) रो त्याग करणो व्युत्सर्ग तप है। इण तप में देह रै प्रति आसक्ति सूं मुक्त रैवण रो अभ्यास करियो जावै।

ऊपर वतायोड़ा तप री साधना सूं करमां री निर्जरा अर अनेक गुणां रो विकास हुवै जै स्वस्थ समाज अर प्रगतिशील मजबूत राष्ट्र रै विकास रा मूल आधार वणै।

[५] गृहस्थ-धर्म

भगवान महावीर साधुआं अर गृहस्थां रै खातर जिण धरम री व्यवस्था दीवी, को क्रमश: श्रमण धरम अर श्रावक धरम कहीजै। साधुआं खातर महाव्रतां रो अर श्रावकां खातर अणुव्रतां रो विधान है। महाव्रतां रै पाळण में मुनि सगळा पाप करमां सूं वचै पण गिरस्त री कुछ सीमावां, मर्यादावां हुवै जिण कारण वै सम्पूर्ण पाप करमां रो त्याग कोनी कर सकै। पापां रो आंशिक त्याग इज अणुव्रत या श्रावक धरम कहीजै। पाप, प्राणियां रै आन्तरिक या आत्मिक विकारां रो इज दूजो नाम है। विकार इज दुखां रो कारण है। इणां विकारां सूं दुख वढ़ै अर इणांरी कमी सूं दुख घटै।

पांच अणुव्रत :

मोटे रूप सूं पाप पांच भांत रा हुवै-हिंसा, झूठ, चोरी, कुसील अर परिग्रह। इण पापां रो अंशतः त्याग अणुव्रत कहीजै। अै भी उणीज क्रम सूं पांच भांत रा हुवै-(१) अहिंसा (२) सत्य (३) अचौर्य (४) ब्रह्मचर्य अर (५) परिग्रह-परिमाण।

१. अहिंसा :

इण व्रत रो धारक हिंसा रो देशतः त्याग करै। वो संसार रै सगळा प्राणियां नै आपणी आत्मा रै समान समझै। वो सोचै कै जियां दुख म्हनै नीं पसन्द है उणीज भांत दूजा प्राणियां नै भी दुख पसन्द कोनी। आ सोच वो दूजा प्राणियां रो अहित नीं करै। उणांनै कष्ट नीं देवै। अहिंसा में उणरी पूरी सरधा हुवै। हिंसा नै वो त्याज्य समझै। पण गिरस्ती में सम्पूर्ण हिंसा सूं बचणो संभव कोनी। इण कारण अहिंसाणुव्रत रो संकल्प ले'र वो निरपराध प्राणियां नै तकलीफ नीं देवै, उणां रो वध नीं करै, पसुवां आदि पर वत्तो भार नीं लादै, चाबूक, बेंत आदि सूं उणां पर वार नीं करै। वांनै भूखा-तिसा नीं राखै। किणी रै सागै क्रूरता पूर्ण अमानवीय वैवार नीं करै। इण व्रत रै पाळण सूं हिंसा-क्रूरता कम हुय'र अपणायत अर लोक-कल्याण री भावना में वढ़ोतरी हुवै।

२. सत्य

इण व्रत में असत्य रो देशतः त्याग करियो जावै। इण व्रत रै धारक में सत्य रै प्रति पूर्ण निष्ठा हुवै। वो झूठी साख नीं देवै। जाळी दस्तखत नीं करै। किणी री राखीयोड़ी धरोहर नै पाछी देवण सूं ना नीं करै। झूठा लेख, भाषण अर विज्ञापन आदि नां देवै। इण व्रत रै पाळण सूं अविसवास मिट'र विसवास, सत्यता, ईमानदारी, प्रामाणिकता जिसा गुणां री वढोतरी हुवै।

३. अचौर्य :

इण व्रत में चोरी रो देशतः त्याग करियौ जावै। इण व्रत रै धारक रो अचौर्य में पूरो विसवास हुवै। वो दूजां री वस्तु चोरी री नियत सूं नीं लैवै। चोर नै चोरी करण में कीं भात री मदद नीं देवै। नकली वस्तु नै असली बता'र अर असली नै नकली बता'र नीं बेचै। वस्तु में किणीं भात री मिलावट नीं करै। राज रै नियमां रै विरूद्ध काम नीं करै। जेब काटण अर सैंध लगाण जिसा चोर करमां सूं सदा वचियो रैवै। कम ज्यादा नाप तौल नीं करै। मिनख रै श्रम, सक्ति अर सम्पत्ति रो अपहरण नीं करै। न्याय अर नीति सूं धन कमा'र आजीविका चलावै। इण व्रत रै पाळण सूं सम्पत्ति रो अपहरण मिट'र न्याय-नीति रो प्रसार हुवै।

४. ब्रह्मचर्य :

इण व्रत रो धारक परस्त्रीगमन रो त्याग व स्वस्त्री गमन री मर्यादा राखै। अप्राकृतिक काम भोग नीं करै। नग्न नृत्य, अश्लील गायन, भद्दी मजाकां आदि सूं वचै। इण व्रत सूं व्यभिचार, दुराचार मिट'र सदाचार रो प्रसार व पोषण हुवै।

५. परिग्रह-परिमाण :

इण व्रत में परिग्रह रै परिमाण रो नियम कियो जावै। ईं व्रत रो धारक आ सोचै कै परिग्रह वृत्ति विषय कषायां नै वढ़ाण आळी है। गिरस्त होवण रै कारण वो पूर्ण रूप सूं तो परिग्रह रो त्याग नीं कर सकै पण धन-धान्य, खेती, पशु, दुकान, मकान, सोना, चांदी, आदि राखण री निश्चित मर्यादा अवश्य करै। इण व्रत रै पाळण सूं आर्थिक विषमतावां अर संघर्ष मिट'र समता व शान्ति रो प्रसार हुवै।

तीन गुणव्रत :

पांच अणुव्रतां नै गुणाकार रूप में वढ़ावणै खातर गुणाव्रतां री योजना हुवै। अै गुणव्रत तीन प्रकार रा है—

१. दिग्व्रत :

इण रो अरथ है चारूं दिसावां में आणै-जाणै रो परिमाण निश्चित करणो।

२. देसव्रत :

इण रो अरथ है-क्षेत्र विषयक हद वांधणी, अमुक नदी, पहाड़ आदि री सीमा सूं बारै वैपार नीं करणो।

३. अनर्थदण्ड विरमण व्रत

सरीर री चंचळता, अस्थिरता, वाणी रो अनर्गल उपयोग आदि अनर्थ दण्ड है। इण व्रत में इसा कामां सूं बच्यो जावै जिण रै करण सूं आपणो कांई भी प्रयोजन नीं सरै अर विना कारणई पाप करमां रो संचय हुवै।

चार शिक्षाव्रत :

पांच व्रतां नै मजवूत वणावण खातर शिक्षाव्रतां रो विधान करियो गयो है। अै शिक्षाव्रत चार प्रकार रा है—

१. सामायिक व्रत :

इणमें सगळा पापां रो त्याग कर समभाव नै प्राप्त करण रीं साधना की जावै। सामायिक करतां वगत श्रावक निष्पाप जीवन वितावै। इण सूं तन, मन, अर वाणी में स्थिरता आवै।

२. देसावकासिक व्रत :

दैनिक व्रत ग्रहण करणरी प्रवृत्ति देसावकासिक व्रत कहीजै।

श्रावक हिंसादि आस्रवां रो द्रव्य, क्षेत्र, काळ री मर्यादा सूं नितहमेस संकोच करै। इण रै अभ्यास सूं जीवन संयत अर नियमित वणै।

३. पौसधोपवास व्रत :

इण व्रत में साधक हिंसादि पाप करमां रो एक दिन रात खातर त्याग करै। पौषध व्रत में वो खुद पाप कर्‌यां सूं बचै अर दूजा सूं भी वो हिंसादि रा काम नीं करावै।

४. अतिथि संविभाग व्रत

घर आयोड़ो अतिथि देव री भांत हुवै। साधु-साध्वी अर साधर्मीजनां रो आवआदर करणो हरेक गृहस्थ रो फरज हुवै। समतावृत्ति वढावण में तथा समाज में सौहार्द भाव री थरपणा में ओ व्रत घणो उपयोगी है।

[६] अहिंसा

अहिंसा सबद रो अर्थ है—हिंसा नीं करणी, किणी जीव नै नीं मारणो। अहिंसा रो मरम भलीभांत समझण खातर हिंसा रो सरूप समझणो जरूरी है। जैन परिभाषा मुजब हिंसा सबद रो अरथ हुवै—प्रमाद युक्त मन, वाणी अर सरीर सूं दूजा रै अथवा आपणै प्राणां रो नास करणो। प्राण दस हुवै—पांच इन्द्रियां, मन, वाणी, सरीर, सांस अर आयु। इण दसूं प्राणां मांयसूं किणी एक नै भी प्रमाद रै वसीभूत हुय'र नुकसाण पोंहचाणों, हिंसा है

हिंसा रो मूल कारण प्रमाद :

प्रमाद पांच भांत रा हुवै—

(१) इन्द्रियां री विषयासक्ति

(२) कषाय–क्रोध, मान, माया, लोभ आदि मनोवेग

(३) आलस्य या असावधानी ।
(४) विकथा-वेकार री वातां ।
(५) मोह-राग-द्वेष आदि

अै प्रमाद हृदय नै विकृत अर संकुचित वणावै । इणा सूं प्रेरित हुय'र दूजा रै प्राणां नै आघात पोंहचाणो हिंसा है । प्रमाद भाव नै नष्ट करण खातर मैत्री अर अभेद भावना रो विकास करणो चाइजै । द्वेष अर सुवारथ नै मैत्री अर समानतारी भावना सूं जीतणो चाइजै । सब जीव जीवणो चावै, मरणो कोई नीं चावै । सब जीवां नै आपणै समान समझ'र किणी नै नुकसान नीं पोंहचाणो, जिसो वैवार आपांनै आपणै सागै पसन्द है विसोइ वैवार दूजां रै सागै करणो, अहिंसा है ।

हिंसा रो मूल कारण प्रमाद युंक्त आचरण होता हुयां भी पांच ओरुं बीजा कारण है जिणां रै वसीभूत होय'र मिनख हिंसा करै । वै इण भांत है—

(१) अर्थ दण्ड (२) अनर्थ दण्ड (३) हिंसा दण्ड (४) अकस्मात दण्ड (५) दृष्टि विपर्यास दण्ड । मनोरंजन खातर किणी प्रांणी नै मारणो, दुख पोंचावणो, अंग-भंग करणो अनर्थ दन्ड है । इण हिंसा सूं नीं तो सरीर री रक्षा हुवै अर नीं परिवार, कुटुम्ब अर मित्र रो कोई प्रयोजन सिद्ध हुवै । कोई जीव आपांनै मार सकै या किणी भांत रो नुकसान पोंचाय सकै इणरी आसंका मात्र सूंईज उणनै मार डालणो हिंसा दण्ड है । अचाणचक गलती सूं एक रै वदळै दूजा जीव री हिंसा कर देवणी अकस्मात दण्ड है । इणीज भांत भ्रम सूं मित्र नै शत्रु समझ'र या साहूकार नै चोर समझ'र उणनै दण्ड देवणो दृष्टि विपर्यास दण्ड है ।

इण कारणां रै अलावा हिंसा रा मुख्य निमित्त है-राग अर द्वेष । राग रा दो प्रकार है—माया अर लोभ अर द्वेष रा भी दो प्रकार है—क्रोध अर मान ।

क्रोध में आय पुत्र-पुत्री आदि पारिवारिक सदस्यांनै मारणो, पीटणो, सरदी-गरमी में उघाड़ै सरीर ऊभोकर देणो, आ हिंसा क्रोध निमित्तक हिंसा कहीजै । जाति, कुळ, बळ रूप, तप, ऐश्वर्य, प्रज्ञा आदि में खुद नै बड़ो मान'र घमण्ड करणो, दूजां नै नीचो समझणो, उणारो अपमान करणो मान निमित्तक हिंसा है। ऊपर सूं सभ्य अर शिष्ट बण'र छिप्योड़े रूप सूं पाप करणो, दूजां नै ठगणो, कपट करणो, उणां रै गुप्त भेदां सूं बेजो फायदो उठाणो मायानिमित्तक हिंसा है। ऊपर सूं भोग रै प्रति उदानीनता रो भाव धार'र कामभोगां री पूरति खातर, विषय भोगां री चीजां रो संग्रह करणो, उणरै संरक्षण री चिन्ता करणी लोभनिमित्तक हिंसा है।

जैन धरम में आतमघात करणो बहुत बड़ी हिंसा है। घणाकरा लोग कैवै के आपणी आत्मा रो घात करण में हिंसा कोनी, पण आ बात गलत है। आतमघात करणियो मिनख भय, क्रोध, अपमान, लोभ, राग आदि भावां सूं प्रेरित हुय'र आतमघात करै। अै कारण हिंसा रा ईज है। आतमघाती मिनख में आतम विसवास अर कस्ट सहिष्णुता नीं हुवै। कायरता, भय, दीनता, आतमविसवास रो कमी आदि अवगुण, सद्गुणां रो नास करै। इण वास्तै आतमघात महापाप अर हिंसा मानीजै। पण साधक जद काळ नै नैड़ो जाण समभाव पूर्वक अनशन व्रत अंगीकर कर'र आतमसरूप में रमण करतां हुयो मरण प्राप्त करे तो वो आतमघात नीं कहीजै। औ समाधि मरण कहीजै। साधना री दृष्टि सूं ईं रो घणो महत्त्व है।

मिनख आजीविका, आमोद-प्रमोद अर सवाद रै वसीभूत हुय'र दारू, मांस, चमड़ा, दांत आदि सूं बणी चीजां रो उपयोग करै। जैन दृष्टि सूं आ भी हिंसा मानीजै ।

रूढ़िवादी लोग लौकिक मान-मनौतियां पूरी करण खातर देवी-देवता रै सामै अनेक जीवां री बळि देवै। देवी-भक्ति अर

तामसिक, राग–द्वेष सूं भरियोड़ी उत्तेजित वस्तुवां रो सेवन नीं कर'र स्वास्थ्यप्रद, सात्विक भोजन, पाणी, वस्त्र, पात्र आदि रो ग्रहण (उपयोग) करणो एषणा समिति है। रोजमर्रा काम आण आळी चीजां रै लेण-देण, रखरखाव आदि में सावधानी राखणी आदान निक्षेपण समिति है।

किणी जीव या प्राण नै नीं मारणो ओ अहिंसा रो निषेधात्मक रूप है। अहिंसा रो विधेयात्मक रूप है—लोक कल्याणकारी प्रवृत्तियां में रस लेणो, आतमहितकारी क्रियावां करणी, प्राणीमातर नै आतमवत समझणो, उणांमें किणी भांत री भेदबुद्धि नीं राखणी, सब रै सागै उदारता रो वैवार करणो अर नितहमेस मैत्रीभाव रो चिन्तन करणो।

समतामूलक समाज :

अहिंसा सिद्धान्त रो विधायक तत्त्व है समता, विषमता रो अभाव। दुनियां में कोई छोटो-बड़ो कोनी। सगळा समान है। समतावाद रै इण सिद्धान्त सूं महावीर जातिभेद, वर्णभेद, रंगभेद नीति रो खंडन करियो अर बतायो कै—मिनख जनम या जात सूं बड़ो कोनी। वीं नै बड़ो बणावै उणरा गुण, उणरा कर्म।

महावीर कह्यो–सिर मुंडाणै सूं कोई श्रमण नीं बण जावै, ओंकार रो नाम लेणै सूं कोई बामण, वन में निवास करण सूं कोई मुनि अर कुसचीर धारण करण सूं कोई तापस नीं बण जावै। पण समभाव राखण सूं श्रमण, ब्रह्मचर्य सूं ब्राह्मण, ज्ञान सूं मुनि अर तपाराधना सूं तापस बणै। धर्म, सम्प्रदाय, अर जाति रै नाम पर आज विश्व में घणो तनाव अर भेदभाव है। महावीर रै इण सिद्धांत नै आज सांचा अरथां सूं अपणा लियो जावै तो ओ विश्व सगळा खातर स्वर्ग बण जावै।

सुख रै बजाय दुख री अनुभूति हुवै। लाभ अर लोभ री प्राग में बळतो रैवरण रै कारण वींनै रात नै नींद परण नीं आवै। ओ परिग्रह सगळा दुखां रो मूल है। ईं परिग्रह रा मुख्य दो भेद है (१) अन्तरंग परिग्रह अर (२) बाह्य परिग्रह।

अन्तरग परिग्रह :

अन्तरंग परिग्रह रा चवदा भेद मानीजै—(१) मिथ्यात्व, (२) राग, (३) द्वेष, (४) क्रोध, (५) मान, (६) माया, (७) लोभ, (८) हास्य, (९) रति, (१०) अरति, (११) शोक, (१२) भय, (१३) जुगुप्सा, (१४) वेद न (स्त्री-पुरुष रै प्रति अभिलाषा रूप परिणाम)। ओ अनन्त परिग्रह आतमा री ऊंची उठण री सक्ति नै नष्ट कर'र उणरै पतन रो कारण बणै। इण सूं क्षमा, दया, करुणा जिसा आत्मिक गुण नष्ट हुय जावै।

बाह्य परिग्रह :

बाहय परिग्रह मोटे रूप सूं दस भांत रो हुवै—

(१) क्षेत्र-खेत, खुली भूमि गांव-नगर, पर्वत, नदी, नाळा आदि। (२) वस्तु :-मकान, महल, मंदिर दुकान आदि। (३) हिरण्य : सोना चांदी रा सिक्का, नोट आदि। (४) सुवर्ण—सोनो (५) धन—हीरा, पन्ना, मोती आदि जेवरात (६) धान्य—गेहूं, चावल आदि अन्न (७) द्विपद चतुष्पद-मिनख परिवार तथा गाय, बल आदि चौपाया जिनावर (८) दासदासी. नौकर चाकर आदि (९) कुप्य—वस्त्र, वर्तन, पलंग, अलमारी आदि घरेलू सामान (१०) धातु—चांदी, तांबा, पीतळ, लोहा आदि। इण वस्तुवां रो संग्रह करणो अर इणां सूं ममत्व राखणो बाह्य परिग्रह है। ईंसूं आतमिक सांति नीं मिलै। ज्यूं-ज्यूं बाहरी परिग्रह वधै

मन में चिन्ता अर परेसानियां भी वधवा लागै। ई कारण ईज सगळा वाह्य पदारथ परिग्रह मानीया जावै।

वाह्य पदारथां रै सागै-सागे संकीर्ण विचार अर दुराग्रह पण परिग्रह है। इण वैचारिक परिग्रह नै दूर करण खातर भगवान महावीर अनेकान्त रो सिद्धान्त वतायो। अनेकान्तवादी दृष्टिकोण सूं सोचण पर विचारां पें किणी रो आग्रह नीं रैवै।

विज्ञान री उन्नति सूं आज वस्तुवां रो उत्पादन कई गुणां वढ़्यो है। पण फेरूं उणारो अभाव इज अभाव चारूंकांनी लखावै। आज पण घणाखरा इसा लोग है जिणांनै पेट भरण खातर पूरो अन्न अर सरीर ढांकण खातर पूरो कपड़ो नीं मिलै। इणरो मूळ कारण व्यक्ति समाज अर राष्ट्र री संग्रहवृत्ति है। आज रो मिनख घणो लोभी है। वो वस्तुवां रो संग्रह कर वाजार में उणां रो अभाव देखणो चावै। ज्यूं ई चीजां री कमी हुवै वो जमां कर्‌योड़ी वस्तुवां नै ऊंचै मोल वेच'र वेगोसो'क लखपति अर करोड़पति वणणो चावै। आज गोदामां में लाखां टण अनाज पड़ियो-पड़्यो सड़ जावै पण लोभी मिनख अर राष्ट्र जरूरतमंद लोगां में उणनै नीं वांटै। भगवान महावीर रा परिग्रह परिमाण सिद्धान्त नै ध्यान में राख'र जै आवश्यकता सूं वेसी चीजां रो संग्रह नीं कियो जावै तो आज पूंजीवाद अर साम्यवाद नाम सूं जो विरोध अर संघर्ष चाल, वो आपेइ खतम हुय जावै अर समाजवादी समाज रचना रो सुपनो साकार हुवण में जेज नीं लागे।

[८] अनेकान्त

असांति रो मुख्य कारण हठवादिता, दुराग्रह अर एकान्तिकता है। विज्ञान रै विकास रै सागै मिनख घणो तार्किक वणग्यो। वो प्रत्येक वात नै तर्क री कसौटी पर कस'र देखणो चावै।

दूसरां रै दृष्टिकोण नै समझवा री कोसिस नीं करै। इण अहंभाव अर एकान्त दृष्टिकोण सूं आज व्यक्ति, परिवार, समाज अर राष्ट्र सैं पीड़ित है। इणीज कारण उणा में संघर्ष है, बेचैनी है।

भगवान महावीर इण स्थिति सूं मिनख नै उबारण खातर अनेकान्त रो सिद्धान्त प्रतिपादित करियो। उणारो कैवणो है—प्रत्येक वस्तु रा अनन्त पक्ष हुवै। उणां पक्षां नैं वां 'धरम' री संज्ञा दीवी। इण दृष्टिकोण सूं संसार री प्रत्येक वस्तु अनन्त धर्मात्मक है। किण भी पदार्थ नै अनेक दृष्टियां सूं देखणो, किणी भी वस्तु तत्त्व रो भिन्न-भिन्न अपेक्षा सूं पर्यालोचन करणो, अनेकान्त है।

वस्तु अनन्त धर्मात्मक हुवै। कोई वीनै एक धरम में बांधणो चावै, अर उण एक धरम सूं होण आळा ज्ञान नै इज समग्र वस्तु रो सांचो अर पूर्ण ज्ञान समझ बैठे तो वो ज्ञान यथार्थ नीं हुवै। सापेक्ष स्थिति सूं ईज वो सांच हो सकै। निरपेक्ष स्थिति में नीं। हाथी नै थांभा जिसो बतावण आळो व्यक्ति आपणी दृष्टि सूं सांचो है, पण हाथी नै रस्सी दांई बतावण आळा री दृष्टि में वो सांचो कोनी। हाथी रो समग्र ज्ञान करण वास्ते समूचै हाथी रो ज्ञान कराण आळी दृष्टियां री अपेक्षावां रैवै। इणीज अपेक्षा दृष्टि सूं अनेकान्त वाद रो नाम अपेक्षावाद अर स्याद्वाद पण है। स्यात् रो अर्थ है—किणी अपेक्षा सूं, किणीदृष्टि सूं, अर वाद रो अरथ है-कथन करणो। अपेक्षा विशेष सूं वस्तु तत्व रो विवेचन करणो ईज स्याद्वाद है।

सप्तभंगी-।

विवेचन करण री आ शैली सप्तभगी कहीजै। ईं वचन-शैली रा सात विकल्प इण भांत है—

(१) स्याद्अस्ति—किणी अपेक्षा सूं है।

(२) स्याद्नास्ति—किणी अपेक्षा सूं नीं है।

(३) स्याद्अस्ति-नास्ति—किणी अपेक्षा सूं है, किणी अपेक्षा सूं नीं है।

(४) स्याद् अवक्तव्य– है भी, नीं भी, पण एक सागै कह्यो नीं जा सकै।

(५) स्याद् अस्ति-अवक्तव्य—कथंचित् है, पण एक सागै कयो नीं जा सकै।

(६) स्याद् नास्ति अवक्तव्य—कथंचित् नीं है पण कयो नीं जा सकै।

(७) स्याद अस्ति-नास्ति अवक्तव्य—किणी अपेक्षा सूं है, किणी अपेक्षा सूं नीं है, पण दोन्यूं बातां एक सागै प्रगट नीं की जा सकै।

इण सात विकल्पां मांय सूं पैला चार विकल्प अधिक व्यावहारिक है। आखरी तीन विकल्पां मांय पैलड़ा चार विकल्पां रो ईज विस्तार कियो गयो है। अै नीचै दियोड़ा उदाहरण सूं समझ्या जा सकै—

तीन आदमी एक ठौड़ ऊभा है। किणी आवणियै मिनख एक सूं पूछियो—कांई थां इण रा पिता हो ?

वीं उत्तर दियो—हां (स्याद्अस्ति) आपरै इण बेटे री अपेक्षा सूं म्हूं पिता हूं। पण इण पिताजी री अपेक्षा सूं म्हूं पिता नीं हूं (स्याद्नास्ति) म्हूं पिता हूं भी अर नीं भी (स्याद् अस्ति-नास्ति), पण एक सागै दोन्यूं बातां कही नीं जा सकै (स्याद् अवक्तव्य), इण वास्तै कांई कंवूं ?

स्याद्‌वाद री आ वचन शैली जीवन रो सहज धरम है, बेवार री सीधी सादी भाषा है। जै कोई इण नै आच्छी तरैंऊं समझ लेवै तो सगळा वैचारिक झगड़ा, टकराहट अर संघर्ष मिट जावै।

अनेकान्तवाद इण बात पर जोर देवै कै आ वस्तु एकान्त रूप सूं इसी 'ही' है, आ बात मत कैवो। 'ही' री जगां 'भी' रो प्रयोग करो। इण कथन सूं आपसी संघर्ष नी वढ़ैला, एक दूजा रै बीचै सोहार्दपूर्ण, मधुर वातावरण बणैला। मैत्री भाव रो विस्तार हुवैलो अर विचार उदार बणैला।

---

११ | महावीर री परम्परा

पट्ट-परम्परा :

भगवान महावीर रै निर्वाण रै सागैइ तीर्थङ्कर परम्परा समाप्त हुय जावै। महावीर रा पैला अर सब सूं बड़ा शिष्य इन्द्र-भूति भी केवळज्ञानी बणग्या। इण कारण वी संघ रा वारिस नीं बणिया। महावीर रै धरम सासन रो भार पांचवा गणधर सुधरमा नैं सूंपियौ गयौ। आर्य सुधरमा महावीर री शिक्षावां आपणां शिष्यां नै मौखिक विरासत रै रूप में सूंपी। वर्तमान में आगम रूप में जो महावीर वाणी प्रसिद्ध है वा सुधरमा इज आपणै शिष्य जम्बू स्वामी अर अन्य स्थविरां ने दीवी। जम्बू स्वामी रै पछै उणांरा पट्टधर प्रभव स्वामी हुया। जम्बू स्वामी रै सागैइज केवळज्ञान री परम्परा समाप्त हुयगी अर जम्बू स्वामी केवळज्ञानी नीं बण सक्या। श्वेताम्बर परम्परा मुजब जम्बू स्वामी रै बाद क्रमशः प्रभव, सय्यंभव, यसोभद्र, संभूति विजय अर भद्रबाहु आचार्य हुया। पण दिगम्बर परम्परा मानै कै जम्बू स्वामी रै पछै नन्दी, नन्दीमित्र, अपराजित, गोवरधन अर भद्रबाहु आचार्य हुया। दोन्यूं परम्परा सूं आ ठा पड़ै कै आर्य प्रभव रै समै जै मतभेद हुया वै भद्रबाहु रै समय में सांत हुयग्या अर सगळा एक मतै सूं भद्रबाहु नै आपणा आचार्य मजूर करियो।

महावीर रै निर्वाण रै १६० बरसां पछै भद्रबाहु रै नेतृत्व में विद्वान श्रमणां री एक सभा हुई जिण में महावीर रै उपदेसां रो ग्यारा अंगां रै रूप में संकळन कियो गयो। कुछेक श्रमणां इण

आगमां नै प्रामाणिक मानवा सूं इन्कार कर दियो। श्वेताम्बर मान्यता रै मुजब अठा सूं ईज वास्तविक रूप में दिगम्बर परम्परा री सरूआत हुई।

वल्लभी-संगीति :

याददास्त रै आधार पर टिक्योड़ो श्रुत साहित्य धीरे-धीरे लुप्त हुवण लागो। स्मृति दोष रै कारण भांत-भांत रा मतभेद पण खड़ा हुयग्या। ईं कारण महावीर रै निर्वाण रै लगभग एक हजार बरसां पाछै आचार्य देवर्द्धिगणि री अध्यक्षता में श्रमण संघ री एक संगीति वल्लभी (गुजरात) में हुई अर याददास्त रै आधार पर चल्या आयोड़ा आगम लिपिबद्ध करिया गया। इण लिपि करण सूं साहित्य में स्थिरता अर एकरूपता आई अर आपस रा मतभेद भी कम हुया। आगै जा'र आचार्य हरिभद्र, सिद्धसेन, समन्तभद्र, अकलंक, हेमचन्द्र जिसा महान विद्वानां जैन साहित्य री घणी सेवा करी अर दर्शन, न्याय, काव्य, कोस, व्याकरण, इतिहास आदि सगळी दृष्टि सूं जैन साहित्य नै समृद्ध बणायो।

परम्परा-भेद :

ओ तथ्य जाणवा लायक है कै महावीर रै निर्वाण रै लगभग ६०० बरसां पाछै जैन धरम दो मतां में वंटग्यो—दिगम्बर अर श्वेताम्बर। जो मत साधुआं री नग्नता रो पक्षधर हो अर उणनै इज महावीर रो मूळ आचार मानतो हो वो दिगम्बर कहलायो। ओ मत मूळ संघ रै नाम सूं भी जाणीजै, अर जो मत साधुआं रै वस्त्र, पात्र रो समर्थक हो वो श्वेताम्बर कहलायो।

दिगम्बर-परम्परा :

आगे जा'र दिगम्बर मत कई संघा में वंटग्यो। इणां में मुख्य है—द्राविड़ संघ, काष्ठा संघ अर माथुर संघ। कालांतर में सुद्ध

आचारी, तपस्वी, दिगम्बर मुनियां री संख्या कम हुयगी अर एक नूंवै भट्टारक वरग रो उदय हुयो। जींरी साहित्य रै क्षेत्र में महत्वपूर्ण देन है। जद भट्टारकां में आचार री शिथिलता आई तो उण रै खिलाफ एक क्रांति हुई, जिणरा अगुआ हा–बनारसी दास। ओ पंथ तेरापंथ कहलायो। इण में टोडरमल जिसा विद्वान दार्शनिक हुया। वर्तमान में दिगम्बर परम्पर रा श्री देशभूषणजी, विद्यानंदजी आदि प्रमुख आचार्य अर मुनि है।

श्वेताम्बर-परम्परा :

श्वेताम्बर मत पण आगे जा'र दो भागां में बंटगयो–चैत्यवासी अर बनवासी। चैत्यवासी उग्र विहार छोड़'र मिन्दरां में रैवण लागा। कालान्तर में श्वेताम्बर परम्परा में कंई गच्छ बणग्या, जिणरी संख्या ८४ मानीजै। इण में खरतरगच्छ अर तपागच्छ मुख्य है। कयो जावै कै वर्धमानसूरि रा सिष्य जिनेश्वर सूरि सम्वत् १०७६ में गुजरात रै अणहिलपुर पट्टण रै राजा दुरलभराज री सभा में जद चैत्यवासियां नै पराजित किया तद राजा उणां नै 'खरतर' नाम रो विरुद दियो। इण भांत खरतरगच्छ नाम चाल पड़ियो। तपागच्छ रा संस्थापक श्री जगत्चन्द सूरि मानिया जावै। संवत् १२८५ में इणां उग्र तप करियो। इण रै उपलक्ष में मेवाड़ रा महाराणा जैतसिंह इणानै 'तपा' उपाधि सूं विभूषित कियो। तदसूं ओ गच्छ तपागच्छ नाम सूं प्रसिद्ध हुयो। खरतरगच्छ अर तपागच्छ दोन्यूं इ मूरति पूजा में विसवास राखै।

इण परम्परा में तरुण प्रभ सूरि, सोमसुन्दर सूरि, माणिक्य सुन्दर सूरि, मेरूसुन्दर, हीर विजय सूरि, राजेन्द्र सूरि, विजयवल्लभ सूरि जिसा कंई प्रभावी आचार्य अर मुनि हुया। वतमान में सर्वश्री धर्मसागरजी, विजय समुद्र सूरिजी, यशोविजयजो जनकविजय जी, कान्तिसागर जी, कल्याण विजय जो, भद्रंकर विजयजी, भानुविजय जी, विशाल विजय जी आदि प्रमुख आचार्य अर मुनि है।

लौकापंथ :

पन्दरवीं-सोलवीं सती में धरम रै नाम पर फैल्योड़ै बाहरी आडम्बर रो संत लोगां विरोध कियो। जिसूं भगवान री निराकार उपासना नै बळ मिल्यो। श्वेताम्बर परम्परा रा स्थानकवासी, तेरापंथी अर दिगम्बर परम्परा रा तारणपंथी मूरति पूजा में विश्वास नी राखै। लोकासाह (सम्वत् १५०८) नूं वै लौकापंथ रो थरपणा करी। वां मूरति पूजा अर प्रतिष्ठा रो विरोध करियो अर पौषध, प्रतिक्रमण, संयम आदि पर विशेष बळ दियो। ओ पंथ आगै जा'र कैई गच्छां में बंट्यो। इणरी तीन मुख्य शाखावां है –गुजराती लौकागच्छ, नागौरी लौकागच्छ, लाहोरी-उत्तरार्द्ध लौकागच्छ।

स्थानकवासी परम्परा :

आगे जा'र इण परम्परा में जद आडम्बर बढ़ियो तद सर्वश्री जीवराज जी, लवजी, धरमसिंह जी, धरमदास जी, हरजी, धन्नाजी आदि आचार्यां क्रियोद्धार करियो अर तप-त्याग मूलक सद्धर्म रो प्रचार करियो। अै स्थानकवासी परम्परा रा अगुवा मानीजै। आ सम्प्रदाय बाइस ठोळा रै नांम सूं भी प्रसिद्ध है। ईं में सर्वश्री भूधर जी, रघुनाथजी, जयमल्ल जी, कुशळोजी, रतनचंद जी, अमरसिंह जी, हुकमीचंद जी, अमोळक ऋषि जी, जवाहरलालजी, नानकराम जी, आत्माराम जी, पन्नालाल जी, घासीलाल जी, समरथमल जी, चौथमल जी जिसा घणाखरा प्रभावशाली आचार्य अर संत हुया। वर्तमान में इण सम्प्रदाय में सर्वश्री आनन्द ऋषि जी, हस्तीमलजी, नानालाल जी, अमर मुनि, सुशील मुनि, पुष्कर मुनि, मरुधर केसरी मिश्रीमल जी, मधुकर मुनि, किस्तूर चंद जी, सूर्य मुनि, प्रतापमल जी, अम्बालाल जी जिसा कैई प्रभावशाली आचार्य अर मुनि है।

तेरापंथ :

स्थानकवासी परम्परा सूं इज संवत् १८१७ में तेरापंथ सम्प्र-

दाय रो उद्भव हुयो । ईं सम्प्रदाय रा मूल संस्थापक आचार्य भीखण जी है । वर्तमान समय में ईंण सम्प्रदाय रा नवमा पट्टधर आचार्य तुलसी है । आप अणुव्रत आंदोळण रो प्रवर्त्तन कर नैतिक जागरण री दिसा में विशेष पहळ करी । भीखण जी अर आपरै वीचै सात आचार्य हुया, जिणां रा नाम है—सर्वश्री भारमल जी, रायचंद जी, जीतमल जी (जयाचार्य), मघवा गणी, माणक गणी, डाल गणी अर कालू गणी । वर्तमान में इण सम्प्रदाय में सर्वश्री नथमल जी, बुद्धमल जी, नगराज जी जिसा कैई विद्वान मुनि है ।

सांस्कृतिक देन :

देस में संस्कार–शुद्धि रै आन्दोलन में जैन धरम री इण महान् परम्परा रो महत्त्वपूर्ण योगदान रह्यो है । इण परम्परा में जै घण खरा गणगच्छ है, वां में जो भेद लखावै वो व्यावहारिक दृष्टि सूं इज है । आतमा, परमातमा, मोक्ष, संसार आदि रै सम्बन्ध में इणां में कोई भेद कोनी । जैन धरम रै आचार्यां, साधु–संतां अर श्रावकां रो सम्पर्क साधारण जनता सूं ले'र वड़ा–वड़ा राजा-महाराजा ताईं रह्यो । प्रभावशाली जैन श्रावक अठै राजमंत्री, फोजदार सलाहकार, खजांची अर किल्लेदार जिसा विशिष्ट ऊंचा पदां पर रह्या । गुजरात में कुमारपाळ रै समै वस्तुपाळ तेजपाळ जैन धर्म री घणी प्रभावती करी । मेवाड़ में रामदेव, सहणा, कर्मासाह, भामा साह, क्रमशः महाराणा लाखा, महाराणा कुंभा, महाराणा सांगा अर महाराणा प्रताप रा राजमंत्री हा । कुंभलगढ़ रा किलेदार आसासाह वाळक राजकुंवर उदयसिंह रो गुप्त रूप सूं पाळन-पोषण कर अदम्य साहस अर स्वामिभक्ति रो परिचय दियो । वीकानेर रा मन्त्रियां में वत्सराज, करमचन्द वच्छावत, वरसिंह, संग्रामसिंह आदि री सेवावां घणी महत्वपूर्ण है । वीकानेर रा महाराजा रायसिंह जी, करणसिंह जी, सूरतसिंह जी जैनाचार्य जिनचन्द्र सूरि, धर्म वर्धन अर ज्ञानसार जी नै वड़ो सम्मान दियो । जोधपुर राज्य रा

मंत्रियां में मेहता रायचन्द, वर्धमान, आसकरण, मूणोत नैणसी, इन्द्रराज मेहता, अखैराज, लखमीचंद आदि रो विशेष महत्त्व है। जयपुर रा जैन दीवानां री लाम्बी परम्परा रयी है। इणां में मुख्य है- मोहनदास संवी, हुकुमचंद, विमलदास छावड़ा, रामचन्द्र छावड़ा, कृपाराम पाण्ड्या, मानकचद गोलेछा, नथमळ गोलेछा आदि। अजमेर रा धनराज सिंघवी बड़ा योद्धा हा। अै सगळा वीर मंत्री आपणें प्रभाव सूं जैन मंदिरां अर उपासरां रो निरमाण करायो। घणखरी जन कल्याणकारी प्रवृत्तियां रै विकास अर संचालक में भी इणां रो वड़ो हाथ रयो।

देस रै नव निर्माण री सामाजिक, धारमिक, शैक्षणिक, राजनीतिक, आर्थिक प्रवृत्तियां में जैन मतावलम्बी महत्त्वपूर्ण योगदान दियो। सम्पन्न जैन श्रावक आपणी आमदनी रो निश्चित भाग लोकोपकारी प्रवृत्तियां में खरच करै। जीवदया, पशुवळि निषेध, वृद्धाश्रम, विधवाश्रम, जिसी कैई प्रवृत्तियां चालै। जरूरतमंद लोगां नै मदद देवण सारू भी कैई ट्रस्ट काम करै। समाज में अछूत कहावा आळा लोगां रै जीवन स्तर नै ऊंचों उठा'र वामें फैल्योड़ी कुरीतियां मिटावण खातर वीरवाळ अर धरमपाळ जिसी प्रवृत्तियां चालै। लोक शिक्षण रै सागै नैतिक शिक्षण खातर घणखरी शिक्षण संस्थावां, स्वाध्याय मंडळ अर छात्रावास काम करै। सार्वजनिक स्वास्थ्य सुधारण गी दिसां में जैन लोगां घणखरा अस्पताल खोलिया। अठै रोगियां नै मुफत में या रियायती दर पर इलाज री सुविधा दी जावै।

पुराणै साहित्य री रक्षा करण में जैनियां रो महत्त्वपूर्ण योगदान रह्यो। जैन साधु नीं केवळ मौलिक साहित्य री रचना करी वरन् जीर्ण शीर्ण दुरलभ ग्रंथा रो प्रतिलेखन कर वांनै नष्ट हुवण सूं वचाया। वांरी प्रेरणा सूं ठौड़-ठौड़ ग्रंथ भंडार थरपीजग्या। अै ग्रंथ भंडार राष्ट्र री सांस्कृतिक निधि रा सांचा रक्षक है।

महावीर री परम्परा में आज हजारूं साधु मुनिराज अर साध्वियांजी है। अै चौमासे में एक ठौड़ रैवे अर शेषकाल गांव-गांव पदयात्रा करै। इणां री प्रेरणा अर उपदेसां सूं समै-समै नैतिक जागरण आध्यात्मिक साधना अर तप-त्याग रा विविध कार्यक्रम बणै। लोककल्याण री घणखरी प्रवृत्तियां पण चालै। इण भांत व्यक्तिगत जीवन निरमळ, उदार अर पवित्र बणै तथा सामाजिक जीवन मांय मैत्री, वातसल्य, बन्धुत्व जिसा भावां री बढोतरी हुवै।

कुळ मिला'र कयी जा सकै कै महावीर री परम्परा में जीवन रै सर्वांगीण विकास कांनी लगोलग ध्यान रैवे। आ परम्परा मानव जीवन री सफलता नै इज मुख्य नीं मानै, इण रो बळ रैवे मिनखपणा री सार्थकता अर आतमसुद्धि पर।

---

१२ | महावीर-वाणी

लोकभाषा रो प्रयोग :

भगवान् महावीर आपणा उपदेस लोकभाषा में दिया। वां रै प्रवचनां री भाषा अर्धमागधी (प्राकृत) ही जो उण वगत मगध अर अंग देसां में बोली जावती। महावीर रा उपदेस किणीं खास वर्ग, धर्म या जाति खातर नीं हा। वणां री धरमसभा में राजा-रंक, महाजन-हरिजन, बामण-सूद्र सैं जणा समान भाव सूं आवता।

महावीर सूत्र रूप में उपदेस देवता। वांरो संकळन गणधर गाथा या ग्रंथ रूप में कियो। आज भगवान् महावीर रा जै उपदेस वचन मिलै, वै गणधरां अर स्थविर मुनियां द्वारा संकलित मान्या जावै। महावीर रा उपदेस ग्रंथ 'आगम' कहीजै।

आगम साहित्य :

जैन धर्म री दिगम्बर परम्परा रो विसवास है कै भगवान् महावीर री वाणी आज मूल रूप में सुरक्षित कोनी। वणांरा बाद रा आचार्यां याददास्ती रै आधार पर जिण शिक्षावां रो संकळन कियो, वो इज आज मिलै। पण श्वेताम्बर परम्परा मानै कै भगवान् महावीर री शिक्षावां आज भी उणीज भाषा में आगम रूप में सुरक्षित है। श्वेताम्बर मूर्तिपूजक परम्परा आगमां री संख्या ४५ मानै। स्थानकवासी अर तेरापंथी परम्परा री मान्यता ३२ आगमां री है। ३२ आगमां रा नाम इण भांत है—

ग्यारह अंग

१. आचारांग

बारह उपांग

१२. औपपातिक

२. सूत्रकृतांग	१३. राजप्रश्नीय
३. स्थानांग	१४. जीवाभिगम
४. समवायांग	१५. प्रज्ञापना
५. भगवती (व्याख्या प्रज्ञप्ति)	१६. जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति
६. ज्ञाताधर्म कथा	१७. सूर्यप्रज्ञप्ति
७. उपासक दशा	१८. चन्द्र प्रज्ञप्ति
८. अन्तकृद्दशा	१९. निरयावलिका
९. अनुत्तरौपपातिक	२०. कल्पावतंसका
१०. प्रश्न व्याकरण	२१ पुष्पिका
११. विपाक श्रुत	२२. पुष्पचूलिका
	२३. वाह्नि दशा

चार मूलसूत्र	चार छेदसूत्र
२४. दशवैकालिक	२८. निशीथ
२५. उत्तराध्ययन	२९. वृहत्कल्प
२६. नंदीसूत्र	३०. व्यवहार
२७. अनुयोग द्वार	३१ दशाश्रुतस्कंध
	३२. आवश्यक

ऊपर दियोड़ा ३२ आगमां मांय १० प्रकीर्णक [चतु:शरण, आतुर प्रत्याख्यान, भक्तपरिज्ञा, संस्तार, तन्दुळवैचारिक, चन्द्रकवैध्यक, देवेन्द्रस्तव, गणिविद्या, महाप्रत्याख्यान अर वीरस्तव) कल्पसूत्र, चूलिका आदि री गणना करण सूं उणांरी संख्या ४५ हुय जावै।

महावीर-वाणी :

आगमां मांय जैन तत्त्वविद्या, जैन आचार, जैन संस्कृति आदि विविध विषयां री जाणकारी है। अठै महावीर-वाणी रा

इसा मूळ प्राकृत अंश राजस्थानी अनुवाद रै सागै दिया जाय रह्या है, जं जीवन अर समाज नै निर्मळ, पवित्र, संयमशील अर आतम-पाण बणावण में उपयोगी है।

१. धर्म

धम्मो मंगल मुक्किट्ठं, अहिंसा संजमो तवो।
देवावि तं नमंसन्ति, जस्स धम्मे सयामणो ।।

दशवैकालिक सूत्र १।१

धरम उत्कृष्ट मंगळ है। वो अहिंसा, संयम अर तप रूप है। जिण साधक रो मन हमेशा इण धरम साधना में रमण करै, वीं नै देवता पण नमस्कार करै।

एगा धम्मपडिमा, जं से आया पज्जवजाए।

स्थानांग सूत्र १।१।४०।

धरम इज एक इसो पवित्र अनुष्ठान है, जिणसूं आतमा रो सुद्धिकरण हुवै।

सययं मूढे धम्मं नाभिजाणइ।

आचारांग सूत्र ३।१

सदा विषय-वासना में मगन रैवा आळो मिनख (मूढ़) धरम रै तत्व नै नीं जाण सकै।

समियाए धम्मे आरिएहिं पवेइए

आचरांग सूत्र १।८।३

आर्य महापुरुसां समभाव नै धरम कह्यो है।

अत्थेगइयाणं जीवाणं सुत्ततं साहू,
अत्थेगइयाणं जीवाणं जागरियत्तं साहू ।।

भगवती सूत्र १।२।२।

अधार्मिक आतमावां रो सूतो रैवणो आच्छो अर धरमनिष्ठ आतमावां रो जागतो रैवणो आच्छो।

चत्तारि धम्मदारा—खंती, मुत्ती, अज्जवे, मद्दवे।

स्थानांग सूत्र ४।४

धरम रा चार दरवाजा है—क्षमा, सन्तोस, सरळता अर नम्रता।

दीवे व धम्मं—

सूत्रकृतांग ६।४

धरम दीवा री भांत अज्ञान रूपी अंधारा नै दूर करै।

सोही उज्जुअ भूयस्स, चिट्ठई।

उत्तराध्ययन सूत्र ३।१२

सरळ आतमा री इज सुद्धि हुवै अर सुद्ध आतमा में इज धरम टिकै।

धम्मस्स विणओ मूलं।

दश० ९।२।२।

धरम रो मूळ विनय है।

२. अहिंसा

सव्वे पाणा पियाउया, सुहसाया दुक्खपडिकूला अप्पियवहा।
पियजीविणो, जीविउकामा, सव्वेसिं जीवियं पियं॥

आचारांग सूत्र २।२।३।

सगळा जीवां नै आपणी आयुष्य वाल्हो लागै, सुख आच्छो अर दुख खराब लागै। मौत सगळा नै खराब अर जीवणो आच्छो लागै। हरेक प्राणी जीवा री इच्छा राखै। सगळा नै आपणो जीवन प्यारो लागै।

एवं खु नाणिणो सारं, जं न हिंसइ किंचण ।

सूत्रकृतांग १/११/१०/

किणी प्राणी री हिंसा नीं करण में इज ज्ञानी हुवण रो सार है ।

आय तुले पयासु ।

सूत्र १/११/३

सगळा प्राणियां रै प्रति आतम तुल्य भाव राखणो चाइजै ।

समया सव्व भूएसु, सत्तु मित्तेसु वा जगे ।

उत्ता० १६/२५

शत्रु अथवा मित्र सगळा पर समभाव री दृष्टि राखणी अहिंसा है ।

मेत्ति भूएसु कप्पए ।

उत्ता० ६/२/

सगळा जीवां रै सागै मित्रता रो भाव राखो ।

तुमंसिनाम सच्चेव, जं हंतव्वं ति मन्नसि ।

आचा. ५/५/

जिणनै तू मारणो चावै, वो तू इज है । अर्थात् थारी अर उणरी आतमा एक समान है ।

से हु पन्नाणमंते बुद्धे आरभोवरए ।

आचा. ४।४

जो हिंसात्मक प्रवृत्तियां सूं अळगो है, वोइज बुद्ध-ज्ञानी है ।

सव्वपाणा न हीलियव्वा, निंदियव्वा ।

प्रश्नव्याकरण २।१।

संसार रै किणी प्राणी री नीं अवहेलना (तिरस्कार) करणी चाइजै अर नीं निन्दा ।

३. सत्य

भासियव्वं हियं सच्चं ।

उत्त. १६।२६।

नित हमेस हितकारी अर सांचा वचन बोलणा चाइजै ।

सच्चं लोगम्मि सारभूयं, गम्भीरतरं महासमुद्दाओ ।

प्रश्नव्याकरण सूत्र २।२।

इण लोक में सत्य इज सार तत्त्व है । ओ महान समन्दर सूं भी वत्तो गभीर है ।

लुद्धो लोलो भणेज्ज अलियं ।

प्रश्न. २।२।

मिनख लोभ सूं प्रेरित हुयर झूठ वोलै ।

अप्पणो थवणा, परेसुनिन्दा ।

प्रश्न २।२।

आपणी बढ़ाई अर दूजां री बुराई झूठ बोलण रै समान है ।

सच्चं च हियं च मियं च गाहणं च ।

प्रश्न २।२।

साधक नै इसा वचन बोलणा चावै जै हित, मित अर ग्राह्य हुवै ।

अप्पणा सच्चमेसिज्जा ।

उत्त० ६।२.

आपणी आतमा सूं सांच री खोज करो ।

४. अस्तेय

दन्त सोहणमाइस्स अदत्तस्स विवज्जणं

उत्त० १९।२८।

अस्तेय व्रत में सरधा राखणियो मिनख बिगर किणी री आज्ञा सूं दांत कुरेदबा खातर तिणको भी नीं उठावै।

अणुन्नविय गेण्हियव्वं।

प्रश्न. २।३।

किणी भी चीज नै बिगर आज्ञा सूं ग्रहण नीं करणी चाइजै।

लोभाविले आययई अदत्तं।

उत्त० ३२।२९।

जो मिनख लोभ सूं अभिभूत हुवै वो चोरी करै।

परदव्वहरा नरा निरणुकंपा निरवेक्खा।

प्रश्न. १।३।

दूजा रो धन लेवा आळो मिनख निरदयी अर परभव री उपेक्षा करण आळो हुवै।

परातिगऽभेज्जलोभ मूलं।

प्रश्न १।३९।

पर धन री गृद्धि रो मूळ हेतु लोभ है अर आइज चोरी है।

५. ब्रह्मचर्य

जहा कुम्मे सअंगाइं, सए देहे समाहरे।
एवं पावाइं मेहावी अज्झप्पेण समाहरे।

सूत्र. १।८।१६।

जिण भांत काछबो आपणी अंगा नै माय नै सिकोड'र खतरा सूं मुक्त हुय जावै, उणीज भांत साधक अध्यात्मयोग सूं अन्तराभिमुख हुयर खुदनै विषयां सूं बचावै।

तवेसु वा उत्तम-बंभचेरं ।

सूत्र. १।६।२३।

तपां में उत्कृष्ट तप ब्रह्मचर्य है ।

अरोगा गुणा अहीणा भवंति एक्कंमि बंभचेरे ।

प्रश्न २।४।

ब्रह्मचर्य री साधना करणै सूं अनेक गुण आपूं आप प्राप्त हुय जावै ।

कुसीलवड्ढणं ठाणं, दूरओ परिवज्जए ।

दश. ६।५६।

ब्रह्मचारी नै वा जगां दूर सूं इज त्याग देणी चाइजै जठै रैवण सूं कुसील आचरण री वृद्धि हुवै ।

६. अपरिग्रह

मुच्छा परिग्गहो वुत्तो । दश० ६।२०

वस्तु रै प्रति रह्यो हुयो ममत्व-भाव परिग्रह है ।

नत्थि एरिसो पासो पडिबंधो अत्थि, सव्व जीवाणं सव्वलोए ।

प्रश्न० १।५

प्रमत्त पुरुस धन सूं नीं तो इण लोक में आपणी रक्षा कर सकै अर नीं परलोक में इज ।

इच्छा हु आगास समा अणंतिया उत्त० ९।४८

इच्छावां आकास रै समान अनन्त है ।

परिग्गहनिविट्ठाणं, वेरं तेसिं पवड्ढई । सूत्र० १।९।३।

जो मिनख परिग्रह-संग्रहवृत्ति में व्यस्त रैवै, वो इण संसार में वैर री बढ़ोतरी करै ।

अन्ने हरंति तं वित्तं, कम्मी कम्मेहिं किच्चती । सूत्र० १।९।४।

एकठो करियोड़ो धन यथा समय दूजो उड़ा लैवै पण संग्रही नै उणां करमां रो फळ भोगणो पड़ै ।

कामे कमाही, कमियं खु दुक्खं । दश० २।५।

इच्छावां रो नास (अन्त) करणो दुख रो नास करणो है ।

एतदेव एगेसिं मह०भयं भवई आचा० ५।२।

परिग्रह इज इण लोक में महाभय रो कारण हुवै ।

असंविभागी ण हु तस्स मोक्खो दश० ६।२।१३।

जो आपणी प्राप्य सामग्री वांटै नीं, उणरी मुगति नीं हुवै ।

७. तप

सउणी जह पंसुगुंडिया, विहुणिय धंसयइ सियं रयं ।
एवं दविओवहाणवं कम्मं खवई तवस्सि माहणे ॥
सूत्र० २।१।१५

जिण भांत सकुनी नाम रो पंछी आपणै पंखा नै फड़फड़ार उण पर लाग्योड़ी धूड़ नै झाड़ दैवै । उणीज भांत तपस्या सूं मुमुक्षु आपणै आतम-प्रदेसां पर लागी करम-रज नै दूर करै ।

भव कोडिय संचियं कम्मं, तवसा णिज्जरिज्जइ । उत्त० ३०।६।

करोड़ां भवां सूं संचित करियोड़ा करम तपस्या सूं जीर्ण शीर्ण हुय जावै ।

नो पूयणं तवसा आवहेज्जा । सूत्र० १।७।२७

तप सूं साधक नै पूजा-प्रतिष्ठा रो कामना नीं करणी चाइजै ।

छन्दं निरोहेण उवेइ मोक्खं । उत्त० ४।८।

इच्छा निरोध तप सूं मोक्ष री प्राप्ति हुवै ।

तवेण परिसुज्झई । उत्त० २८।३५

तप सूं आतमा री सुद्धि हुवै ।

८. समभाव

सव्वं जगं तू समयाणु पेही, पियमप्पियं कस्स वि नो करेज्जा।

सूत्र० १।१०।६।

जो साधक सगळा विश्व नै समभाव सूं देखै, वो नीं किणी रो प्रिय करै अर नीं किणी रो अप्रिय।

सामाइयमाहु तस्स जं जो अप्पाण भएण दंसए।

सूत्र० १।२।२।१७

समभाव वो इज साधक धार सकै जो अपणै आपनै हर भय सूं मुक्त रावै।

नो उच्चावयं मणं नियंछिज्जा। आचा० २।३।१।

संकट री घड़ियां में मन नै ऊंचो-नीचो अर्थात् डांवाडोल नीं हुवण देणो चाइजै।

समयं सया चरे। सूत्र० २।२।३।

साधक नै हमेसा समता रो आचरण करणो चाइजै।

समता सव्वत्थ सुव्व ए। सूत्र० २।३।१३।

सुव्रती नै हर जगां समता भाव राखणो चाइजै।

९. वीतराग भाव

न लिप्पइ भव मज्झे वि संतो,
जलेण वा पोक्खरिणी पलासं।

उत्त० ३२–४७

जो आतमा विषयांसूं निरपेक्ष है वा संसार में रैवतां हुया भी जळ में कमळणी री भांत अलिप्त रवै।

विमुत्ता हु ते जणा पारगमिणो।

आचा० १।२।२।

जै साधक इच्छावां पर विजय पाय लीवी, वै सचमुच मुक्त पुरुष है ।

से हु चक्खू मणुस्साणं जे कंखाए य अन्तए ।

सूत्र० १।१५।१४।

जिण साधक अभिलाषा-आसक्ति नै नष्ट कर दीवी वो मिनखां खातर मार्गदर्शक आंख रूप है ।

वीयरागभाव पडिवन्नै वियणं,

जीवे सम सुहदुक्खे भवइ ।

उत्त० २९/३६ ।

वीतराग भाव नै प्राप्त करण आळो जीव सुख-दुख में समान रैवे ।

अणिहे से पुट्ठे अहियासए ।

सूत्र० २/१/१३

आतमविद् साधक नै निस्पृह भाव सूं आवण आळा कष्ट सहन करणा चाइजै ।

१०. आतमा

जे एगं जाणइ, से सव्वं जाणइ ।

जे सव्वं जाणइ, से एगं जाणइ ।।

आचा० १।३।४।

जो एक नै जाणै वो सबनै जाणै अर जो सबनै जाणै वो एक नै जाणै ।

अप्पा नई वेयरणी, अप्पा में कूडसामली ।

अप्पा काम दूहा धेणु, अप्पा मे नंदणं वणं ।।

उत्त० २०।३६।

म्हारी दुष्प्रवृत्त आत्मा इज वैतरणी नदी अर कूटशालमली वृक्ष है। म्हारी सुप्रवृत्त आतमा इज काम-दूधा-धेनु (सैं इच्छा पूरण करण आळी गाय) अर नन्दन वन है ।

सरीर माहु नावत्ति, जीवो वुच्चइ नाविश्रो ।
संसारो अण्णवो वुत्तो, जं तरन्ति महेसिणो ।।

सरीर नाव, आतमा नाविक अर संसार समन्दर कह्यो जावै । मोक्ष री इच्छा राखणियाँ महर्षि इणनै तैर जावै ।

पुरिसा ! अत्ताणमेव अभिनिगिज्झ,
एवं दुक्खा पमोक्खसि ।।

आचा० ३।३।११६

हे पुरुष ! तूं अपणै आपरो निग्रह कर, खुद रै निग्रह सूं तूं सगला दुखाँ सूं मुक्त हुय जावैला ।

अप्पा चेव दमेयव्वो, अप्पा हु खलु दुद्दमो ।
अप्पा दन्तो सुही होइ, अस्सिं लोए परत्थय ।।

उत्त० १।१५।

आतमा रो इज दमन करणो चाइजै क्यूंकै आतमा दुरदम्य है । इणरो दमन करण आळो संयमी इण लोक अर परलोक में सुखी हुवै ।

वरं मे अप्पा दन्तो, संजमेण तवेण य ।
माऽहं परेहिं दम्मन्तो, बंधणेहिं वहेहि य ।।

उत्त० १।१६।

दूजा लोग वंधन अर वध सूं म्हारो दमन करै, इणरी अपेक्षा ओ आच्छो है कै म्हूं खुद संयम अर तप सूं आपणी आतमा रो दमन करूं ।

बंधप्प मोक्खो अज्झत्थेव। आचा० १।५।२।

बंधन अर मोक्ष आपरणै भीतर इज है।

अप्पाणमेव जुज्झाहि, किं ते जुज्झेण बज्झओ।
अप्पाणमेव अप्पाणं, जइत्ता सुहमे हए॥
उत्ता० ९।३५।

आपणी आतमा रै सागैइज तूं जुद्ध कर, बाहरी दुसमनां सूं जुद्ध करण में थनै कांई लाभ ? आतमा नै आतमा सूं इज जीत'र मिनख सांचो सुख पाय सकै।

अप्पाकत्ता विकत्ताय, दुहाण य सुहाण य।
अप्पा मित्तममित्तं च दुपट्ठिअ सुप्पट्ठिओ॥
उत्त० २०।३७।

आतमा इज सुख-दुख नै उत्पन्न करण आळी अर आतमा इज उणरो नास करण आळी है। सत् प्रवृत्ति में लाग्योड़ो आतमा आपणी मित्र अर दुष्प्रवृति में लाग्योड़ी आतमा आपणी शत्रु है।

जो सहस्सं सहस्साणं, संगामे दुज्जए जिणे।
एगं विणेज्ज अप्पाणं, एस से परमो जओ॥
उत्त० ९।३४।

जो मिनख दुर्जय-संग्राम में दस लाख योद्धावां पर विजय प्राप्त करै, उणरी अपेक्षा जे आपनै खुद नै जीत लेवै तो आ उणरी सबसूं बड़ी जीत है।

न तं अरी कंठ छेत्ता करेइ, जं से करे अप्पणिया दुरप्पा।
उत्ता० २०।४८

दुराचार में प्रवृत्त आतमा जितरो आपणो अनिष्ट करै, उतरो अनिष्ट तो एक गळो काटवा आळो दुसमन भी नीं करै।

पुरिसा ! अत्ताणमेव अभिगिज्झ, एवं दुक्खा प मुच्चसि।
आचा० ३।३।१०

हे आतमन् ! तूं खुदइज आपणो निग्रह कर। इसो करवा सूं तूं दुखां सूं मुक्त हुय जावैलो।

अत्तकडे दुक्खे, नो परकडे। भग० ७।१

आतमा रो दुख आपणो खुद रो कर्योड़ो है। ओ दूजां रो दियोड़ो कोनी।

दुज्जयं चेव अप्पाणं, सव्वमप्पो जिए जियं। उत्त० ६।३६

एक दुर्जय आतमा नै जीत लेवा पर सब कुछ जीत लियो जावै।

११. मोक्ष

नाणं च दंसणं चेव, चरित्तं च तवो तहा।
एस मग्गुत्ति पन्नतो, जिणेहि वर दंसिहि॥
उत्त० २८।२

ज्ञान, दर्शन, चारित्र अर तप इज मोक्ष रो मारग है। आ बात सर्वदर्शी ज्ञानीजण बतावी।

नादंसणिस्स नाणं
नाणेण विणा न हुन्ति चरणगुणा।
अगुणिस्स नत्थि मोक्खो,
नत्थि अमोक्खस्स निव्वाणं॥ उत्त० २८।३०

सरधा रै बिना ज्ञान नीं हुवै, ज्ञान रै विना आचरण नीं हुवै अर आचरण रै बिना मोक्ष नीं मिलै।

सयमेव कडेहि गाहइ, नो तस्स मुच्चेज्जऽपुट्ठयं
सूत्र० १।२।१।४।

आतमा आपणा खुद रा बांध्योड़ा करमां सूं बंधै। करियोड़ा करमां नै भोगियां विना मुगति नी मिलै।

आहंसु विज्जाचरणं पमोक्ख। सूत्र० १।१२।११

ज्ञान अर करम सूं इज मोक्ष प्राप्त हुवै।

कडाण कम्माण न मोक्ख अत्थि। उत्त० ४।३।

बांध्योड़ा करमां रो फळ भोग्यां बिना मुगति नीं मिलै।

बन्धप्प मोक्खो तुज्झज्झ त्थेव। आचा० ५।२।१५०।

बन्धण सूं मुक्त हुवणो थांरै इज हाथै है।

परीसहे जिणंतस्स, सुलहा सुगइ तारिसगस्स। दश० ४।२७।

जो साधक परिसहां पर विजय पावै, उणरै वास्तै मोक्ष सुळभ है।

१२. विनय

विणए ठविज्ज अप्पणं इच्छतो हियमप्पणो।

उत्त० १।६

आतमहित करण आळो साधक आपनै खुद नै विनय धरम में स्थिर राखै।

सिया हु से पावय नो डहिज्जा,
आसीविसो वा कुविओ न भक्खे।
सिया विसं हालहलं न मारे,
न यावि मुक्खो गुरु हीलणाए॥

दश० ६।७

संभव है कदाच आग नीं जळावै, संभव है किरोधी नाग नीं डसे अर ओ भी सम्भव है कै हलाहळ विष मिनख नै नीं मारै। पण गुरु री अवहेलना करणियै साधक खातर मोक्ष सम्भव कोनी।

रायणिएसु विणयं पउंजे। दश० ८।४०

वडेरा रै सागै विनयपूर्ण वैवार करणो चांइजै।

मूलाओ खंधप्पभवो दुमस्स,
खंधाउ पच्छा समुवेन्ति साहा।

सहप्पसाहा विरुहन्ति पत्ता,
तओ सि पुप्फं च फल रसो य ।। दश० ९।२।१

वृक्ष रै मूळ सूं स्कन्ध उत्पन्न हुवै, स्कन्ध सूं शाखावां अर शाखावां सूं प्रशाखावां निकळै । इणारै पछै फूळ, फळ अर रस पैदा हुवै ।

एवं धम्मस्स विणओ. मूलं परमो से मोक्खो ।
जेण किंत्ति, सुयं, सिग्घं, निस्सेसं चाभिगच्छई ।
दश० ९।२।२

इणीज भांत धरम रूपी वृक्ष रो मूळ विनय है अर उणरो आंखरी फळ मोक्ष । विनय सूं मिनख नै कीरति, प्रशंसा अर श्रुत-ज्ञान आदि इष्ट तत्वां री प्राप्ति हुवै ।

वेयावच्चेणं तित्थयरनाम गोयं कम्मं निबंधेइ ।
उत्त० २९।४३

वैयावृत्य-सेवा सूं जीव तीर्थंकर नाम गोत्र जिसा उत्कृष्ट पुण्य करमां रो उपार्जन करै ।

गिलाणस्स अगिलाए वेयावच्चकरणयाए अब्भुट्ठे यव्वं भवइ ।
स्था० ८

रोगीं री सेवा करण खातर नितहमेस जागरूक रैवणो चाइजै ।

तम्हा विणयमेसिज्जा, सीलं पडिलभेज्जओ
उत्त० १।७

विनय सूं साधक नै शील अर सदाचार री प्राप्ति हुवै । इण वास्तै उणरी खोज करणी चाइजै ।

विणयमूले धम्मे पन्नते । ज्ञाता० १।५

धरम रो मूल विनय (सद्आचार) है ।

अणुसासियो न कुप्पिज्जा । उत्त० १।९

गुरुजनां री सीख पर किरोध नीं करणो चाइजै ।

१३. संयम

चउव्विहे संजमे—
मणसंजमे, वइसंजमे, कायसंजमे उवगरण संजमे।
स्था० ४।२

संयम चार प्रकार रो हुवै-मन रो संयम, वचन रो संयम, काया रो संयम अर उपधि (सामग्री) रो संयम।

संजमेणं अणण्हयत्तं जणयइ उत्त० २६।२६

संयम सूं जीव आश्रव (पाप) रो निरोध करै।

असंजमे नियतिं च संजमे य पवत्तणं
उत्त० ३१।२

असंयम सूं निवृत्ति अर संयम में प्रवृत्ति करणी चाइजै।

तहेव हिंसं अलियं चोज्जं अबम्भ सेवणं।
इच्छा कामं च लोभं च, संजओ परिवज्जए।। उत्त० ३५।३

संयमी आतमा हिंसा, झूठ, चोरी, अब्रह्मचर्य-सेवन, भोग-विळास अर लोभ रो सदा खातर परित्याग करै।

१४. क्षमा

खामेमि सव्वे जीवा, सव्वे जीवा खमंतु मे।
मित्ती मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झं न केणइ।।
आवश्यक सूत्र ४।२२

म्हूं सब जीवां सूं क्षमा मांगू, सब जीव म्हनै क्षमा करै। म्हारी सब जीवां रै सागै मित्रता है। किणी रै सागै म्हारो वैर-विरोध कोनी।

पुढविसमो मुणी हवेज्जा। दस० १०।१३
मुनि नै धरती रै समान क्षमाशील हुवणो चाइजै।

खंतिएणं जीवे परिसहे जिणइ। उत्त० २९।४६
क्षमा सूं जीव परीसहां पर विजय प्राप्त करै।

खंति सेविज्ज पंडिए । उत्त० १।९

पंडित पुरुष नै क्षमा धरम री आराधना करणी चावै ।

पियमप्पियं सव्वतितिक्खएज्जा । उत्त० २१।१५

साधक प्रिय अप्रिय सब शान्ति सूं सहन करै ।

खमावणयाए णं पल्हायणभावं जणयर । उत्त० २९।१७

सूं आतमा में अपूरब हरख रो भाव प्रगट हुवै ।

१५. मृत्यु–कला

न संत मरणंते, सीलवंता बहुस्सया । उत्त० ५।२९

शीलवान अर बहुश्रुत भिक्षु मौत रै क्षणां मांय भी दुखी नीं हुवै ।

मरणं हेच्च वयंति पंडिया । सूत्र० १।२।३।१

पंडित पुरुष इज मौत री दुर्दम सीमा लांघ'र अविनाशी पद नै प्राप्त करै ।

कालं अणवकंख माणे विहरई । उपा० १।७३

आत्मार्थी साधक कष्टां सूं जूंझतो हुयो मौत सूं अनपेक्ष वण'र रैवै ।

माराभिसंकी मरणा पमुच्चइ । आचा० १।३।१

जो मिनख मौत सूं सदा सावचेत रैवै वोईज उणसूं मुगति पाय सकै ।

१६. कषाय–विजय

अहे वयन्ति कोहेणं, माणेणं अहमागई ।
माया गइ पडिग्घाओ, लोहाओ दुहाओ भयं ॥

उत्त० ९।५४

क्रोध सूं जीव नीचे पड़ै, मान सूं जीव नीच गति पावै, माया सूं जीव सद्‌गति रो नाश करै अर लोभ सूं जीव नै इण लोक अर परलोक में भय उत्पन्न हुवै ।

चउक्कसायावगए स पुज्जो ।　　　　दश० ९।३।१४

जो चार कषाय सूं रहित है, वो पूज्य है ।

न विरूज्झेज्ज केणइ ।　　　　सूत्र० १५।१३

किणी रै भी सागै वैर-विरोध मत राखो ।

कसाया अग्गिणो वुत्ता, सुय सील तवो जलं ।

उत्ता० २३।५३

कषाय (क्रोध, मान, माया, लोभ) आग कहीजै । उण नै बुझावण सारु श्रुत, शील अर तप जल रूप है ।

जो उवसमइ तस्य अत्थि आराहणा ।　　वृहत्कल्प १।३५

जो कषाय रो उपशम करै, वो इज वीतराग प्रभु रै पथ रो सांचो आराधक हुवै ।

अप्पाणं पि न कोवए ।　　　　उत्ता० १।४०

अपनै आप पर भी कदै क्रिरोध मत करो ।

कोहो पीइं पणासेइ ।　　　　दश० ८।३८

क्रिरोध प्रीति रो नाश करै ।

उवसमेण हणे कोहं ।　　　　दश० ८।३९

शान्ति सूं क्रिरोध नै जीतो ।

माणविजएणं मद्दवं जणयइ ।　　　　उत्ता० २९।६८

अहंकार नै जीतण सूं जीव नै नम्रता री प्राप्ति हुवै ।

माणो विणयनासणो ।　　　　दश० ८।३८

अहंकार विनय गुण रो नास करै ।

माणं मद्दवया जिणे　　　　दश० ८।३९

अहंकार नै नम्रता सूं जीतणो चाइजै ।

मायमज्जवभावेण　　　　दश० ८।३९

सरळता सं माया अर कपट नै जीतणो चाइजै ।

माया विजएण अज्जवं जणयइ　　　　उत्ता० २९।६९

माया नै जीत लेवण सूं सरळता प्राप्त हुवै ।

माया मित्तारिण नासेइ । दश० ८।३८
माया मित्रतारो नास करै ।
लोभो सव्वविरणासणो दश० ८।३८
लोभ सगळा सद्गुणां रो नास करै ।
लोभं संतोसओ जिणे । दश० ८।३९
लोभ नै संतौस सूं जीतणो चाइजै ।
जहा लाहो तहा लोहो, लाहा लोहो पवड्ढइ ।
दो मासकयं कज्जं कोडी ए वि न निट्ठियं ।।
उत्त० ८।१७

ज्यूं-ज्यूं लाभ हुवै त्यूं-त्यूं लोभ पण वधै । दो मासा सोना सूं पूरो होबा आळो काम करोड़ां सूं भी पूरो नीं हुयो ।

सुवण्ण-रूप्पस्स उपव्वया भवे,
सिया हु कैलास सभा असंखया ।
नरस्स लुद्धस्स न तेहि किंचि
इच्छा हु आगाससमा अणन्तिया ।। उत्त० ९।४८

कदाच सोना, चांदी रा कैलास जिसा वड़ा अनेक परवत हुय जावै तो भी लोभी मिनख नै तृप्ति नीं हुवै, कारण कै इच्छावां आकास रै समान अनन्त हुवै ।

करेइ लोहं, वेर वड्ढइ अप्पणो । आचा० २।५
जो आदमी लोभ करै, वो चारुमेर वैर री वढ़ोतरी करै ।

१७. राग-द्वेष

रागो य दोसो वि य कम्मवीय,
कम्मं च मोहप्प भवं वयंति ।
कम्मं च जाई मरणस्स मूलं,
दुक्खं च जाइमरणं वयंति ।।
उत्त० ३२।७

राग अर द्वेषअै दोन्यूं करमां रा बीज है। करमां रो उत्पादक मोह इज मानीजै। करम सिद्धान्त रा विशिष्ट ज्ञानी आ वात कैवै कै जनम-मरण रो मूळ करम है अर जनम-मरण इज एक मात्र दुख है।

राग-दोसे य दो पावे, पाव कम्म-पवत्तणे

उत्त० ३१।३।

राग अर द्वेष ये दोन्यूं पाप करमां री प्रवृत्ति करावा में सहायक हुवै।

छिंदाहि दोसं विणएज्ज रागं, एवं सुही होहिसि संपराए।

दश० २।५।

द्वेष नै नष्ट करो, अर राग नै दूर करो। इयां करण सूं इज संसार में सुख री प्राप्ति हुवै।

अकुव्वओ णवं णत्थि। सूत्र० १।१५।७।

जो आतमा आपणै भीतर में राग अर द्वेष रूप भाव करम नीं करै, उण रै नूंवा करम नीं वंधै।

१८. कर्म सिद्धान्त

सुचिण्णा कम्मा, सुचिण्णफला भवंति।
दुचिण्णा कम्मा, दुचिण्णफलाभवंति॥

ओप० ५६

आच्छा करमां रो फळ आच्छो अर बुरा करमां रो फळ बुरो हुवै।

सव्वे सयकम्मकप्पिया सूत्र १।२।३।१८

प्राणीमात्र आपणै करियोड़ा करमां सूं इज विविध योनियां में भ्रमण करै।

कम्ममूलं च जं छणं आचा० १।३।१

करम रो मूळ क्षण हिंसा है।

एगो सयं पच्चणुहोइ दुक्खं सूत्र० १।५।२।२२

आतमा इज आपरणै करियोड़ा दुखांरी भोगणहार है।
तुट्टंति पावकम्माणि, नवं कम्ममकुव्वओ ।

सूत्र० १।१५।।६।

जो नूंवा करम नीं बांधै. उणरा पैल्योड़ा बंध्या पाप करम नष्ट हुय जावै ।

कतारमेय अणुजाइ कम्मं उत्ता० १३।२३

करम सदा कर्त्ता (करणआळा) रै पाछै-पाछै चालै ।

सयमेव कडेहिं गाहइ, नो तस्स मुच्चेज्जऽपुट्ठयं ।

सूत्र० १।२।१।४

जीव आपणै खुद रै बणायोड़ै करमजाळ में आबद्ध हुवै । कियोड़ा करमां सूं उणांनै भोग्यां बिगर मुगति कोनी ।

१६. शिक्षा अर व्यवहार

विवत्ती अविणीयस्स, संपत्तिा विणियस्स य,

दश० ६।२।२१।

अविनीत नै विपत्ति प्राप्त हुवै अर सुविनीत नै सम्पत्ति ।

अह पंचहिं ठाणेहिं, जेहिं सिक्खा न लब्भई ।
थम्भा कोहा पमाएणं, रोगेणालस्सएण य ।।

उत्ता० ११।३।

अहंकार, क्रोध, प्रमाद, रोग अर आलस इण कारणां सूं शिक्षा प्राप्त नीं हुवै ।

कहं चरे ? कहं चिट्ठे ? कहं मासे ? सहं सए ?
कहं भुंजन्तो, भासन्तो, पाव कम्मं न बंधइ ?

दश० ४।७।

भंते ! किण भांत चालां, किण भांत ऊभा रेवां, किण भांत बैठां, किण भांत सूवां, किण भांत खावां, किण भांत बोलां, जिणसूं पाप करमां रो बंधण नीं हुवै ।

जयं चरे, जयं चिट्ठे, जयं मासे जयं सए;
जयं भुंजन्तो, भासन्तो, पाव-कम्मं न बंधइ ॥

दश० ४।८।

आयुष्मान ! जतना सूं चालो, जतना सूं उभा रैवो, जतना सूं वैठो, जतना सूं सूवो, जतना सूं खाओ, अर जतना सूं बोलो। इण भांत पाप करम नीं बंधै।

न य पावपरिक्खेवी, न य मित्तो सु कुप्पई।
अप्पियस्सावि मित्तास्स, रहे कल्लाण भासइ ॥

उत्ता० ११।१२।

सुशिक्षित मिनख स्खलना हुवण पर भी किणी पर दोषारोपण नीं करै अर नीं कदै मित्र पर किरोध करै। वो अप्रिय मित्र री परोक्ष में पण प्रशंसा करै।

चत्तारि अवायणिज्जा पण्णता, तंजहा
अविणीए विगइ पडिवद्धे, अविउसविय पाहुडे मायी।

स्था० ४।३।३३६।

अै चार मिनख शिक्षा देवण रै लायक नीं हुवै—अविनीत, सुवादवृत्ति में गृद्ध, किरोधी अर कपटी।

२०. मनुष्य-जनम

चत्तारि परमंगाणि, दुल्लहाणीह जंतुणो।
मणुसत्तं सुई सद्धा, संजमम्मि य वीरियं ॥

उत्ता० ३।१

इण संसार में प्राणियां खातर चार अंग घणा दुरलभ है—मिनखपणो, धरम-श्रवण, सरधा अर संयम में पुरुसारथ।

चतुर्हिठाणेहिं जीवा माणुसत्ताए कम्मं पगरेंति—
पगइ भद्दयाए, पगइ विणीययाए,
साणुक्कोसयाए, अमच्छरियाए।

स्था० ४।४

चार भांत रा मानवीय करम करणा सूं आतमा मिनख जनम प्राप्त करै-सहज सरळपणो सहज, विनम्रता, दयालुता अर अमत्स-रता ।

२१. अप्रमाद

अलं कुसलस्स पमाएणं आचारांग १।२।४।

प्रज्ञाशील साधक नै आपणी साधना में किंचित् भी प्रमाद नीं करणो चाइजै ।

भारण्डपक्खी व चरप्पमत्तो । उत्ता० ४।६

भारण्ड पक्षी री भांत साधक अप्रमत्त (जागरूक) भाव सूं विचरण करै ।

सव्वओ पमत्तास्स भयं,
सव्वओ अपमत्तास नत्थि भयं ।
आचा० १।३।४।

प्रमत्त आतमा नै चारूंकांनी सूं भय रैवे । पण अप्रमत्त आतमा नै किणी भी ओर सूं भय नी रैवै ।

धीरे मुहुत्तमवि णो पमायए आचा० १।२।१

धीर साधक मुहूर्त भर रै खातर भी प्रमाद नीं करै ।

असंखयं जीविय मा पमायए ।
उत्ता० ४।१

जीवन असंस्कृत (क्षणभंगुर) है । वींरो धागो टूट जावा पर दुबारा जोड़ियो नीं जा सकै । आ सोच'र जरा भी प्रमाद नीं करणो चाइजै ।

उट्ठिए नो पमायए आचा० १।५।२

जो साधक एक'र आपणे कर्तव्य मारग पर बढग्यो है, उणनै फेर प्रमाद नीं करणो चाइजै ।

